मध्यमा पाठ्य पुस्तक

दूसरा पत्र

भाग - 4

कहानी

1. भगवान सबका एक है ! 64
2. भगीरथ की तपस्या 68
3. कुत्ते की पूँछ 71
4. मौन ही मंत्र है ! 74
5. चतुर आदमी 77
6. सूखे संतरे 81

1. भगवान सबका एक है!

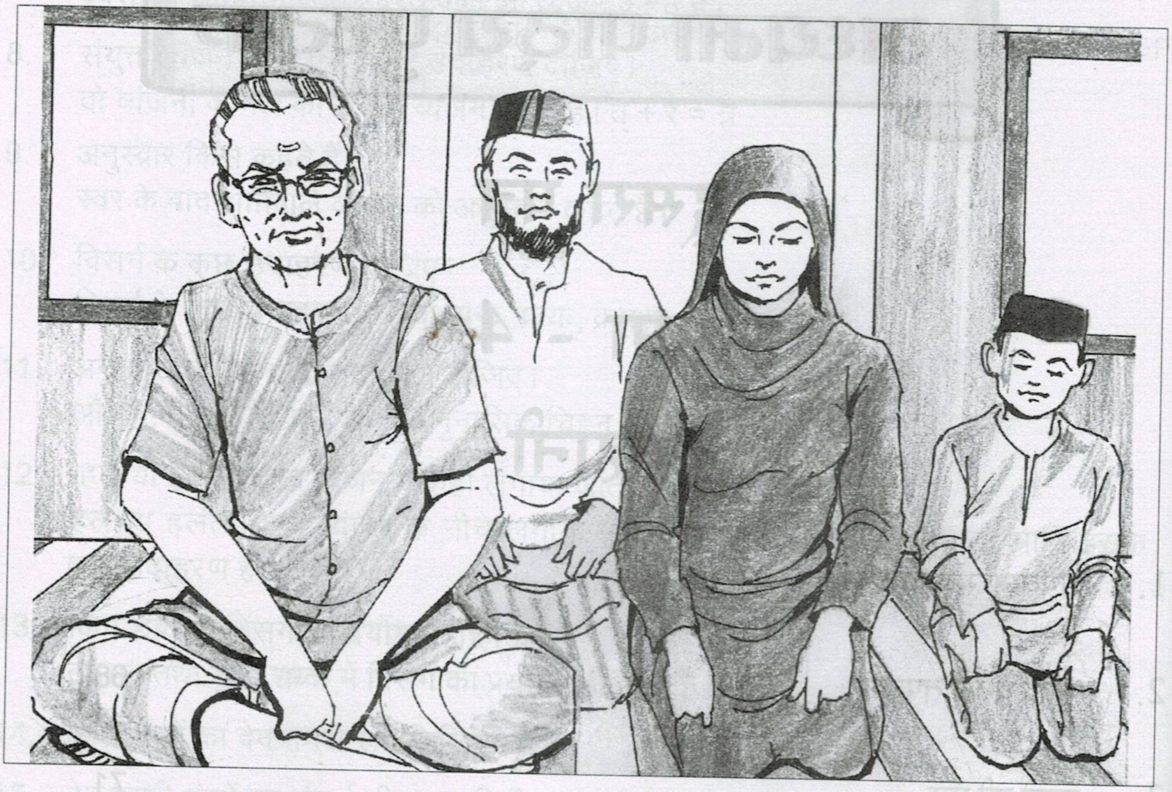

किसी गाँव में इब्राहीम नामक एक आदमी अपनी बीबी और बच्चों के साथ एक झोंपड़ी में रहता था। यद्यपि वह बहुत धनवान नहीं था तो भी वह हमेशा दूसरों का उपकार करता था। उसकी झोपड़ी एक सड़क के किनारे थी। कई यात्री उसी सड़क से होकर आते-जाते थे।

उस सड़क पर कोई सराय नहीं होने के कारण यात्रियों को इब्राहीम का दरवाज़ा खटखटाना पड़ता था। इब्राहीम उनका उचित सत्कार करता था। यात्री हाथ-मुँह धोकर जब इब्राहीम के परिवार के साथ बैठते तब खाने से पहले इब्राहीम एक छोटी-सी प्रार्थना करता था और ईश्वर को उसकी कृपा के लिए धन्यवाद देता था। बाद में यात्री भी उस प्रार्थना को दोहराते थे।

यात्रियों का इस प्रकार सत्कार करने का क्रम कई साल तक चलता रहा। पर सबके दिन हमेशा एक-से नहीं होते। समय के फ़ेर से इब्राहीम ग़रीब हो गया। तिसपर भी उसने यात्रियों को भोजन देना बंद नहीं किया। वह और उसके बीबी-बच्चे दिन में एक बार भोजन करते थे और दूसरी बार का भोजन बचाकर यात्रियों के लिए रख छोड़ते थे। यात्रियों की मदद करने में इब्राहीम को बड़ा संतोष होता था। पर कुछ समय बाद उसे कुछ गर्व हो गया। वह यह समझने लगा कि अल्लाह की दया से ही मैं यात्रियों की इतनी मदद कर पाता। सचमुच मेरा धर्म ही सबसे ऊँचा है।

एक रोज़ उसके दरवाज़े पर एक थका-मान्दा बूढ़ा आया। वह बहुत ही कमज़ोर था। उसकी कमर कमान की तरह झुकी हुई थी और कमजोरी के कारण उसके क़दम भी सीधे नहीं पड़ रहे थे। उसने इब्राहीम का दरवाज़ा खटखटाया। इब्राहीम उसे अन्दर ले गया और आग के पास बिठा दिया। कुछ देर विश्राम करके बूढा बोला- "बेटा, मैं बहुत दूर से आ रहा हूँ। मुझे बहुत भूख लग रही है। मुझे कुछ खाना दो।" इब्राहीम ने जल्दी से खाना तैयार करवाया और जब खाने का समय हुआ तो अपने नियम के अनुसार प्रार्थना की। उस प्रार्थना को उसके बीबी-बच्चों ने उसके पीछे दोहराया। इब्राहीम ने देखा, वह बूढ़ा चुपचाप बैठा है। इस पर उसने बूढ़े से पूछा– "क्या आप हमारे धर्म पर विश्वास नहीं करते? आपने हमारे साथ प्रार्थना क्यों नहीं की?"

बूढ़ा बोला–हम लोग अग्नि की पूजा करते हैं।

बूढ़े का जवाब सुनकर इब्राहीम को बड़ा गुस्सा आ गया। उसने कहा–"अगर आप हमारे खुदा पर विश्वास नहीं करते और हमारे साथ प्रार्थना नहीं करते, तो इसी समय हमारे घर से बाहर निकल जाइए।"

इब्राहीम ने उसे बिना भोजन दिये ही घर से बाहर निकाल दिया और दरवाज़ा लगा लिया। पर दरवाज़ा बंद करते ही कमरे में अचानक रोशनी छा गयी और एक देवदूत ने

प्रकट होकर कहा–"इब्राहीम, यह तुमने क्या किया? उस गरीब बूढ़े की उम्र सौ वर्ष की है। भगवान ने इतनी उम्र तक उसकी देखभाल की और एक तुम हो जो कि अपने को भगवान का भक्त समझते हो, तिसपर भी उसे एक जून खाना नहीं दे सके, केवल इसीलिए कि उसका धर्म तुम्हारे धर्म से भिन्न है। संसार में धर्म भले ही अनेक हों, पर भगवान या खुदा सब प्राणियों का परम पिता है और सबके लिए वही एक ईश्वर है।"

यह कहकर वह देवदूत आँखों से ओझल हो गया। इब्राहीम को अपनी भूल मालूम हुई। उसको बड़ा पछतावा हुआ। वह भागा-भागा उस बूढ़े की खोज में गया। थोड़ी दूर पर उसे वह बूढ़ा मिल गया। इब्राहीम उसके पैरों पर पड़ा और उससे क्षमा माँगी। बूढ़े ने उसे क्षमा करते हुए कहा–"बेटा, अब तो तुम समझ गये न कि भगवान सबका एक है!"

बूढ़े की यह बात सुनकर इब्राहीम को बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि यही बात उससे देवदूत ने भी कही थी।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए:

1. इब्राहीम यात्रियों का सत्कार कैसे करता था?

   इब्राहीम की झोंपड़ी सड़क के किनारे थी। सड़क पर जानेवाले यात्री लोग उसके घर खटखटाते थे। इब्राहीम उनका उचित सत्कार करता था। खाने से पहले इब्राहीम एक छोटी सी प्रार्थना करता था; यात्री लोग उसे दोहराते थे। इसके बाद सब लोग खाते थे।

2. इब्राहीम को क्यों गर्व हो गया?

   इब्राहीम गरीब हो जाने के बाद भी यात्रियों का सत्कार करता था। इससे उसको बहुत संतोष मिलता था। लेकिन कुछ समय बाद उसको कुछ गर्व हो गया। वह सोचने लगा कि मेरे धर्म के भगवान की दया से ही मैं सब कुछ करता हूँ। इसलिए मेरा धर्म ही सबसे ऊँचा है।

3. इब्राहीम ने गरीब बूढ़े को क्यों भोजन नहीं दिया?

गरीब बूढ़े यात्री ने इब्राहीम की प्रार्थना को नहीं दोहराया। कारण पूछने पर गरीब बूढ़े ने कहा कि वे अग्नि की पूजा करते हैं। इससे इब्राहीम को गुस्सा हो गया। इसलिए उसने बूढ़े को भोजन नहीं दिया।

4. देवदूत ने क्या कहा और इब्राहीम ने क्यों क्षमा माँगी?

देवदूत ने आकर इब्राहीम से कहा कि भगवान सबके लिए एक हैं। यह सुनकर इब्राहीम की आँखें खुली; इसलिए उन्होने बूढ़े के पास जाकर माफी माँगी।

II. “भगवान सबका एक है” कहानी का सारांश लिखिए।

एक गाँव में इब्राहीम नामक रहमदिल (Mercy hearted) आदमी रहता था। वह आनेजानेवाले यात्रियों को खाना देकर उनकी सेवा करता था। इब्राहीम भोजन के पहले प्रार्थना करता था। उसके साथ भोजन करनेवाले यात्री लोग भी उसे दोहराते थे। इब्राहीम के मन में धीरे-धीरे गर्व हो गया। वह समझने लगा कि उसका धर्म ही सब से अच्छा और बड़ा है।

एक दिन इब्राहीम के घर एक बूढ़ा आया। भोजन के पहले इब्राहीम ने हमेशा की तरह प्रार्थना की। बूढ़ा अग्नि की पूजा करनेवाला था। इसलिए उसने प्रार्थना नहीं दोहरायी। इससे नाराज़ होकर इब्राहीम ने बूढ़े को घर से निकाल दिया। तब इब्राहीम के सामने एक देवदूत प्रकट हुआ। उसने कहा– “इब्राहीम, तुमने बूढ़े को खाना न देकर बड़ी गलती की, क्योंकि भगवान सब का एक है।” देवदूत की बात सुनकर इब्राहीम की आँखें खुलीं। तुरन्त दौड़कर गये और बूढ़े आदमी से माफी माँगी। बूढ़े ने पूछा, क्या अब तुम समझ गये कि भगवान सबका एक है। यह सुनकर इब्राहीम को आश्चर्य हुआ; क्योंकि देवदूत ने भी यही बात कही थी।

* * * * *

2. भगीरथ की तपस्या

भगवान श्री रामचन्द्र इक्षवाकु कुल में पैदा हुए। वे सूर्यवंशी राजा थे। श्री राम से भी पहले इस वंश में भगीरथ नामक एक राजा हुए जिनका शासन सारे संसार में फैला हुआ था। वे सत्यशील, धर्मनिष्ठ और बड़े प्रतापी राजा थे। उनमें अपार धैर्य और साहस था।

राजा भगीरथ के पूर्वजों में सगर नामक एक राजा थे। उनके कई पुत्र थे। कपिल मुनि के शाप से वे सब राजकुमार जलकर भस्म हो गये थे।

एक बार धर्मराज की इच्छा हुई कि राजा भगीरथ से मिलना चाहिए। धर्मराज भगीरथ के यहाँ पधारे और उनका आतिथ्य स्वीकार किया। भगीरथ के आतिथ्य से प्रसन्न होकर धर्मराज बोले, "आपकी धर्मनिष्ठा और सुशासन से सारा संसार खुश है। केवल एक बात की कमी रह गयी है। आपके पूर्वज सगर-पुत्र भस्म के रूप में पड़े हैं। उनका उद्धार करना आपका कर्तव्य है। इसके लिए आप तपस्या करके गंगाजी को पृथ्वी पर लाएँ। इससे आपके पूर्वज भी शाप से मुक्त होकर मोक्ष पाएंगे और संसार का भी कल्याण होगा।"

धर्मराज यह उपदेश देकर चले गये। राजा भगीरथ ने उनकी बातों पर विचार किया और निश्चय किया कि अवश्य गंगा को पृथ्वी पर लाना चाहिए। उन्होंने अपने गुरु भृगु मुनि से सलाह ली। उनके अनुसार हिमालय पर्वत पर तपस्या करने के लिए चले गये।

हिमालय पर पहुँचकर भगीरथ ने अपनी कठिन तपस्या शुरू कर दी। वे श्री नारायण का ध्यान करने लगे। कई वर्षों तक भगीरथ ने तप किया। उनकी तपस्या इतनी तीव्र थी कि उसे देखकर इन्द्र आदि देवता भी कांप उठे। वे सब भगवान विष्णु से प्रार्थना करने लगे कि भगीरथ की तपस्या पर ध्यान दिया जाए। देवताओं की प्रार्थना सुनकर भगवान विष्णु भगीरथ के सामने प्रकट हुए और बोले–"भगीरथ! तुम निश्चिन्त हो जाओ। तुम्हारी तपस्या अवश्य सफल होगी और तुम्हारे पितरों को मेरे लोक में स्थान मिलेगा। तुम अब भगवान शिव का ध्यान करते हुए तपस्या करो। वे तुम्हारी इच्छा पूरी करेंगे।" भगवान

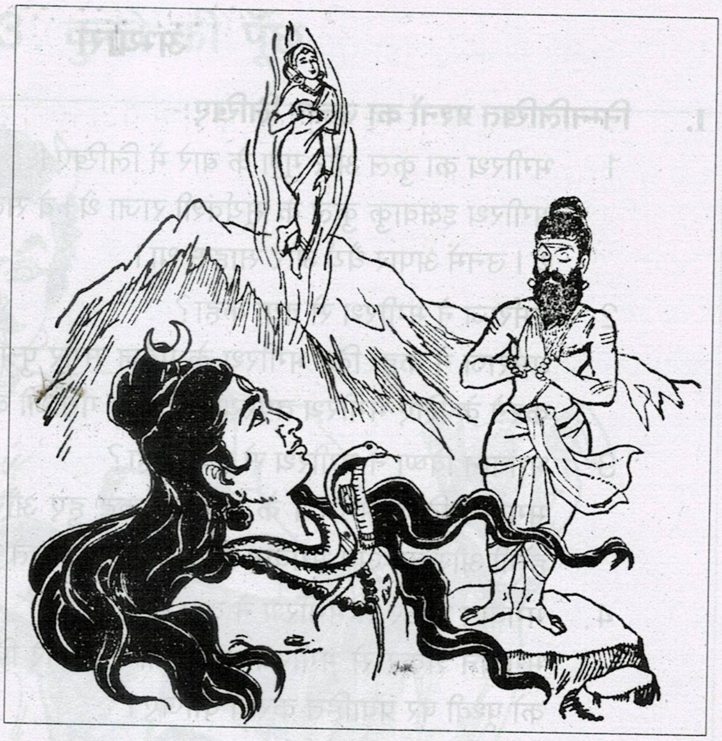

विष्णु के दर्शन से भगीरथ रोमांचित हो गये। विष्णु की सलाह के अनुसार उन्होंने भगवान शिव का ध्यान करना शुरू किया। यह तपस्या भी पहले की तरह कठिन थी। भगवान शंकर शीघ्र ही भगीरथ की तपस्या से संतुष्ट हुए। भगीरथ को दर्शन देकर उन्होंने कहा– "राजन्! तुम्हारे अटल प्रयत्न से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। बोलो, तुम्हें क्या चाहिए?"

भगवान शंकर को सामने पाकर भगीरथ का मन खिल उठा। उन्होंने हाथ जोड़कर प्रार्थना की– "भगवान महेश्वर! मेरे पितरों की मुक्ति के लिए गंगाजी को आप पृथ्वी पर प्रवाहित करवा दीजिए।"

भगवान शंकर बोले–"तुम्हारे इच्छानुसार गंगाजी पृथ्वी पर प्रवाहित होंगी। इससे तुम्हारे पितरों को मुक्ति प्राप्त होगी।"

शंकर के इतना कहते ही देवगंगा पृथ्वी पर उतर आयीं। उनके प्रवाह का वेग पृथ्वी सह नहीं सकेगी, इसलिए शंकर ने उन्हें अपनी जटाओं पर ले लिया और पृथ्वी पर छोड़ दिया। उसकी धारा राजा भगीरथ के पीछे-पीछे चलती हुई उस स्थान पर पहुँची जहाँ सगर-राजकुमार भस्म के रूप में पड़े हुए थे। पवित्र देव-नदी गंगा के स्पर्श से सभी सगर-राजकुमार शाप से मुक्त होकर भगवान विष्णु के लोक पहुँच गये।

राजा भगीरथ के अथक प्रयत्न से देवलोक की गंगा पृथ्वी पर बहने लगी। तब से लेकर आज तक गंगा नदी बराबर बहती हुई भारत को सुख पहुँचा रही है।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए:-

1. भगीरथ का कुल और गुण के बारे में लिखिए।
   भगीरथ इक्षवाकु कुल के सूर्यवंशी राजा थे। वे सत्यनिष्ठ, धर्मनिष्ठ और बड़े प्रतापी राजा थे। उनमें अपार धैर्य और साहस था।
2. धर्मराज ने भगीरथ से क्या कहा?
   धर्मराज ने कहा कि, भगीरथ के पूर्वज सगर पुत्र भस्म के रूप में पड़े हैं; उनका उद्धार करने के लिए भगीरथ तपस्या करें और गंगाजी को पृथ्वी पर ले आएँ।
3. भगवान विष्णु ने भगीरथ से क्या कहा?
   भगवान विष्णु भगीरथ के सामने प्रकट हुए और बोले, 'तुम्हारी तपस्या अवश्य सफल होगी और तुम अब भगवान शिव का ध्यान करते हुए तप करो'।
4. भगवान शंकर से भगीरथ ने क्या माँगा?
   भगवान शंकर से भगीरथ ने प्रार्थना की, 'मेरे पितरों की मुक्ति के लिए आप गंगा माता को पृथ्वी पर प्रवाहित करवा दीजिए।
5. गंगा धरती पर कहाँ तक आयीं?
   पवित्र गंगा भगीरथ के पीछे पीछे चलती हुई उस स्थान पर पहुँची जहाँ सगर राजकुमार भस्म के रूप में पड़े हुए थे।

II. "भगीरथ की तपस्या" कहानी का सारांश लिखिए।

भगीरथ इक्षवाकु कुल के सूर्यवंशी राजा थे। वे सत्यनिष्ठ, धर्मनिष्ठ और बड़े प्रतापी राजा थे। उनमें अपार धैर्य और साहस था। एक बार धर्मराज भगीरथ से मिलने आये थे। राजा के आदर सत्कार से खुश होकर कहा, "आपके पूर्वज सगर पुत्र भस्म के रूप में पड़े हैं। उनका उद्धार करने के लिए आप तपस्या कीजिए और गंगा को पृथ्वी पर ले आइए।" यह सुनकर भगीरथ हिमालय पहुँचे और भगवान विष्णु का ध्यान करते हुए तपस्या करने लगे। विष्णु भगवान प्रकट हुए और बोले, 'तुम्हारी तपस्या अवश्य सफल होगी और तुम अब भगवान शिव का ध्यान करते हुए तप करो'। भगीरथ अब शिवजी का ध्यान करते हुए तपस्या करने लगे। शिवजी उनकी तपस्या से खुश होकर प्रकट हुए। भगवान शंकर से भगीरथ ने प्रार्थना की, 'मेरे पितरों की मुक्ति के लिए आप गंगा माता को पृथ्वी पर प्रवाहित करवा दीजिए। भगवान शंकर ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की। देवगंगा पृथ्वी पर उतर आई। उसकी प्रवाह के वेग को शिवजी ने अपने सिर पर ले लिया। फिर गंगा भगीरथ के पीछे पीछे चलती हुई उस स्थान पर पहुँची जहाँ सगर राजकुमार भस्म के रूप में पड़े हुए थे। पवित्र गंगा के स्पर्श से सभी सगर राजकुमार शाप से मुक्त हुए और विष्णु लोक पहुँचे। आज तक गंगा भारत को सुख पहुँचा रही है।

3. कुत्ते की पूँछ

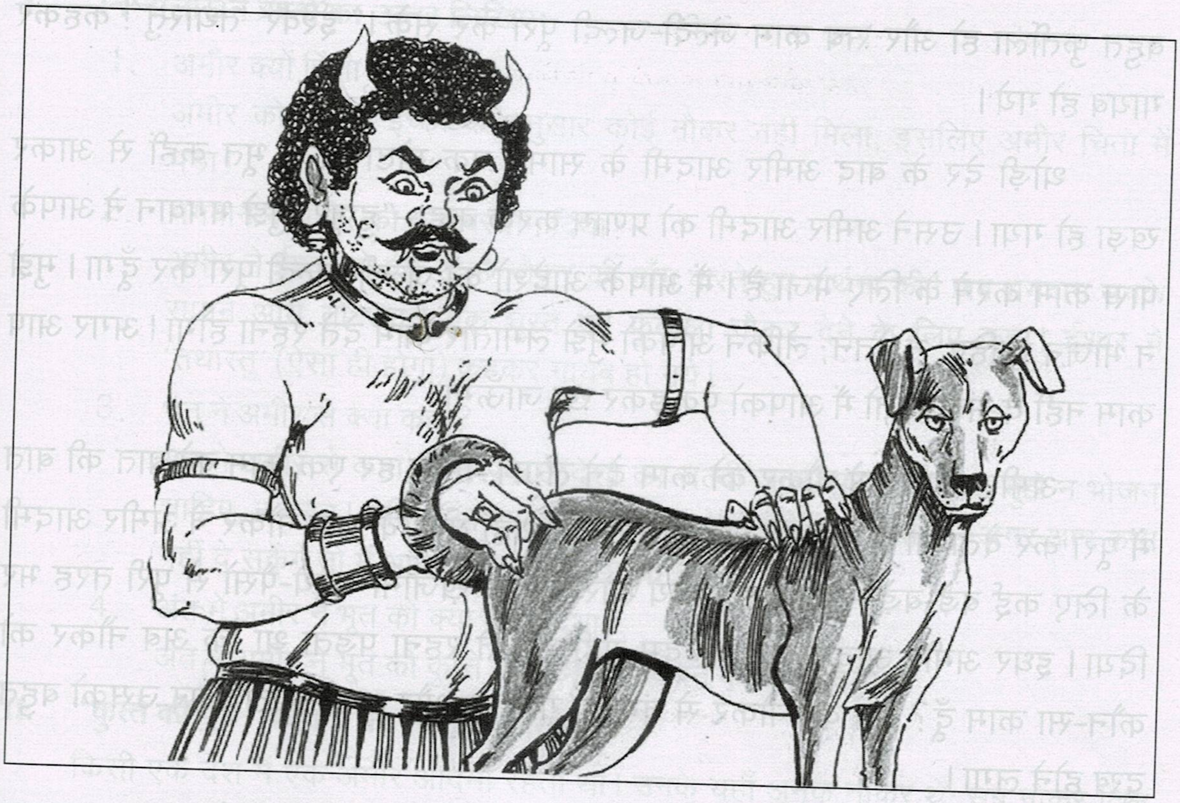

किसी देश में एक अमीर आदमी रहता था। उसके यहाँ बहुत नौकर-चाकर थे। सभी नौकर उस अमीर से बहुत डरते थे और अपना-अपना काम दिल लगाकर बड़ी मेहनत से करते थे। लेकिन वह आदमी कभी किसीसे संतुष्ट नहीं था। वह समझता था कि सब नौकर बड़े ही सुस्त हैं, कोई भी जल्दी-जल्दी काम नहीं करता। मेहनती नौकर की खोज में उसने कई बार नौकर बदले भी, पर उसको तृप्ति नहीं हुई।

अमीर अब चिंता में पड़ा। उसको कोई रास्ता दिखाई नहीं पड़ा। उसने निश्चय कर लिया कि अब ईश्वर से प्रार्थना करूँगा। तब बड़ी देर तक ईश्वर के ध्यान में लगा रहा। ध्यान में वह इस तरह डूब गया कि खाना-पीना भी भूल गया।

ईश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी। उन्होंने सोचा कि अच्छा है, अब इसके साथ एक अच्छा तमाशा ही करें! फिर उन्होंने उस अमीर आदमी को दर्शन दिये और कहा–"बेटा, मैं तुम्हारी प्रार्थना से खुश हूँ। बोलो, तुमको क्या चाहिए?"

अमीर ने ईश्वर को नमस्कार किया और कहा–"मुझे एक ऐसा नौकर दीजिये जो बहुत फुर्तीला हो और सब काम जल्दी-जल्दी पूरा कर सके।" ईश्वर 'तथास्तु'! कहकर गायब हो गये।

थोड़ी देर के बाद अमीर आदमी के सामने एक मोटा-ताज़ा भूत कहीं से आकर खड़ा हो गया। उसने अमीर आदमी को प्रणाम करके कहा–"हुजूर, मुझे भगवान ने आपके पास काम करने के लिए भेजा है। मैं आपके आदेशों को जल्दी-जल्दी पूरा कर दूँगा। मुझे न भोजन चाहिए, न वेतन; लेकिन आपको मुझे लगातार काम देते रहना होगा। अगर आप काम नहीं दे सकेंगे, तो मैं आपको पकड़कर खा जाऊँगा।"

अमीर अपने नये नौकर को काम देने लगा। नौकर हर एक काम को बात की बात में पूरा कर देता था और फिर काम माँगता था। यहाँ तक कि उस नौकर ने अमीर आदमी के लिए कई बड़े-बड़े महल बनवा दिये और उसका ख़जाना रुपये-पैसों से पूरी तरह भर दिया। इधर अमीर आदमो को हर दम यही सोचते रहना पड़ता था कि अब नौकर को कौन-सा काम दूँ? अब वह नौकर से तंग आ गया था और अपने लालच पर उसको बहुत दुख होने लगा।

एक दिन अमीर आदमी भूत को कोई काम नहीं दे सका। फिर वह भूत मालिक को ही खाने को तैयार हो गया। तब तो वह उससे डरकर भागने लगा और भूत उसका पीछा करने लगा।

भगवान का नाम लेकर वह भागता रहा। भागते-भागते अमीर की नज़र एक कुत्ते पर पड़ी। कुत्ते को देखते ही अमीर को एक उपाय सूझ पड़ा। वह रुक गया और जब भूत पास आया, तब उसको आज्ञा दी–"जाओ, इस कुत्ते की टेढ़ी पूँछ सीधी करो।" भूत ने कुत्ते को पकड़ा और उसकी पूँछ सीधी की, लेकिन जैसे ही पूँछ हाथ से छूटी, वह फिर टेढ़ी हो गयी। भूत ने लाख कोशिश की, पर सब फ़िजूल। भला, कुत्ते की पूँछ कहीं सीधी हो सकती है?

वह भूत बड़ा लज्जित हुआ। वह अपने मालिक से आज्ञा लेकर अपनी जगह चला गया। फिर उस दिन से अमीर आदमी अपने मेहनती नौकरों के कार्यों से बहुत संतुष्ट होकर रहने लगा।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए:-

1. अमीर क्यों चिंता में पड़ा?
   अमीर को उनकी इच्छा के अनुसार कोई नौकर नहीं मिला; इसलिए अमीर चिंता में पड़ा।
2. भगवान ने अमीर को क्या वरदान दिया?
   अमीर ने ईश्वर से एक अच्छे नौकर की माँग करते हुए प्रार्थना की। जब भगवान उनके सामने आये तो उनसे एक चुस्त एवं फुर्तीला नौकर देने के लिए कहा। ईश्वर ने 'तथास्तु' (ऐसा ही होगा) कहकर गायब हो गये।
3. भूत ने अमीर से क्या कहा?
   भूत ने अमीर से कहा, मैं आपके आदेशों का जल्दी जल्दी पूरा कर दूँगा, मुझे न भोजन चाहिए, न वेतन। लेकिन आपको मुझे लगातार काम देते रहना चाहिए। अगर आप काम नहीं दे सकेंगे तो मैं आपको पकड़कर खा जाऊँगा।
4. अंत में अमीर ने भूत को क्या काम दिया?
   अंत में अमीर ने भूत को कुत्ते की पूँछ सीधी करने का काम दिया।

II. "कुत्ते की पूँछ" कहानी का सारांश लिखिए।

किसी एक देश में एक अमीर आदमी रहता था। उनके यहाँ अनेक नौकर थे; सब नौकर दिल लगाकर काम करते थे। लेकिन अमीर किसी नौकर से संतुष्ट नहीं था। उसने भगवान से एक अच्छे,चुस्त नौकर के लिए प्रार्थना की। भगवान ने एक मोटा ताजा भूत को नौकर के रूप में भेजा। भूत ने अमीर से कहा, मैं आपके आदेशों का जल्दी जल्दी पूरा कर दूँगा, मुझे न भोजन चाहिए, न वेतन। लेकिन आपको मुझे लगातार काम देते रहना चाहिए। अगर आप काम नहीं दे सकेंगे तो मैं आपको पकड़कर खा जाऊँगा।

अमीर अपने नये नौकर को काम देना शुरू किया। भूत सभी काम बहुत ही जल्दी पूरा कर देता था। अमीर आदमी को हर दम भूत को काम देने के संबंध में ही सोचते रहना पड़ा। एक दिन उनके पास कोई काम नहीं था; तो भूत अमीर मालिक को खाने के लिए तैयार हो गया। अमीर भूत से डरकर भागने लगा। आखिर अमीर भगवान से प्रार्थना करने लगा; उस समय अमीर की नज़र में एक कुत्ता पड़ गया। कुत्ते को देखते ही अमीर को एक उपाय सूझा। अमीर ने भूत से कुत्ते की पूँछ को सीधा करने के लिए कहा। भूत ने कुत्ते की पूँछ सीधा करने गया; लेकिन बहुत प्रयास करने पर भी वह कुत्ते की पूँछ को सीधा नहीं कर पाया। आखिर थककर वह भाग गया। फिर अमीर आदमी को अपनी गलती महसूस हुई। वह अपने मेहनती नौकरों के कार्यों से संतुष्ट होकर रहने लगा।

* * * * *

4.मौन ही मंत्र है!

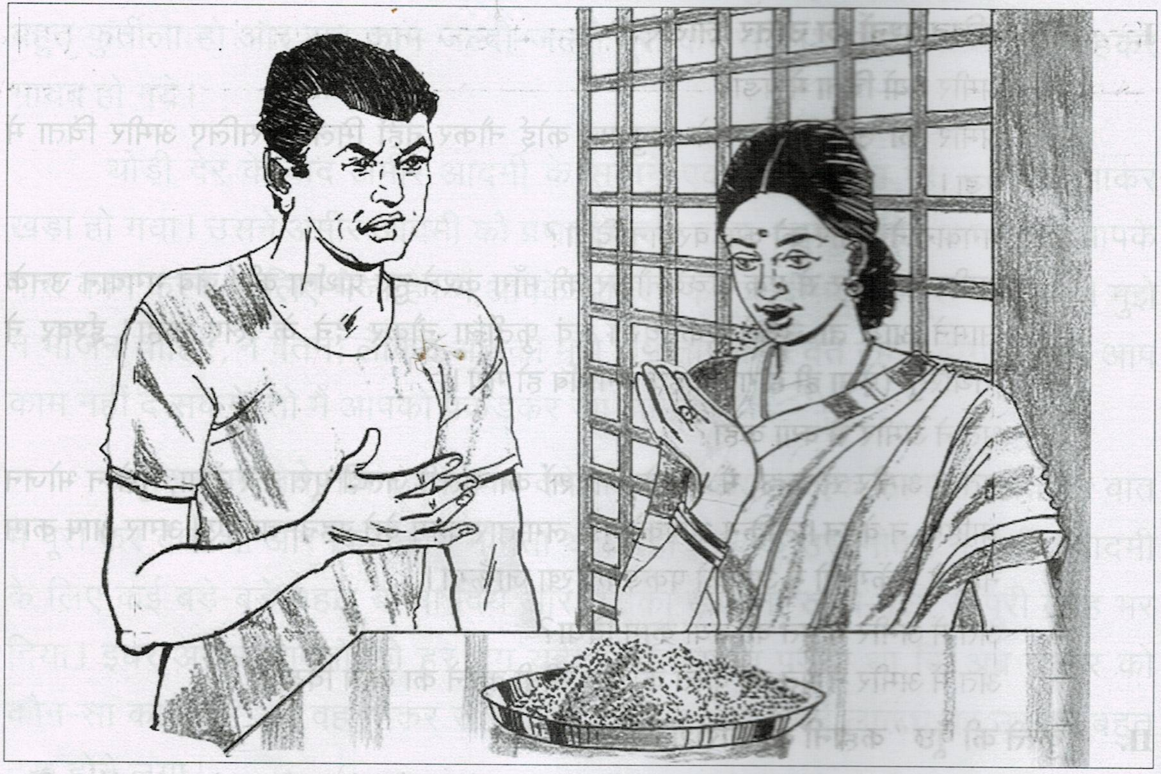

शिवप्पा और गौरी दोनों पति-पत्नी थे। वे दोनों गरम स्वभाव के थे। वे छोटी-छोटी बातों को लेकर झगड़ा करते थे। अक्सर पति अपनी पत्नी पर हाथ भी उठाता था। इसके कारण उनका घर नरक-सा बन गया था। स्वादिष्ट भोजन भी उनके लिए ज़हर-सा बन गया था।

एक दिन उनके गाँव में एक साधु महात्मा आये। वे लोगों को चमत्कार की कहानियाँ सुनाते थे और उपदेश भी देते थे। सैकड़ों लोग उनके दर्शन के लिए दूर-दूर से आते थे। गौरी भी उस साधु के पास गयी। उसने साधु को अपने घर की हालत कह सुनायी और अपने पति को सुधारने का उपाय भी पूछा।

साधु ने गौरी के हाथ में चावल के दानों से भरी एक बोतल दी और कहा–"जब तुम्हारे पति गुस्से में आकर बातें करना शुरू कर देते हैं, तब तुम इन चावल के दानों को मुँह में डाल लेना। थोड़े ही दिनों में तुम्हारा घर स्वर्ग बन जाएगा।"

सदा की तरह शिवप्पा ने घर आते ही अपनी पत्नी को गालियाँ देना शुरू कर दिया। तुरन्त गौरी ने चावल के दानों को मुँह में डाल लिया। पति की गालियाँ सुनकर गौरी को गुस्सा आया, लेकिन मुँह में चावल के दाने होने के कारण वह चुप रही। जब पत्नी चुप रही, तो पति को आश्चर्य होने लगा। यह सिलसिला चार-पाँच दिन तक चलता रहा।

धीरे-धीरे शिवप्पा का हृदय बदलने लगा। गौरी के प्रति उसका दृष्टिकोण भी बदलने लगा। अब शिवप्पा को अपनी मूर्खता महसूस होने लगी। वह एक दिन गौरी के पास गया और अपने दुर्व्यवहार के लिए क्षमा माँगने लगा। उसने गोरी से कहा– "मैं राक्षस हूँ, तुम देवी हो। मैंने तुमको कई कष्ट दिये। कई अपशब्दों का प्रयोग भी किया। लेकिन तुमने बदले में कुछ नहीं कहा। मैं आगे तुमपर कभी अत्याचार नहीं करूँगा। तुम मुझे माफ़ कर दो।"

गौरी ने प्रेम से अपने पति की ओर देखा। पति की आँखों से आँसू बह रहे थे। गौरी को भी अपनी गलतियाँ महसूस हुईं और रोते हुए अपने पति से माफ़ी माँगने लगी। अब उनका घर स्वर्ग बन गया।

मौन धारण मनुष्य के हृदय में परिवर्तन लाता है। हृदय परिवर्तन नरक को स्वर्ग बनाता है। हाँ, मौन से बढ़कर कोई मंत्र नहीं है।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए:-

1. शिवप्पा और गौरी का घर नरक-सा क्यों बना?

   शिवप्पा और गौरी दोनों गरम स्वभाव के थे। दोनों हमेशा लड़ते थे। अक्सर पति, पत्नी पर हाथ भी उठाता था। इन कारणों से उनका घर नरक-सा बन गया था।

2. साधु ने गौरी को कौन-सा उपाय बताया?

   साधु ने गौरी के हाथ में चावल के दानों से भरी एक बोतल दी और कहा कि जब उसके पति गुस्से में आकर बातें करते हैं, तब चावल के दानों को मुँह में डाल लेना।

3. शिवप्पा और गौरी का घर कैसे स्वर्ग बना?

गौरी ने साधु की बातों का अनुसरण किया। पति जब गुस्से में आकर गालियाँ देते तो गौरी चावल के दानों को मुँह में डालकर, चुप रहने लगी। धीरे धीरे शिवप्पा का हृदय बदलने लगा। घर में शांति हुई और घर स्वर्ग बन गया।

4. "मौन ही मंत्र है" नामक कहानी की सीख क्या है?

"मौन ही मंत्र है" नामक कहानी की सीख है, मौन रहने से अनेक परेशानियाँ दूर हो जाती हैं।

II. "मौन ही मंत्र है" कहानी का सारांश लिखिए।

शिवप्पा और गौरी दोनों पति पत्नी थे। दोनों गरम स्वभाव के थे। दोनों हमेशा लड़ते थे। अक्सर पति, पत्नी पर हाथ भी उठाता था। इन कारणों से उनका घर नरक-सा बन गया था। एक दिन उनके गाँव में एक साधु आये। गौरी उनके पास गई और अपनी कहानी सुनाई। साधु ने गौरी के हाथ में चावल के दानों से भरी एक बोतल दी और कहा कि जब उसके पति गुस्से में आकर बातें करते हैं, तब चावल के दानों को मुँह में डाल लेना। थोड़े ही दिनों में तुम्हारा घर स्वर्ग जैसा हो जाएगा।

इसके बाद, शिवप्पा जब भी गुस्से में आकर गालियाँ देते तो गौरी चावल के दानों को मुँह में डाल लेती थी और बदले में कुछ कहे बिना चुप रह जाती थी। गुस्सा होने पर भी मुँह में चावल होने के कारण वह बोल नहीं पाती थी। यह देखकर शिवप्पा को आश्चर्य हुआ। धीरे धीरे उनका हृदय बदलने लगा। गौरी के प्रति उनका दृष्टिकोण बदलने लगा। पति पत्नी दोनों अपनी अपनी गलतियों के लिए पछताने लगे। चलते चलते उनका घर स्वर्ग जैसा हो गया।

इस कहानी की सीख है, मौन रहने से अनेक परेशानियाँ दूर हो जाती हैं।

* * * * *

5. चतुर आदमी

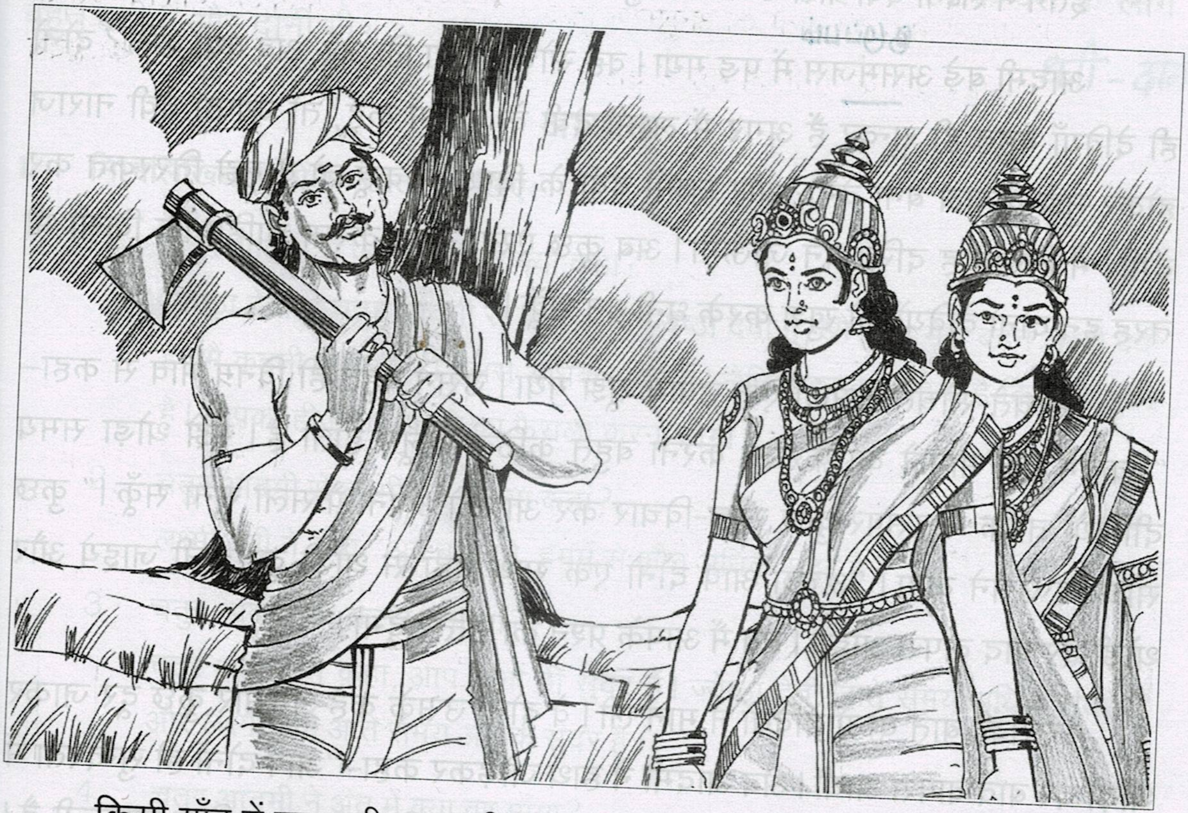

किसी गाँव में एक गरीब आदमी रहता था। वह बहुत भला था और बड़ा चतुर भी। वह रोज़ बड़े सबेरे उठता था, नहा-धोकर और कुछ खा-पीकर लकड़ी काटने जंगल चला जाता था।

एक दिन वह लकड़ी काट रहा था कि इतने में कहीं से कोई आवाज़ सुनाई पड़ी। वह गरदन उठाकर चारों तरफ़ देखने लगा तो आश्चर्य चकित हो गया। क्योंकि दो सुन्दर महिलाएँ आपस में कुछ बोलती हुई उसकी ओर आ रही थीं। जब वे दोनों निकट आयीं तो उनके मुख को देखने से मालूम हुआ कि वे दोनों किसी बात पर बहस कर रही हैं।

दोनों आदमी के पास आयीं। एक महिला आदमी से कहने लगी "ऐ नेक आदमी! तुम्हीं को हमारे झगड़े का फ़ैसला करना होगा। मैं ज्येष्ठा देवी हूँ और यह मेरी बहन लक्ष्मी देवी है। मैं कहती हूँ कि मैं ही इससे अधिक सुन्दर हूँ। लेकिन इसका कहना है कि यही बहुत सुन्दर है।"

इतने में लक्ष्मी देवी बोल उठी “अब तुम बताओ कि हममें से कौन ज्यादा सुन्दर है?”

குழப்பம்

आदमी बड़े असमंजस में पड़ गया। वह सोचने लगा कि अरे, अब क्या करूँ? दोनों ही देवियाँ बहुत ही सुन्दर हैं अगर मैं लक्ष्मी देवी के पक्ष में कहूँ, तो ज्येष्ठा देवी नाराज होकर मुझे कंगाल बना देंगी; और लक्ष्मी देवी के विपक्ष में कहूँ तो वे मुझे तिरस्कृत कर देंगी। मैं निस्संदेह दरिद्र बन जाऊँगा। अब कुछ ऐसा उपाय करना चाहिए कि किसी भी तरह इन दोनों देवियों को खुश करके धनी बन सकूँ।

सोचते-सोचते उसको एक उपाय सूझ गया। उसने बहुत ही विनम्र भाव से कहा– “एकदम इस मामले का फ़ैसला करना बहुत कठिन मालूम होता है। मुझे थोड़ा समय दीजिये, ताकि मैं इसपर कुछ सोच-विचार कर आपको अपना फ़ैसला सुना सकूँ।” कुछ सोचकर उसने कहा। “अच्छा आप दोनों एक साथ यहाँ से थोड़ी दूर चली जाइये और थोड़ी देर बाद वापस आइये। तब मैं आपके प्रश्न का उत्तर दूँगा।”

उसकी बात दोनों देवियों ने मान ली। वे दोनों उसके कहे अनुसार कुछ दूर जाकर थोड़ी देर बाद वापस आयीं। अब आदमी ने हाथ जोड़कर कहा–“आप दोनों ही सुन्दरता में समान हैं, तो भी ज्येष्ठा देवी! आपके जाते समय आपकी सुन्दरता अधिक चमकती है। और लक्ष्मी देवी ! आपके आते समय आपकी शोभा बहुत ही बढ़ जाती है।”

यह सुनकर दोनों देवियाँ प्रसन्न हुईं। उन्होंने उस आदमी से कहा–“अब तुम कुछ वर माँग लो। तुम्हारे फ़ैसले से हम बहुत खुश हैं।”

आदमी ने कहा–“आपकी कृपा– मेरी इच्छा है कि जब तक मैं और मेरे वंश के लोग इस दुनिया में रहेंगे, तब तक लक्ष्मीदेवी का कृपा-कटाक्ष सदा ही मुझपर और मेरे वंश पर रहे।”

लक्ष्मी देवी ने कहा–“अच्छा, ऐसा ही होगा। लेकिन तुम और तुम्हारे वंश के लोग जब तक उस धन को बंद न रखकर दान करते रहेंगे, तब तक तुम लोग धनी रहेंगे।” यह कहकर वे दोनों देवियाँ वहाँ से चली गयीं।

आदमी अपने दिन सुख से बिताने लगा। कहा जाता है कि उसके वंश के लोग बहुत धनी हैं और दानी भी।

धनी - दानी

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए:-

1. चतुर आदमी से ज्येष्ठा देवी ने क्या कहा?
   ज्येष्ठा देवी ने चतुर आदमी से कहा - "मैं ज्येष्ठा देवी हूँ, और यह मेरी बहन लक्ष्मी देवी है। मैं कहती हूँ कि मैं ही इससे अधिक सुंदर हूँ। लेकिन इसका कहना है कि यही सुंदर है। आपको ही हमारे झगड़े का फैसला करना होगा।"

2. चतुर आदमी से लक्ष्मीदेवी ने क्या कहा?
   लक्ष्मी देवी ने कहा, 'अब बताइये, हममें से कौन अधिक सुंदर है?'

3. चतुर आदमी का उत्तर क्या था?
   चतुर आदमी ने कहा, आप दोनों ही सुंदर हैं। ज्येष्ठा देवी जाते समय अधिक सुंदर हैं और लक्ष्मी देवी आते समय अधिक सुंदर हैं।

4. चतुर आदमी ने अंत में क्या वर माँगा?
   आदमी ने वर माँगा, "जब तक मैं और मेरे वंश के लोग इस दुनिया में रहेंगे, तब तक लक्ष्मी देवी का कृपा-कटाक्ष सदा मुझपर और मेरे वंश पर होना चाहिए!"

II. "चतुर आदमी" कहानी का सारांश लिखिए।

एक गाँव में एक गरीब आदमी रहता था। वह लकड़ी काटकर अपना जीवन चला रहा था। एक दिन जब वह लकड़ी काट रहा था, तब दो महिलाएँ आईं। दोनों आपस में कुछ बोलते हुए आईं। आदमी के पास आकर, एक महिला ने कहा, मैं ज्येष्ठा देवी हूँ, और यह मेरी बहन लक्ष्मी देवी है। मैं कहती हूँ कि मैं ही इससे अधिक सुंदर हूँ। लेकिन इसका कहना है कि यही सुंदर है। आपको ही हमारे झगड़े का फैसला करना होगा।

तुरंत लक्ष्मी देवी ने कहा, 'अब बताइये, हममें से कौन अधिक सुंदर है?' आदमी ने कुछ सोचकर कहा, "आप दोनों थोड़ी दूर चलकर वापस आइये। मैं अपना निर्णय सुनाता हूँ।" दोनों

महिलाओं ने ऐसा ही किया। आदमी ने कहा, "आप दोनों ही सुंदर हैं। ज्येष्ठा देवी जाते समय अधिक सुंदर हैं और लक्ष्मी देवी आते समय अधिक सुंदर हैं।" यह सुनकर दोनों महिलाएँ खुश हुईं। अब दोनों ने आदमी से अपने लिए कुछ वर माँगने को कहा। आदमी ने वर माँगा, "जब तक मैं और मेरे वंश के लोग इस दुनिया में रहेंगे, तब तक लक्ष्मी देवी का कृपा-कटाक्ष सदा मुझपर और मेरे वंश पर होना चाहिए।"

लक्ष्मी ने कहा, "ऐसा ही होगा। लेकिन आपको और आपके वंश के लोगों को उस धन का सदुपयोग करना चाहिए। दान-धर्म करना चाहिए।" आदमी ने ऐसा ही किया। उनके वंश के लोग भी बहुत धनी और दानी हैं।

6. सूखे संतरे

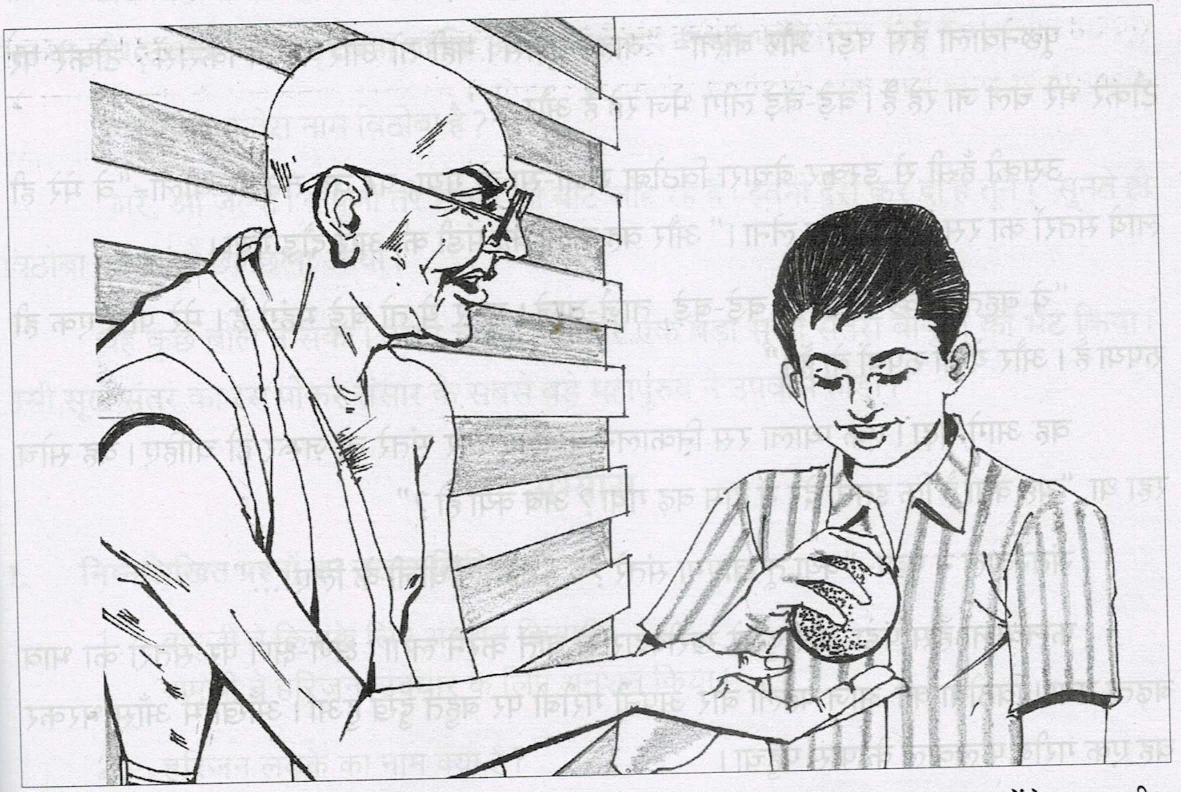

बापूजी ने एक बार हरिजन-उद्धार के लिए अनशन किया था। उस समय उन्होंने एक गरीब हरिजन लड़के से हँसते-हँसते कहा– "मैं तेरे लाये संतरे से ही अपना व्रत तोड़ूँगा।" वह लड़का विठोबा यह बात सुनकर मारे खुशी के स्तंभित रह गया। बात भी ऐसी ही थी। बड़े-बड़े लोगों को यह सौभाग्य नहीं मिला। वह हरिजन बालक विठोबा उसी दिन से यह कोशिश करने लगा कि अपने पास किसी तरह इतने पैसे हो जाएँ जिससे वह संतरे ख़रीदकर बापूजी को दे सके। बापूजी का अनशन टूटने का दिन आया। उन्होंने विठोबा से कहा–"कल तू सन्तरे लाना। मैं तेरे लाये संतरे से ही अपना व्रत तोड़ूँगा।"

विठोबा जिस किसीसे यह बात कहता था, वह उसे बेवकूफ, पागल और सनकी बताता था। खुद उसकी माँ तक इस बात को सत्य नहीं मानती थी। पर विठोबा कहाँ तक सच-झूठ को समझाता फिरे? उसने मेहनत करके पैसे बचाये सही, पर वह था केवल एक रुपया। उसने सोचा कि चार संतरे मिल जाएँगे जो बापूजी के लिए काफ़ी होंगे। खुशी से उछलते हुए वह संतरे लाने चल पड़ा। किसीने पूछा–"इतनी जल्दी किस बात की है, लड़के?"

'बापूजी के लिए संतरे लाने जा रहा हूँ। उन्होंने मुझसे माँगे थे।'

पूछनेवाला हँस पड़ा और बोला– "वाह! तुझसे। नहीं तो और माँगेंगे किससे? टोकरे पर टोकरे भरे चले जा रहे हैं। बड़े-बड़े लोग भेज रहे हैं और....'

उसकी हँसी से डरकर बेचारा विठोबा रुआँ-सा हो गया, पर वह तनकर बोला–"वे मेरे ही लाये संतरों का रस पिएँगे। देख लेना।" और वह फलों की मंडी की ओर दौड़ गया।

"ये बहुत अच्छे संतरे हैं, बड़े-बड़े, ताज़े-ताज़े। मगर ये तो बड़े महंगे हैं। मेरे पास एक ही रुपया है। और ये तो रुपयों के हैं।"

वह आगे बढ़ा। एक प्याला रस निकालने के लिए चार संतरे तो ज़रूर ही चाहिए। वह सोच रहा था, "यह क्या है कि इतनी देर में दाम बढ़ गया? अब क्या हो?"

संतरेवाले ने पूछा–"क्या तू खाएगा संतरे?", "नहीं, गाँधीजी के लिए...."

फलवाला हँस पड़ा और दूसरे खरीददार से बातें करने लगा। क्षण-क्षण पर संतरों का भाव बढ़ता गया। विठोबा को आज पहली बार अपनी गरीबी पर बहुत दुख हुआ। आँखों में आँसू भरकर वह एक गरीब फलवाले के पास पहुँचा।

उस फलवाले को लड़के पर दया आ गयी। उसने अपने छोटे-छोटे, सूखे सन्तरे दिखाकर कहा- 'मेरे पास तो ये ही बचे हैं। इन्हें लेना हो तो ले लो।'

'क्या दाम है?' 'एक रुपये में चार।'

बहुत ही खुश होकर विठोबा ने संतरे लेने को हाथ बढ़ा दिये और उन्हें लेकर जल्दी गाँधीजी के पास गया।

बापूजी के व्रत तोड़ने का समय हो गया था। सब लोग खुश थे और उनकी जीवन-रक्षा के लिए प्रार्थना कर रहे थे। बड़े-बड़े लोगों ने अपने संतरों से व्रत तुड़वाने के लिए टोकरे भर-भरकर संतरे भेजे थे। रस निकाला जा रहा था। पर बापूजी ने कहा–"क्या अभी तक विठोबा नहीं आया?"

"विठोबा! किसलिए बापूजी?"

"मैं उसीके लाये संतरे से व्रत तोड़ूँगा। वह कहाँ है?"

अब विठोबा की खोज होने लगी। वह बाहर खड़ा हुआ था। भीड़ के मारे अंदर पहुँच नहीं पा रहा था और उसका धीरज छूट रहा था कि अब बापूजी रस ले चुके होंगे।

'लड़के, क्या तेरा नाम विठोबा है?'

'अरे, आ जल्दी। बापूजी तेरे संतरों की बाट जोह रहे हैं। इतनी देरी कर दी है तूने!' सुनते ही विठोबा की आंखें छलछला आयीं।

वह कुछ बोल न सका। उसने चुपचाप जाकर एक बड़ा सूखा संतरा बापूजी को भेंट किया। उसी सूखे संतरे का रस पीकर संसार के सबसे बड़े महापुरुष ने उपवास तोड़ा।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए:-

1. बापूजी ने किसके लिए अनशन किया?
   बापूजी ने हरिजन-उद्धार के लिए अनशन किया।

2. हरिजन लड़के का नाम क्या है?
   हरिजन लड़के का नाम विठोबा है।

3. विठोबा ने एक रुपये में कितने संतरे खरीदे?
   विठोबा ने एक रुपये में चार सूखे संतरे खरीदे।

4. बापूजी ने किसके संतरे से उपवास तोड़ा?
   बापूजी ने विठोबा के लाये संतरे से व्रत तोड़ा।

II. "सूखे संतरे" कहानी का सारांश लिखिए।

बापूजी ने एक बार हरिजन-उद्धार के लिए अनशन किया था। उपवास करते समय उन्होंने एक हरिजन लड़के से कहा कि वे उसके लाये संतरे से ही व्रत तोडेंगे। विठोबा किसी से यह बात कहता था तो वह हँसने लगता था। पर वह तनकर बोला कि बापू मेरे ही संतरों का रस पियेंगे। वह हरिजन बालक विठोबा उसी दिन से पैसे इकट्ठे करने लगा और मेहनत करके एक रुपया बचाया। उसने सोचा कि चार संतरे मिल जाएँगे तो बापूजी के लिए काफ़ी होंगे। बड़े-बड़े और ताज़े-ताज़े संतरे

महँगे थे। विठोबा को पहली बार अपनी गरबी पर दुख हुआ। वह एक गरीब फलवाले के पास गया। फलावाले ने अपने छोटे-छोटे सूखे संतरे दिखाकर कहा कि ये चार संतरे एक रुपया है। विठोबा ने खुश होकर संतरे लिये और जल्दी जाने लगा।

बापूजी के व्रत तोड़ने का समय हो रहा था। सब लोग उनकी जीवन रक्षा के लिए प्रार्थना कर रहे थे। बड़े-बड़े लोगों ने अपने संतरों से बापू के व्रत तुड़वाने के लिए टोकरे भर-भर कर संतरे भेजे थे। पर बापूजी ने कहा कि वे विठोबा के लाये संतरे से ही व्रत तोड़ेंगे। विठोबा की खोज होने लगी। विठोबा दौड़कर आया और एक सूखा संतरा बापूजी को भेंट किया। उसी सूखे संतरे का रस पीकर संसार के सबसे बड़े महापुरुष ने उपवास तोड़ा।

मध्यमा पाठ्य पुस्तक

भाग - 5

भरत-मिलाप

1. चार-भाई 86
2. विश्वामित्र का यज्ञ 87
3. धनुष यज्ञ 89
4. राजतिलक की तैयारी 92
5. मंथरा का षड्यंत्र 94
6. राम का वनवास 97
7. भरत का शोक 101
8. गुह की भक्ति 104
9. भरत-मिलाप 107
10. पादुका पट्टाभिषेक 110

1. चार भाई

अयोध्या के महाराज दशरथ बड़े प्रतापी और उदार राजा थे। बड़े प्रेम से अपनी प्रजा का पालन करते थे। उनके राज्य में प्रजा को किसी प्रकार का कष्ट नहीं था। न बाहरी शत्रु का भय था, न चोर-डाकुओं का। इसलिए सब लोग सुखी थे। सब प्रसन्न थे।

महाराज दशरथ के तीन रानियाँ थीं। सबसे बड़ी रानी का नाम था कौशल्या। सुमित्रा मंझली रानी थी और कैकेयी सबसे छोटी थी। वे सबसे छोटी रानी को बहुत प्यार करते थे।

महाराज दशरथ के चार पुत्र हुए। रानी कौशल्या के गर्भ से राम का जन्म हुआ। रानी कैकेयी ने भरत को जन्म दिया। मँझली रानी सुमित्रा के गर्भ से दो पुत्र उत्पन्न हुए। उनके नाम लक्ष्मण और शत्रुघ्न रखे गये। चारों बालक बड़े सुन्दर और होनहार थे। राजा उन्हें देखकर फूले अंग न समाते थे। अयोध्या की प्रजा भी उन चारों भाइयों को देखकर आनन्द से फूल उठती थी। रोज़ सबेरे और शाम के समय उनको देखने के लिए महल के द्वार पर स्त्री-पुरुषों की भीड़ लग जाती थी।

चारों भाई पढ़ने-लिखने में भी बहुत तेज़ थे। थोड़े ही समय में उन्होंने सब विद्याएँ सीख लीं। घोड़े की सवारी करने, रथ हाँकने, तीर-तलवार चलाने और कुश्ती लड़ने में भी सब भाई निपुण हो गये। शील-स्वभाव में वे जितने अच्छे थे, विद्या और बुद्धि में भी वैसे ही निपुण थे। चारों सद्गुणों के भंडार थे।

राम सब भाइयों से बड़े थे। देखने में भी वे सबसे अधिक सुन्दर थे। उनका रंग dark साँवला था, आँखें बड़ी-बड़ी थीं। मुख खिले हुए कमल के जैसा था। छाती चौड़ी थी और हाथ-पैर खूब मज़बूत थे। वे बहुत सुन्दर थे। उन्हें जो देखता था, देखते ही रह जाता था। सब भाइयों में गहरा प्रेम था। सब एक दूसरे को खूब प्यार करते थे। तो भी राम को लक्ष्मण अधिक प्रिय थे। भरत शत्रुघ्न को अधिक चाहते थे। सब भाई एक साथ रहते थे, एक साथ खेलते थे और एक साथ विद्या सीखते थे। सब लोग उनके गुणों की प्रशंसा करते थे और उनको आशीर्वाद देते थे कि चारों कुमार जुग-जुग जिएँ।

अभ्यास

1. "चार भाई" पाठ का सारांश लिखिए :-

महाराज दशरथ अयोध्या के राजा थे। वे बड़े उदार और प्रतापी थे। उनके राज्य में सब प्रसन्न थे। उनके तीन रानियाँ थीं। बड़ी रानी का नाम कौशल्या था। मंझली रानी का नाम सुमित्रा था। सबसे छोटी रानी का नाम कैकेयी था।

प्रतापी
Majestic
royal/glorious

उदार
Generous

महाराज दशरथ के चार पुत्र थे। वे राम, लक्ष्मण, शत्रुघ्न और भरत थे। राम कौशल्या का पुत्र था। लक्ष्मण और शत्रुघ्न सुमित्रा के पुत्र थे। भरत कैकेयी का पुत्र था। वे चारों भाई पढ़ने–लिखने में और सभी कलाओं में निपुण थे।

राम सब भाइयों से बड़ा था। वह बहुत सुन्दर था। और सभी भाइयों से प्रेम करता था।

2. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए :-

(1) दशरथ के कितने पुत्र थे? वे कौन–कौन थे?

दशरथ के चार पुत्र थे। वे राम, लक्ष्मण, शत्रुघ्न और भरत थे।

(2) दशरथ के कितनी रानियाँ थीं? वे कौन–कौन थीं?

दशरथ के तीन रानियाँ थीं। वे कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी थीं।

2. विश्वामित्र का यज्ञ

विश्वामित्र नामक एक मुनि वन में तपस्या करते थे। वे बड़े तपस्वी थे; गरम स्वभाववाले भी थे। इसलिए लोग उनसे बहुत डरते थे। एक दिन वे महाराज दशरथ के द्वार पर आकर खड़े हुए। उन्होंने द्वारपालों से कहा-"जल्दी जाकर राजा को ख़बर दो कि विश्वामित्र मुनि मिलने आये हैं।"

विश्वामित्र को देखकर द्वारपाल डर गये। वे दौड़कर महाराज के पास गये और बोले- "महाराज, एक मुनि द्वार पर खड़े हैं और वे महाराज से मिलना चाहते हैं।" समाचार मिलते ही महाराज दशरथ महल से बाहर आये, मुनि को दण्डवत् प्रणाम किया। उन्हें दरबार में ले गये, ऊँचे आसन पर बिठाया। फिर पूछा- "हे मुनिवर, आपने यहाँ तक आने का कष्ट क्यों किया? क्या आज्ञा है।"

विश्वामित्र बोले– "मैं एक बहुत बड़ा यज्ञ कर रहा हूँ। जिस वन में रहता हूँ, उसमें बहुत-से राक्षस रहते हैं। वे दुष्ट राक्षस आकर हमारा यज्ञ बिगाड़ देते हैं। यज्ञ की रक्षा के लिए आप हमारे साथ राम और लक्ष्मण को भेजिये।"

ऋषि की बात सुनकर महाराज दशरथ घबरा गये। वे बोले– "मुनिजी, राम-लक्ष्मण तो अभी बच्चे हैं। वे राक्षसों से कैसे लड़ सकते हैं? मैं आपके साथ एक बड़ी सेना भेज देता हूँ। वह राक्षसों को मारकर आपके यज्ञ की रक्षा करेगी। यदि इससे भी आपको संतोष न हो तो मैं स्वयं आपके साथ चलूँगा। पर आप राम-लक्ष्मण को मत माँगियेगा।"

राजा की बात सुनकर मुनि क्रोध से लाल हो उठे। बोले-"राजा मुझे तुम्हारी सेना वगैरह कुछ नहीं चाहिए। भेजना हो, तो राम-लक्ष्मण को भेजो, नहीं तो मैं अभी चलता हूँ।"

विश्वामित्र को क्रोध में देखकर राजा के गुरु वशिष्ठजी ने कहा– "महाराज, आप राम और लक्ष्मण को विश्वामित्र मुनि के साथ भेज दीजिये। विश्वामित्र बहुत बड़े ज्ञानी और तपस्वी हैं। ये बहुत बड़े योद्धा भी हैं। इनके साथ जाने से राम का मंगल ही होगा। आप चिन्ता न करें।"

गुरु की बात सुनकर महाराज दशरथ राजी हो गये। आँखों में आँसू के साथ उन्होंने राम-लक्ष्मण को मुनि के साथ भेज दिया। बेटों से बिछुड़ने का दुख पिता को होता ही है। मुनि राम-लक्ष्मण को साथ लेकर अपने आश्रम में पहुँचे। अपना यज्ञ आरंभ किया। राम-लक्ष्मण दोनों भाई हाथों में तीर–धनुष लेकर यज्ञ की रखवाली करने लगे।

यज्ञ के हवन कुंड से धुआँ उठने लगी। घी और धूम की सुगंधि चारों ओर फैल गयी। धुआँ देखकर सैकड़ों राक्षस हाथों में ईंट-पत्थर लेकर आये और यज्ञ बिगाड़ने लगे। पर राम-लक्ष्मण ने अपने तीखे तीरों से मारकर सब राक्षसों को भगा दिया। बहुत-से राक्षस मारे गये। जो बचे, वे अपनी जान लेकर भाग गये।

विश्वामित्र का यज्ञ पूरा हुआ। मुनियों ने राम-लक्ष्मण की वीरता की बहुत प्रशंसा की और उन दोनों को आशीर्वाद दिया। विश्वामित्र जन्म से क्षत्रिय थे, इसलिए युद्धविद्या में बड़े निपुण थे। उन्होंने राम-लक्ष्मण को युद्ध करने की बहुत-सी नयी कलाएँ सिखायीं। बहुत-से अस्त्र-शस्त्र भी जो उनके पास थे, दोनों भाइयों को दिये।

अभ्यास

1. "विश्वामित्र का यज्ञ" पाठ का सारांश लिखिए :-

विश्वामित्र बड़े तपस्वी और क्रोधी थे। सब लोग उनसे डरते थे। एक दिन वे दशरथ के दरबार में आये और बोले, "मैं बहुत बड़ा यज्ञ कर रहा हूँ। राक्षस आकर यज्ञ को बिगाड़ देते हैं। यज्ञ की रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण को मेरे साथ भेजिए।

विश्वामित्र की बात सुनकर राजा दशरथ घबरा गये। राम और लक्ष्मण को उनके साथ भेजने दशरथ तैयार नहीं थे। लेकिन गुरु वशिष्ठ के कहने पर दशरथ राम और लक्ष्मण को विश्वामित्र के साथ भेजने राजी हुए।

राम और लक्ष्मण को लेकर विश्वामित्र वन गये। यज्ञ को बिगाड़ने के लिए कई राक्षस आये। राम और लक्ष्मण ने उन राक्षसों को मार डाला। विश्वामित्र का यज्ञ पूरा हुआ।

प्रतापी
Majestic
royal/glorious

उदार
Generous

वे राम और लक्ष्मण की वीरता से खुश हुए। उन्होंने उन दोनों को युद्ध की कई कलाएँ सिखायीं।

2. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(1) सब लोग विश्वामित्र से क्यों डरते थे?

विश्वामित्र बड़े तपस्वी और गरम स्वभाव के थे। इसलिए सब लोग उनसे डरते थे।

(2) राम और लक्ष्मण ने वन में क्या किया?

राम और लक्ष्मण ने वन में राक्षसों को मार डाला।

3. धनुष-यज्ञ

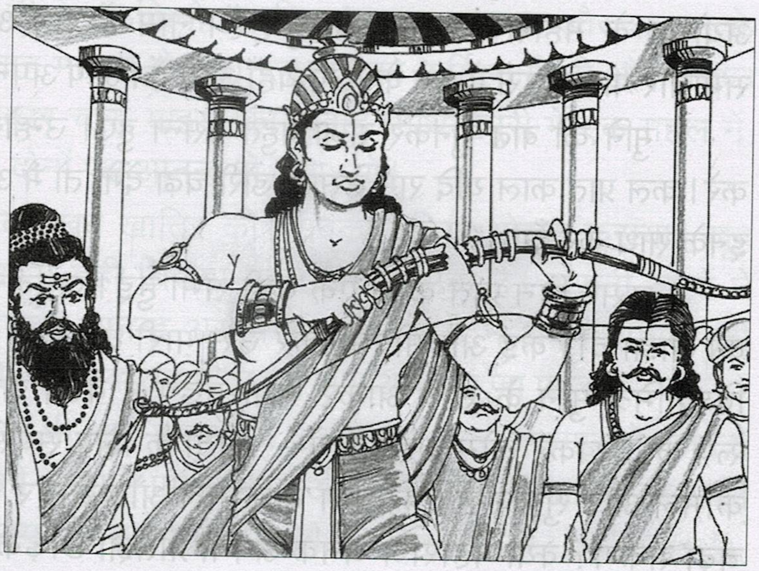

मिथिला के महाराज जनक के एक पुत्री थी-नाम था सीता। सीता अत्यन्त रूपवती, gentil सुशील और गुणों की खान थी। सारी मिथिला में उसके गुणों की प्रशंसा होती थी। राजा जनक अपनी पुत्री को बहुत प्यार करते थे। सीता महाराज जनक की आँखों का तारा थी।

जब सीता wise सयानी हुई, तब राजा जनक उसके विवाह के बारे में सोचने लगे। वे सीता के लिए एक सुन्दर और वीर वर चाहते थे। राजा के पास एक पुराना धनुष था। उन्होंने promise प्रतिज्ञा pledge की कि जो राजकुमार उस धनुष पर डोरी चढ़ा देगा, उसीके साथ सीता का विवाह होगा।

महाराज जनक की प्रतिज्ञा सुनकर बहुत-से राजकुमार मिथिला आये। वे सीता को ब्याहना चाहते थे। पर कोई राजकुमार उस पुराने धनुष पर डोरी नहीं चढ़ा सका। डोरी चढ़ाने की बात तो दूर रही, कोई उसको हिला-डुला भी नहीं सका। वह बहुत भारी था। सब राजकुमार निराश होकर चले गये। बेचारी सीता कुँवारी ही रह गयी।

यह देखकर राजा जनक को बड़ी चिन्ता हुई। वे सोचने लगे– "क्या सीता का विवाह नहीं होगा? क्या वह जन्म–भर कुँवारी ही रह जाएगी; मैंने बिना समझे-बूझे एक कठिन प्रतिज्ञा कर दी। मैं क्या करूँ?"

राजा जनक इसी चिन्ता में पड़े थे। एक दिन द्वारपालों ने आकर जनकजी से कहा- – "महाराज, दो राजकुमार एक मुनि के साथ आये हैं। वे द्वार पर खड़े हैं और आपके दर्शन करना चाहते हैं।"

राजा जनक बाहर आये, विश्वामित्र मुनि को देखकर उन्हें प्रणाम किया, फिर पूछा- – "मुनिवर, आप कहाँ से आ रहे हैं? ये दोनों सुन्दर राजकुमार कौन हैं?"

विश्वामित्र मुनि ने दोनों भाइयों का परिचय दिया। वे बोले-"ये दोनों राजकुमार अयोध्या के महाराज दशरथ के पुत्र हैं। नाम हैं राम और लक्ष्मण। आपके धनुष का समाचार पाकर उसे देखने के लिए यहाँ आये हैं। आप अपना धनुष इन्हें दिखाइये।"

मुनि की बात सुनकर राजा बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा-"आप लोग अभी विश्राम करें। कल प्रातःकाल यदि राम उसपर डोरी चढ़ा देंगे, तो मैं अपनी प्यारी पुत्री सीता का विवाह इनके साथ कर दूँगा।"

दूसरे दिन प्रातःकाल एक बड़ी सभा हुई। जनकजी ने अपना पुराना धनुष लाने की आज्ञा दी। कई आदमी मिलकर उस भारी धनुष को ले आये। राम और लक्ष्मण भी विश्वामित्र मुनि के साथ आकर सभा-मंडप में बैठे। रामचन्द्र के मनोहर और सुन्दर रूप को देखकर लोग कहने लगे– "सीता के लिए सबसे योग्य वर ये ही हैं। ये कितने कोमल और सुन्दर हैं। पर क्या ये कोमल और सुन्दर राजकुमार इस धनुष पर डोरी चढ़ा सकेंगे? क्या महाराज जनक अपनी प्रतिज्ञा छोड़कर इनके साथ सीता का विवाह करा देंगे?"

विश्वामित्र की आज्ञा पाकर रामचंद्र उठे और धनुष के पास गये। उन्होंने उस पुराने और भारी धनुष को बहुत आसानी से अपने हाथ में उठा लिया। उसपर डोरी भी चढ़ा दी। वह देखकर सब लोग आश्चर्य चकित हो गये। फिर उन्होंने बायें हाथ से धनुष को पकड़कर दाहिने हाथ से उसकी डोरी खींची। डोरी खींचते ही धनुष के दो टुकड़े हो गये। उसके टूटने की आवाज़ चारों ओर गूँज उठी। उसके टूटने से इतनी भारी आवाज़ हुई कि बहुत-से लोग उसे सुनकर डर गये।

धनुष के टूटते ही राजा जनक के आनन्द की कोई सीमा नहीं रही। उनकी प्रतिज्ञा पूरी हुई। उन्होंने उठकर कहा– "हे मुनि, आज मैंने दशरथकुमार रामचन्द्र का पराक्रम

देख लिया। मैं अपनी प्यारी पुत्री सीता का विवाह रामचन्द्र के साथ करा दूँगा। भगवान ने मेरी प्रतिज्ञा सफल करा दी। सीता मेरे लिए प्राणों से भी बढ़कर प्रिय है। मैं उसे राम को समर्पित करता हूँ।"

जनकजी ने दशरथ महाराज को समाचार देने के लिए दूत भेजे। समाचार पाकर दशरथजी फूले अंग न समाये। उन्होंने एक बहुत बड़ी बारात सजायी। अपने गुरुजनों, सगे-संबंधियों, इष्ट-मित्रों और भरत - शत्रुघ्न को भी साथ लेकर मिथिला के लिए रवाना हो गये।

मिथिला में जनकजी ने बारात का सुन्दर ढँग से स्वागत किया। राजा जनक के एक भाई थे। उनके तीन लड़कियाँ थीं। वे भी विवाह के योग्य हो चुकी थीं। दशरथजी की आज्ञा लेकर जनकजी ने उन तीनों लड़कियों का विवाह भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के साथ करा दिया। भरत का विवाह मांडवी से हुआ, लक्ष्मण को ऊर्मिला मिली और शत्रुघ्न ने श्रुतकीर्ति को ब्याहा। इस प्रकार चारों भाइयों का विवाह मिथिलापुरी में एक महल में, एक साथ धूम-धाम से हो गया। दोनों पक्ष आनन्द से भर गये।

राजा जनक ने बारात की खूब खातिर की। सबको बढ़िया भोजन कराया। खूब दही-चिउड़ा खिलाया। मिथिला में दही-चिउड़ा बहुत अच्छा होता है। बाराती लोगों ने भरपेट दही-चिउड़ा खाया। उनका आनन्द असीम था। जनकजी ने अपने दामादों को दान-दहेज़ भी खूब दिया। खुशी–खुशी बारात बिदा हुई और अयोध्या जा पहुँची।

बारात में भरतजी के मामा भी आये हुए थे। वे केकय देश के राजकुमार थे। जब वे घर लौटने लगे, तो दशरथजी की अनुमति पाकर भरत और शत्रुघ्न दोनों भाइयों को अपने साथ ले गये। अयोध्या में सिर्फ़ राम और लक्ष्मण रह गये।

अभ्यास

1. "धनुष यज्ञ" पाठ का सारांश लिखिए :-

मिथिला के महाराज जनक थे। सीता उनकी पुत्री थी। वह बहुत सुन्दर और सुशील थी। वह विवाह के योग्य बनी। जनक अपनी पुत्री के लिए वीर वर चाहते थे। उनके पास एक पुराना धनुष था। उन्होंने उस धनुष पर डोरी चढ़ानेवाले वीर से सीता का विवाह करने का निर्णय किया।

विश्वामित्र राम और लक्ष्मण के साथ जनक के दरबार में गये। राजा जनक ने विश्वामित्र और राजकुमारों का स्वागत किया। विश्वामित्र मुनि ने इन दोनों राजकुमारों का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि ये राजकुमार आपका धनुष देखने आये हैं।

दूसरे दिन बहुत बड़ी सभा हुई। कई लोग मिलकर धनुष-ले आये। लेकिन रामचन्द्र ने धनुष को आसानी से उठाकर डोरी खींची तो धनुष के दो टुकड़े हो गये। जनक बहुत खुश हुए और सीता का विवाह धूमधाम से राम के साथ कराया। जनक के भाई के तीन पुत्रियाँ थीं। उनमें भरत का विवाह मांडवी से, लक्ष्मण का विवाह ऊर्मिला से और शत्रुघ्न का विवाह श्रुतकीर्ति से हुआ।

2. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(1) महाराज जनक सीता का विवाह किससे करना चाहते थे ?

महाराज जनक के पास एक धनुष था। वे उसपर डोरी चढ़ानेवाले वीर के साथ सीता का विवाह कराना चाहते थे।

(2) भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के विवाह किन-किनके साथ हुए?

भरत का विवाह मांडवी से, लक्ष्मण का विवाह ऊर्मिला से और शत्रुघ्न का विवाह श्रुतकीर्ति से हुआ।

4. राजतिलक की तैयारी

महाराज दशरथ बूढ़े हो गये थे। शरीर भी उनका दुर्बल हो गया था। रात को नींद में बुरे-बुरे सपने आते थे। उन्होंने सोचा, "शायद अब मैं बहुत दिन जीवित नहीं रहूँगा। इसलिए अब राज्यभार राम को सौंप देना चाहिए।" यह सोचकर उन्होंने एक दिन अपने मंत्रियों और सभासदों को दरबार में बुलाया। सब लोग आकर अपने-अपने आसन पर बैठ गये। तब दशरथ बोले–

"मंत्रियो और सभासदो! मैं अब बहुत बूढ़ा हो गया हूँ। शरीर भी बहुत दुर्बल और शिथिल हो गया है। रात में बुरे-बुरे सपने आते हैं। इसलिए मैं अब राज्यभार से छुट्टी पाना चाहता हूँ और भगवान का भजन करना चाहता हूँ।

मेरे पुत्र राम मेरी अपेक्षा सभी बातों में श्रेष्ठ हैं। वे बल और पराक्रम में इन्द्र के समान हैं। गुरुजनों के प्रति उनकी बड़ी भक्ति है। वे शत्रुओं पर विजय पानेवाले वीर हैं और प्रजा के भी प्यारे हैं। इसलिए मैं चाहता हूँ कि सारा राज्यभार उनको सौंपकर मैं भगवान का भजन करूँ। मैं जानना चाहता हूँ, आप लोगों का क्या सुझाव है, कहिये!"

महाराज की बात सुनकर सब लोग आनन्द से भर गये। "महाराज की जय!" की आवाज़ से सारी सभा गूँज उठी। फिर सभासदों ने आपस में विचार करके कहा– "महाराज, आपका प्रस्ताव अति उत्तम है। हम सब लोगों को पसन्द है। श्री रामचंद्र बड़े बुद्धिमान हैं। सदा सबसे मीठे वचन बोलते हैं। उनके मन में दीन-दुखियों के प्रति बड़ी दया

है। वे साधु और सत्यवादी हैं; बड़े वीर, साहसी और बलवान हैं। वे सारी प्रजा को समान रूप से देखते हैं। वे धर्म और अर्थ के नियमों को अच्छी तरह जानते हैं और उनका पालन करते हैं। हमारे सौभाग्य से वे प्रजा की रक्षा करने में सब तरह से समर्थ हो गये हैं। इसलिए हे महाराज, हम सब लोग उनको युवराज-पद पर देखना चाहते हैं। अतिशीघ्र उनको युवराज-पद देकर आप विश्राम कीजिये। यही हम सब सभासदों की राय है।"

सभासदों की बात सुनकर महाराज ने अपने पुरोहित वशिष्ठ मुनि से कहा– "हे मुनिवर, कल शुभ मुहूर्त है। आप कल ही राम के राजतिलक की तैयारी कीजिए। अभिषेक के लिए सब सामान इकट्ठा कीजिए। सब राजाओं और सामंतों को न्योता भेज दीजिए। मुझे दुख है कि मेरे दो पुत्र भरत और शत्रुघ्न अपने मामा के यहाँ हैं। मिथिला के महाराज जनक भी यहाँ से बहुत दूर हैं। पर कोई चिन्ता नहीं। वे यह शुभ समाचार बाद में जान लेंगे। इसलिए आप बिना विलंब के राजतिलक का सब प्रबंध कर दीजिए।"

वशिष्ठ मुनि ने कहा– "बहुत ठीक है। मैं आज ही सब इन्तज़ाम कर देता हूँ। कल सब सभासदों और प्रजा के सामने राम का राजतिलक हो जाएगा।" इसके बाद सभा समाप्त हुई। सब लोग खुशी-खुशी अपने-अपने घर चले गये।

राम के राजतिलक की तैयारी आरंभ हो गयी। सारे नगर में सफ़ाई की गयी। मकानों पर पताकाएँ और बंदनवार लगाये गये। सड़कों पर पानी का छिड़काव होने लगा। महाराज के द्वार पर बाजे बजने लगे। अयोध्या के लोग आनन्द से झूमने लगे। राम सबको प्रिय थे, इसलिए सब लोग उनको राजसिंहासन पर बैठे हुए देखना चाहते थे। सारी अयोध्या में आनन्द की लहरें उठने लगीं।

अभ्यास

1. "राजतिलक की तैयारी" पाठ का सारांश लिखिए :-

महाराज दशरथ बूढ़े हो गये थे। वे अब अपना राज्यभार राम को सौंप देना चाहते थे। इसके संबंध में महाराज दशरथ ने सभासदों से अपना विचार प्रकट किया। सभासदों ने आनंद से कहा– "आपका विचार उत्तम है। श्री रामचन्द्र बड़े बुद्धिमान हैं। वे साधु और सत्यवादी हैं। उनको युवराज–पद देकर आप विश्राम कीजिये।"

सभासदों की बात सुनकर महाराज दशरथ ने अपने पुरोहित वशिष्ठ से कहा– "कल शुभ मुहूर्त है। कल ही राजतिलक की तैयारी कीजिये।" वशिष्ठ मुनि राजा की आज्ञा पाकर राम के राजतिलक की तैयारी में लग गये।

राजतिलक की तैयारी की बात सुनकर सब लोग खुश हुए। सारे नगर में सफ़ाई की गयी। सारी अयोध्या में आनंद की लहरें उठने लगीं।

2. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(1) महाराज दशरथ ने राज्यभार राम को क्यों सौंपना चाहा ?

महाराज दशरथ बूढ़े हो गये थे। इसलिए उन्होंने राज्यभार राम को सौंपना चाहा।

(2) महाराज दशरथ ने पुरोहित वशिष्ट से क्या कहा?

महाराज दशरथ ने पुरोहित वशिष्ट से कहा– "कल शुभ मुहूर्त है। कल ही राज–तिलक की तैयारी कीजिये।"

5. मंथरा का षड्यंत्र

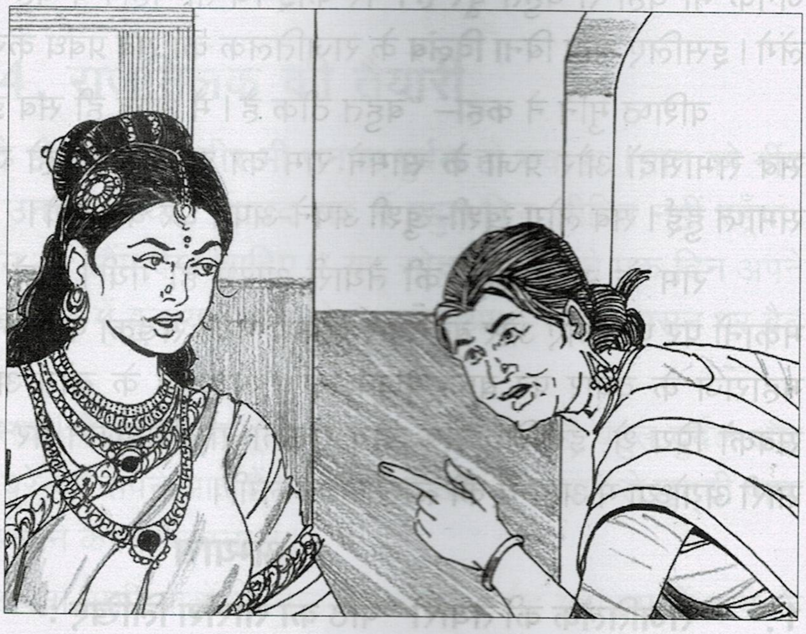

कैकेयी महाराज दशरथ की सबसे छोटी रानी थी। इसलिए वह दशरथ को बहुत प्यारी थी। उसके एक दासी थी। उसका नाम मंथरा था। वह कैकेयी के मायके से उसके साथ आयी थी। रानी उस दासी को बहुत चाहती थी।

जिस दिन राम का राजतिलक होनेवाला था, उसके पहले दिन मंथरा कुछ काम से बाज़ार गयी थी। उसने देखा, बाज़ार में बड़ी तैयारी हो रही है। लोग दूकानें सजा रहे हैं। मकानों पर झंडे उड़ रहे हैं। सड़कों पर पानी का छिड़काव हो रहा है। बाजे बज रहे हैं। लोग आनन्द से इधर-इधर घूम रहे हैं। फिर उसने रानी कौशल्या की एक दासी को देखा। वह एकदम खुशी-खुशी बाज़ार में टहल रही थी। यह सब देखकर मंथरा आश्चर्य में पड़ गयी। उसने एक आदमी से पूछा– "भाई, यह सब तैयारी किसलिए हो रही है? किस धनवान के घर में बालक पैदा हुआ है?"

उस आदमी ने कहा– "अरी, तू कहाँ रहती है? क्या तुझे नहीं मालूम कि रामचंद्र को युवराज-पद मिल रहा है? कल उनका अभिषेक होगा। उसके लिए यह सब तैयारियाँ हो रही हैं।"

मंथरा कूबड़ थी और उसका स्वभाव भी बड़ा कुटिल था। राम के राजतिलक का समाचार सुनकर वह ईर्ष्या से जल उठी। वह सोचने लगी– "राम राजा बनेंगे। उनकी माँ कौशल्या राजमाता बनेगी। फिर कैकेयी को कौन पूछेगा? उसके पुत्र भरत का क्या होगा?" यही सब सोचती हुई वह दौड़कर कैकेयी के पास गयी और बोली- "रानी, रानी! तुम क्यों सो रही हो? तुम्हारे ऊपर तो विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा है। राजा तुमपर झूठा प्रेम दिखाते हैं, वास्तव में तुम्हारा अहित करते हैं। तुम निरी नासमझ हो, नादान हो। उनके मन की बात जानती ही नहीं।"

मंथरा की बात सुनकर कैकेयी आश्चर्य में पड़ गयी। उसने कहा– "अरी, साफ़-साफ़ क्यों नहीं कहती? अचानक कौन-सी अमंगल की बात हो गयी है?"

मंथरा बातचीत करने में बहुत चतुर थी। उसने रोनी सूरत बनाकर कहा– "तुम्हारे स्वामी चिकनी-चुपड़ी बातें करते हैं, पर बड़े निर्दयी हैं। उन्होंने तुम्हारे पुत्र भरत को उनके मामा के घर भेज दिया, अब अयोध्या का राज्य राम को देनेवाले हैं। कल ही राम का राजतिलक होनेवाला है।"

राम का स्वभाव बहुत कोमल और मधुर था। वे सब माताओं को समान आदर देते थे। कैकेयी भी उनसे प्रेम करती थी। इसलिए राम के राजतिलक का समाचार सुनकर कैकेयी का मुख आनन्द से खिल उठा। उसने कहा– ''अरी, यह तो बहुत सुन्दर समाचार है! राम सब भाइयों से बड़ा है। वह शील-स्वभाव में भी सबसे उत्तम है। मैं राम और भरत में कोई भेद नहीं मानती। मुझे बड़ी खुशी है कि राम का राजतिलक होने जा रहा है। यह शुभ समाचार सुनाने के लिए तुझे इनाम देना चाहती हूँ।"

कैकेयी की बात सुनकर मंथरा जल उठी और बोली– "रानी तुमको अपने भले-बुरे का ज्ञान नहीं है। कौशल्या राजमाता बनेंगी और तुम उनकी दासी बनोगी। राम राजा बनेगा और तुम्हारा लाड़ला भरत उसका गुलाम बनेगा। तुम्हारी सारी पद-प्रतिष्ठा धूल में मिल जाएगी। क्या तुम यह बात नहीं जानती कि सौत का बेटा शत्रु होता है? यदि राम को राज्य मिल जाएगा, तो वह भरत को देश से बाहर निकाल देगा। मैं तो तुम्हारी भलाई के लिए ही ये बातें कहती हूँ। राज्य पर राम और भरत दोनों का समान अधिकार है। इसलिए कोई ऐसा उपाय करो जिससे भरत को अयोध्या का राज्य मिले और राम को वनवास हो जाए।"

कैकेयी पर मंथरा का जादू चल गया। वह पूरी तरह उसकी बातों में आ गयी और बोली- "तू ठीक ही कहती है। मैं शीघ्र ही राम को वन भेज दूँगी और भरत को युवराज-पद दिलाऊँगी। तू बड़ी बुद्धिमान है। कोई उपाय बता, जिससे हमारा उद्देश्य सफल हो।"

मंथरा बोली– "रानी, क्या तुम्हें याद नहीं है? असुरों के साथ युद्ध में तुमने महाराज का रथ चलाया था। इससे प्रसन्न होकर महाराज ने दो वर दिये थे। उस समय तुमने अपने पति से कहा था कि जब मेरी इच्छा होगी, तब मैं इन वरों को माँग लूँगी। अभी आप इन्हें धरोहर के रूप में रखिये। महाराज ने तुम्हारी बात मानकर कह दिया था – ठीक है।"

अब तुम उन दोनों वरों को अपने स्वामी से माँगो। एक वर से भरत का राजतिलक और दूसरे से राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास माँग लो। बस, तुम्हारा काम बन जाएगा। राम चौदह वर्षों के लिए वन में चला जाएगा। उतने समय में भरत प्रजा के हृदय को अपने वश में कर लेगा। राज्य पर अपना अधिकार अच्छी तरह जमा लेगा। वन में बहुत-से जंगली पशु और राक्षस रहते हैं। या तो राम लौटकर नहीं आएगा, या लौटकर आने पर भी भरत का कुछ बिगाड़ नहीं सकेगा।

शाम के समय कैकेयी ने एक गंदी साड़ी पहन ली। अपने बाल खोल दिये। अपने आभूषण उतारकर इधर-उधर फेंक दिये और अपने कमरे में जाकर ज़मीन पर लेट गयी। वह गरम-गरम साँसें लेने लगी और कोप की मूर्ति बन गयी।

अभ्यास

1. "मंथरा का षड्यंत्र" पाठ का सारांश लिखिए :-

कैकेयी दशरथ की छोटी रानी थी। दशरथ अपनी छोटी रानी को बहुत प्यार करते थे। मंथरा कैकेयी की प्यारी दासी थी। मंथरा कूबड़ और कुटिल स्वभाव की थी। राजतिलक की तैयारी की बात सुनकर मंथरा ईर्ष्या करने लगी। वह सीधे कैकेयी के पास गयी और बोली– "रानी, राम राजा बनेगा तो उसकी माता कौशल्या राजमाता बनेगी और तुम उसकी दासी। तुम्हारा लाड़ला पुत्र भरत, राम का गुलाम बनेगा। क्या यही तुम चाहती हो?"

कैकेयी मंथरा की बात सुनकर पहले गुस्से में आयी। लेकिन उसका जादू कैकेयी पर चल गया। उसने अपने पुत्र को युवराज पद दिलाने का उपाय पूछा। मंथरा ने कहा– "एक बार राजा दशरथ ने तुमको दो वर देने का वादा किया था। अब तुम महाराजा से दोनों वर माँगो। एक वर से राम के लिए चौदह साल का वनवास, दूसरे से भरत का राजतिलक माँगो।"

कैकेयी ने गंदी साड़ी पहन ली। सारे आभूषण उतार दिये। गुस्से में महाराज दशरथ के आने की प्रतीक्षा करने लगी।

2. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(1) मंथरा कौन थी? वह कैसी थी?

मंथरा कैकेयी की प्यारी दासी थी। वह कूबड़ और कुटिल स्वभाव की थी।

(2) मंथरा ने कैकेयी से क्या वर माँगने के लिए कहा ?

मंथरा ने कैकेयी से कहा– "एक वर से राम के लिए चौदह साल का वनवास और दूसरे वर से भरत का राजतिलक माँगो।"

6. राम का वनवास

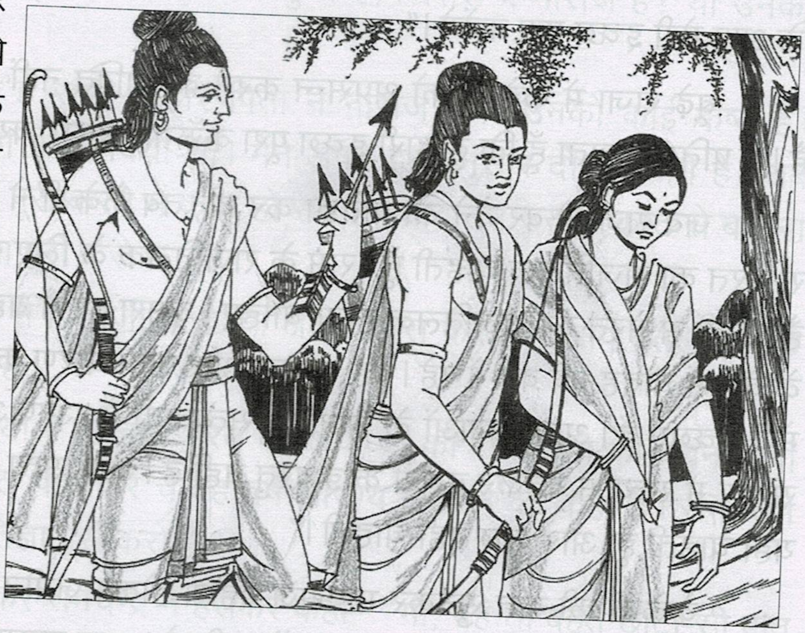

दिन बीतने पर राजा रनिवास में गये। वे रानियों को रामचंद्र के राजतिलक का शुभ समाचार सुनाना चाहते थे। राजा कैकेयी को बहुत चाहते थे। इसलिए वे सबसे पहले कैकेयी के महल में गये। वहाँ का दृश्य देखकर राजा एकदम डर गये। देखा, कैकेयी गंदे कपड़े पहनकर ज़मीन पर पड़ी है। उसके सब आभूषण इधर-उधर बिखरे हैं। बाल खुले हैं। आँखें लाल हैं और मुख से क्रोध प्रकट हो रहा है।

राजा धीरे-धीरे उसके पास गये। फिर प्रेम दिखाते हुए पूछा– "देवि! तुम आज इस प्रकार धूल में क्यों पड़ी हो? किसने तुम्हारा अहित किया है? क्या तुम मुझपर नाराज हो? उठो! ठीक-ठीक बताओ, किसने तुमको कष्ट दिया है? मैं अभी उसको दण्ड दूँगा। दुख मत करो। मैं तो तुम्हारे लिए ही जीता हूँ।"

रानी ने कहा– “महाराज, न तो मुझे कोई कष्ट है, न किसीने मेरा अहित किया है। मेरी कुछ इच्छाएँ हैं। मैं चाहती हूँ कि आप उन्हें पूरा करें”

राजा ने मीठे शब्दों में पूछा– “बोलो, तुम्हारी क्या इच्छा है। मैं हमेशा तुम्हारी इच्छा पूरा करने को तैयार हूँ। कहो, तुम क्या चाहती हो?”

रानी बोली– “आपको याद है? आपने मुझे दो वर देने की प्रतिज्ञा की थी। वे दोनों वर मैंने धरोहर के रूप में आपके पास रख दिये थे।”

राजा ने खुश होकर कहा– “हाँ-हाँ, खूब याद है।”

कैकेयी बोली– “आज आपसे दोनों वर माँगना चाहती हूँ। पहले आप प्रतिज्ञा करें कि आप मेरी इच्छा पूरा करेंगे।”

बूढ़े राजा में कैकेयी को अप्रसन्न करने की शक्ति नहीं थी। उन्होंने कहा– “ठीक है। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि तुम्हारी इच्छा पूरा करूँगा। बोलो, क्या वर माँगती हो?”

जब राजा ने वर देने की प्रतिज्ञा कर दी, तब कैकेयी ने कहा– “स्वामी, मैं एक वर से भरत का राजतिलक चाहती हूँ। राम के राजतिलक के लिए जो वस्तुएँ इकट्ठी की गयी हैं, उन्हीं से भरत का राजतिलक होना चाहिए। दूसरा वर मैं यह चाहती हूँ कि राम तपस्वी के वेश में चौदह वर्ष वन में रहे। वह वल्कल और जटा धारण कर वन में निवास करे। ये ही मेरी इच्छाएँ हैं। आप राजाओं के राजा हैं, सत्यवादी हैं। आप अपनी प्रतिज्ञा पूरी कीजिए। संसार में सत्य से बढ़कर दूसरी कोई वस्तु नहीं है। आप सत्य का पालन कीजिए। बस, मैं यही चाहती हूँ, और कुछ नहीं चाहती।”

कैकेयी की बात सुनकर महाराज बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़े। उनको लगा, मानों किसीने उनके कलेजे में कटार भोंक दी हो। कुछ समय के बाद उनकी मूर्छा छूटी। तब वे कैकेयी को डाँटने और समझाने लगे– “अरी कैकेयी! तुझे क्या हो गया है? तू क्यों इतनी कठोर और निर्दय हो गयी है? राम ने तेरा क्या बिगाड़ा है? तू तो कहती थी कि राम मेरा बड़ा बेटा है। वह तेरी सेवा भी बहुत करता है। तू उसको वन में क्यों भेजना चाहती है? यदि तू चाहती है कि भरत युवराज बने, तो मैं तेरी बात मान लेता हूँ। मैं अभी भरत को बुलाकर उसे युवराज-पद देता हूँ। पर तू राम को वन में मत भेज। मैं राम के बिना एक दिन भी जीवित नहीं रह सकता। मैं हाथ जोड़ता हूँ, तेरे पैरों पड़ता हूँ। तू ऐसा वर मत माँग।”

राजा ने बहुत अनुनय-विनय किया। पर कैकेयी का हृदय नहीं पिघला। उसने भीषण रूप धारण कर लिया। कठोर वाणी बोलने लगी। उसने कहा– "अब धर्म हो या अधर्म। झूठ हो या सच। आपने जो प्रतिज्ञा की है, उसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता।"

कैकेयी की कठोर बात सुनकर राजा फिर मूर्छित हो गये। वे उसी अवस्था में रात-भर पड़े रहे।

दूसरे दिन सबेरे राम को समाचार मिला। उन्होंने सुना कि महाराज रानी कैकेयी के महल में मूर्छित पड़े हैं। वे दौड़कर कैकेयी के महल में गये। वहाँ राजा की दशा देखकर राम को अपार दुख हुआ। उन्होंने कैकेयी से पूछा– "माँ, महाराज इस प्रकार क्यों पड़े हैं? उनको क्या हुआ है? क्या मुझसे कोई अपराध हुआ है, जिससे वे नाराज हैं? या उनको कोई कष्ट है?"

कैकेयी ने कहा– "हे राम, तुम्हारे पिता न नाराज हैं न उनको कोई कष्ट है। उन्होंने मुझे दो वर देने का वचन दिया था। मैंने अपने इच्छानुसार दो वर माँगे हैं। अब महाराज को अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने में कष्ट हो रहा है। यदि तुम उनको कष्ट से बचाना चाहते हो, तो उनकी प्रतिज्ञा पूरी करो।"

राम ने पूछा– "माँ, मैं पिताजी के वचन अवश्य पूरा करूँगा। आप बतलाइए कि पिताजी ने क्या प्रतिज्ञा की है।"

कैकेयी ने उत्तर दिया– "उन्होंने भरत को अयोध्या का राज्य देने का वचन दिया है। तुमको जटा और वल्कल पहनकर चौदह वर्ष आरण्य में रहने को कहा है। राम, तुम सत्यवादी हो, तो उनकी प्रतिज्ञा पूरी करो।"

कैकेयी की बात सुनकर रामचन्द्र ने हँसकर कहा– "माँ, यह तो बहुत छोटी-सी बात है। इसके लिए पिताजी को इतना कष्ट क्यों दिया? भाई भरत को अयोध्या का राज्य मिले, इसमें मुझे कोई दुख नहीं है और मैं आज ही जटा और वल्कल पहनकर वन चला जाऊँगा। आप प्रसन्न होइये।"

रामचन्द्र माता कौशल्या के महल में गये। उन्होंने सब समाचार अपनी माता को सुनाया। राम के वनवास का समाचार सुनकर कौशल्याजी व्याकुल हो उठीं और रो पड़ीं।

थोड़े ही समय में सारे राजमहल में बात फैल गयी। लक्ष्मण राम से बहुत प्रेम करते थे। वे सदा उनके साथ रहते थे। जब उन्होंने राम के वनवास का समाचार सुना, तो क्रोध

से पागल हो गये। वे कैकेयी को मारने दौड़े। पर रामचन्द्र ने उन्हें रोक लिया। तब उन्होंने राम से कहा– "भैया, मैं भी आपके साथ वन में चलूँगा।"

जब सीताजी को यह समाचार मिला, तो वे रामचन्द्र के पास आयीं और बोलीं– "प्राणनाथ, आप वन में जाएँगे और मैं अयोध्या में रहूँगी, यह कैसे हो सकता है? मैं भी आपके साथ चलूँगी।"

रामचन्द्र ने वन के कष्ट सुनाये। उन्होंने सीताजी को रोकना चाहा। पर सीताजी ने कहा– "हे नाथ, आपने वन के कष्टों का वर्णन किया। पर मेरे लिए आपके वियोग से बढ़कर दूसरा कष्ट क्या होगा? मैं सब कष्ट सह सकती हूँ, पर आपका वियोग नहीं सह सकती। मैं आपके साथ रहूँगी। आपकी सेवा करूँगी और सब दुख भूल जाऊँगी। यदि आप मुझे अपने साथ नहीं ले चलेंगे, तो मैं अपने प्राण त्याग दूँगी।" सीताजी की बात सुनकर रामचन्द्र ने कहा– "अच्छा, नहीं मानोगी तो चलो मेरे साथ।"

राम, लक्ष्मण और सीता तीनों वन जाने के लिए तैयार हो गये। उन्होंने अपने बहुमूल्य कपड़े त्याग दिये। वल्कल पहने। सिर पर जटा बनायी। फिर रथ पर बैठकर वन की ओर चले। अयोध्यावासी रोते-पीटते उनके पीछे-पीछे चले। रामचन्द्र ने उन्हें समझा-बुझाकर वापस भेजा। रथ वन की ओर आगे बढ़ा। अयोध्यावासियों का हृदय-सम्राट उन्हें छोड़कर चला गया। यह बड़ा करुणामय दृश्य था।

आज जिसका राजतिलक होने-वाला था, वही सब कुछ छोड़कर वन जा रहा था। सारी अयोध्या सूनी हो गयी थी, जैसे शरीर से प्राण निकल गये हों। रातों रात भयंकर परिवर्तन हो गया। ऐसा करुण दृश्य संसार के इतिहास में मिलना कठिन है।

अभ्यास

1. "राम का वनवास" पाठ का सारांश लिखिए :-

राजा दशरथ शाम को कैकेयी के महल में गये। कैकेयी ने गंदी साड़ी पहनी थी। उसके चेहरे पर क्रोध प्रकट हो रहा था।

राजा दशरथ ने कैकेयी से दुख का कारण पूछा। कैकेयी ने कहा– "एक बार आपने मुझे दो वर देने का वादा किया था। आज आपसे दोनों वर माँगनेवाली हूँ। एक वर से राम के लिए चौदह साल का वनवास चाहती हूँ और दूसरे वर से भरत का राजतिलक।"

कैकेयी की बात सुनकर महाराज दशरथ बेहोश हो गये। होश में आने के बाद उन्होंने कहा– "भरत को युवराज बना दूँगा। लेकिन राम को वन मत भेजो। मैं उसके बिना जीवित नहीं रह

सकता।" पर कैकेयी ने दशरथ की एक बात भी न सुनी। कैकेयी की निर्दयता देखकर महाराज दशरथ फिर से बेहोश हो गये। दूसरे दिन राम को यह समाचार मिला। उन्होंने पिताजी की आज्ञा का पालन करने का निश्चय किया। राम सब माताओं से मिले और उनका आशीर्वाद लिया। राम के साथ उनकी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण भी वल्कल पहनकर वन की ओर निकल पड़े। यह दृश्य बड़ा ही दुखदायक था।

2. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(1) कैकेयी का दूसरा वर क्या था?

कैकेयी का दूसरा वर था कि राम तपस्वी के वेश में चौदह वर्ष वन में रहें।

(2) महाराज दशरथ क्यों बेहोश हो गये ?

कैकेयी के निर्दयतापूर्ण बात से महाराज दशरथ बेहोश हो गये।

7. भरत का शोक

राम के वियोग में महाराज दशरथ ने अपने प्राण छोड़ दिये। दशरथजी के मरने से अयोध्या अनाथ हो गयी। राम और लक्ष्मण वन चले गये थे। भरत और शत्रुघ्न अपने मामा के घर में थे। सिंहासन सूना हो गया था। प्रजा की देखरेख करनेवाला कोई नहीं था।

राजा के गुरु वशिष्ठजी ने भरत और शत्रुघ्न को बुलाने के लिए दूत भेजे। दूतों से कहा– "तुम लोग तेज़ चलनेवाले घोड़ों पर सवार होकर तुरंत भरत के पास जाओ और उन्हें जल्दी अयोध्या बुला लाओ। पर यहाँ का कोई समाचार उनसे मत कहना। नहीं तो वे व्याकुल हो जाएँगे।"

दूत तुरन्त रवाना हो गये। वे पहाड़ों, जंगलों और नदियों को पार कर केकय राज्य की राजधानी में पहुँच गये। वहाँ जाकर द्वारपालों से कहा– "हम लोग अयोध्या से आये हैं। भरत से मिलना चाहते हैं। जल्दी उनसे भेंट करा दो।"

भरत महल से बाहर आये। उन्होंने दूतों को देखकर पूछा– "दूत, कहो, अयोध्या का क्या समाचार है? हमारे पूज्य पिताजी कैसे हैं? माताएँ सब प्रसन्न हैं? हमारे प्यारे भाई राम और लक्ष्मण आनन्द से हैं न?"

दूतों ने भरत की बातों का कोई उत्तर नहीं दिया। केवल इतना ही कहा– "अयोध्या में आपकी आवश्यकता है। आप तुरन्त हमारे साथ चलें। विलंब न करें।" दूतों की बात सुनकर भरत और शत्रुघ्न अपने मामा की आज्ञा लेकर रथ पर सवार हुए। रथ सरपट

अयोध्या की ओर चल पड़ा। रात-दिन चलकर वे बहुत शीघ्र अयोध्या पहुँच गये। जब भरतजी का रथ अयोध्या पहुँचा तो उन्होंने देखा – सारी अयोध्या उदास पड़ी हुई है। बाज़ार बंद हैं, दूकानें बंद हैं। नाच-रंग सब बंद हैं। लोग अपना सब काम-धाम छोड़कर बैठे हैं। भरतजी को देखकर लोग मुँह फिरा लेते हैं। कोई उनसे बात नहीं करता। कुशल-मंगल तक नहीं पूछता। यह सब देखकर भरत के मन में भय हो गया और तरह-तरह की आशंकाएँ उठने लगीं। वे गहरी चिन्ता में डूब गये।

वे सीधे अपनी माता के महल में गये। कैकेयी ने बड़े प्रेम से उनका स्वागत किया। उन्हें छाती से लगाकर उनका मुँह चूमा। फिर कैकेयी ने अपने माता-पिता तथा भाई का समाचार पूछा। वह अपने मायके की हालचाल जानना चाहती थी।

भरत ने अपने माता को प्रणाम करके पूछा– "माँ, पिताजी कहाँ हैं? भाई राम कहाँ हैं? लक्ष्मण कहाँ हैं? अयोध्या क्यों इस प्रकार सूनी लग रही है? सब लोग क्यों उदास दिखते हैं? किसीके मुँह पर प्रसन्नता का कोई चिह्न नहीं है! क्या बात है?"

कैकेयी ने कहा– "बेटा, महाराज ने तुम्हें अयोध्या का राज्य दिया है। राम को चौदह वर्ष के लिए वन में भेज दिया है। तुम निश्चिन्त होकर राज्य करो।"

राम के वन जाने की बात सुनकर भरत मूर्छित होकर गिर पड़े। थोड़ी देर में उनकी मूर्छा दूर हुई, तो उन्होंने पूछा– "माँ, बड़े भैया ने क्या अपराध किया था, जिसके लिए महाराज ने उनको वन भेज दिया? तुम मुझे सब हाल कहो।"

कठोर हृदयवाली कैकेयी ने कहना शुरू किया– "बेटा, मैंने दो वर महाराज के यहाँ धरोहर रखे थे। मैंने उनसे दोनों वर माँग लिये। एक वर से तुम्हारे लिए अयोध्या का राज्य माँगा तथा दूसरे वर से राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास। महाराज राम को वन में नहीं भेजना चाहते थे। इसलिए राम के वियोग में उन्होंने अपना शरीर छोड़ दिया। मैंने तुम्हारे लिए अयोध्या का राज्य प्राप्त किया है। तुम निर्भय होकर राज्य करो। दूसरी कोई चिन्ता मत करो।"

पिता की मृत्यु और राम के वनवास का समाचार सुनकर भरत व्याकुल हो उठे। फूट-फूटकर रोने और ज़मीन पर लोटने लगे। फिर उन्होंने अपनी माँ को डाँटना और फटकारना शुरू किया।

"माँ, तू बड़ी लोभिन है। तूने राज्य के लोभ में पड़कर पिताजी के प्राण ले लिये। मेरे प्यारे भाई राम को वन में भेज दिया। मेरे भाई साधु और महात्मा हैं। उनको तूने लोभ में पड़कर नाहक कष्ट दिया। मैं तेरी इच्छा कदापि पूरी नहीं करूँगा। हमारे वंश की यह परिपाटी है कि राजा के बड़े पुत्र को ही गद्दी पर बैठना है। मैं वन में जाऊँगा और भैया को वापस बुलाकर अयोध्या के सिंहासन पर बिठाऊँगा।"

भरत रामचंद्र की माता कौशल्या के महल में गये। उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। वे बोले– "माताजी, मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि राम को वन भेजने में मेरा कोई हाथ नहीं है। मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि मैंने अपनी माँ से राज्य माँगने और बड़े भैया को वन भेजने के लिए नहीं कहा था। मुझे कुछ नहीं मालूम था कि यहाँ क्या हो रहा है। मैं फिर शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं राज्य नहीं चाहता। यह राज्य बड़े भैया का है। मैं वन में जाऊँगा और भैया को ले आऊँगा।"

भरत बहुत देर तक इसी प्रकार शपथ खा-खाकर बोलते रहे। उनकी बात सुनकर कौशल्या के मन से संदेह दूर हो गया। उन्होंने उठकर भरत को गले से लगा लिया।

तेरहवें दिन भरत ने पिता का श्राद्ध किया। ब्राह्मणों को भोजन कराया और दान-दक्षिणा दी।

चौदहवें दिन सब मंत्री और सभासद इकट्ठे हुए। उन्होंने आकर भरत से कहा– "महाराज दशरथ स्वर्ग चले गये। राम, लक्ष्मण और सीता वन में चले गये। महाराज ने राज्य आपको सौंपा है। अब आप ही हमारे राजा हैं। आप इस राज्य को संभालें और प्रजा का पालन करें।"

मंत्रियों की बात सुनकर भरत ने कहा– "सज्जनो! आप लोग बुद्धिमान हैं। बुद्धिमान लोगों को ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए। हमारे कुल में सबसे बड़ा लड़का ही राज्य का अधिकारी होता है और गद्दी पर बैठता है। हमें उस नियम का पालन करना चाहिए। आप लोग सेना को तैयार कीजिए। अभिषेक के सब सामान अपने साथ ले चलिए। हम वन जाएँगे। वहीं पर रामचंद्र का अभिषेक कराएँगे। फिर उनको बुला लाएँगे और अयोध्या के सिंहासन पर बिठाएँगे। मुझे यही उचित मालूम होता है।"

भरत की बात सुनकर सब लोग उनकी प्रशंसा करने लगे। सबने एक स्वर में कहा– "धन्य! धन्य!" सब तैयारी हो जाने पर भरत और शत्रुघ्न वन की ओर चले। साथ में माताएँ, गुरु वशिष्ठ, मंत्री लोग, सभासद, सेना और हज़ारों अयोध्यावासी भी चले।

अभ्यास

1. "भरत का शोक" पाठ का सारांश लिखिए :-

राम के वियोग में महाराज दशरथ ने अपने प्राण छोड़ दिये। अयोध्या के लोग बहुत दुखी थे। इस समय भरत और शत्रुघ्न अपने मामा के घर में थे। गुरु वशिष्ठ ने भरत और शत्रुघ्न को बुला लाने के लिए दूत भेजे। दूत भरत के महल में पहुँचे। दूतों ने भरत से कहा– "अयोध्या में आपकी आवश्यकता है। तुरन्त निकलें।" भरत और शत्रुघ्न अपने मामा से आज्ञा लेकर अयोध्या की ओर चले। अयोध्या पहुँचते ही वे अपनी माता के महल में गये। भरत को कैकेयी ने सारी बातें सुनायीं। माता की बात सुनकर भरत को गुस्सा आया और अपनी माँ को खूब डाँटा। फिर माता कौशल्या से मिले।

चौदहवें दिन सभासदों ने भरत से राज्य संभालने के लिए कहा। लेकिन भरत ने सिंहासन पर बैठने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा कि हम सब राम का राज्याभिषेक वन में ही करेंगे। यह बात सुनकर सब खुश हुए। राजतिलक की तैयारी के साथ भरत, शत्रुघ्न, गुरु वशिष्ठ, माताएँ, हज़ारों अयोध्यावासी वन की ओर निकल पड़े।

2. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(1) दशरथ ने क्यों प्राण छोड़ दिये?

दशरथ ने राम के वियोग में प्राण छोड़ दिये।

(2) भरत ने सभासदों से क्या कहा?

भरत ने सभासदों से कहा कि हम सब राम का राज्याभिषेक वन में ही कराएँगे।

8. गुह की भक्ति

राम, लक्ष्मण और सीता चित्रकूट में पर्णकुटी बनाकर रहते थे। यह स्थान गंगा नदी के दक्षिण तट पर है और बड़ा तीर्थ है। गंगा के घाट का रखवाला गुह निषादों का नेता था। वह रामचंद्र का मित्र और भक्त था।

गुह ने देखा-दूर पर भरत की सेना धूल उड़ाती हुई आ रही है। उसमें हज़ारों रथ, घोड़े, हाथी और पैदल सिपाही हैं। उसने सोचा, शायद भरत सेना लेकर राम-लक्ष्मण को मारने के लिए आ रहे हैं। यह सोचकर वह नाराज़ हुआ। उसने अपनी तुरही बजायी। तुरही की आवाज़ सुनते ही हज़ारों निषाद-वीर उसके सामने आकर खड़े हो गये। उनको देखकर लगता था, बहुत-से काले पहाड़ एक जगह आकर खड़े हो गये हों।

गुह की कमर में तलवार लटक रही थी। वह क्रोध से अपने होंठ चबा रहा था। मुँह से कठोर शब्द आ रहे थे। उसकी लाल-लाल आँखों से आग-सी निकल रही थी। उसकी बलिष्ठ भुजाएँ फड़क रही थीं।

गुह ने निषादों को संबोधित करके कहा– "मेरे प्यारे निषाद-वीरो! भरत ने हमारे मित्र रामजी से अयोध्या का राज्य छीन लिया है। अब वह वन का राज्य भी उनसे छीनना चाहता है। इसीलिए वह बड़ी सेना लेकर आ रहा है। तुम सब लोग युद्ध के लिए तैयार हो जाओ। आज हम अपने मित्र राम की रक्षा में अपने प्राण निछावर करेंगे। हम लोग जब तक जीवित हैं, तब तक भरत की सेना गंगा पार नहीं कर सकेगी। तुम लोग नावों को डुबा दो। घाटों को बंद कर दो और भरत की सेना को काटकर गंगा में बहा दो। मालूम होता है, धरती पर राज्य करनेवाले क्षत्रिय अपने धर्म को भूल गये हैं। वे पाप-कर्म करने लगे हैं, अन्याय करने पर तुले हुए हैं; नहीं, तो मेरे मित्र जो वन में तपस्या कर रहे हैं, फल-मूल खाकर रहते हैं, साधु-संतों के जैसे जीवन बिताते हैं, उनको दुख देने की बात भरत कैसे सोच सकता है? कठोर हृदया कैकेयी ने हमारे उदार मित्र राम को वल्कल पहनाकर वन में भेज दिया। मैं आज उसके पुत्र भरत को उसकी सेना के साथ मारकर गंगा में बहा दूँगा और रामचंद्रजी का जो अपमान हुआ है, उसका बदला लूँगा। हम भरत और उसकी सेना को उसी प्रकार मिटा देंगे, जिस प्रकार गाय अपने सामने की घास को मिटा देती है, हवा बादलों को उड़ा देती है, आग जंगलों को नष्ट कर देती है। हमारे मित्र के विरुद्ध यदि देवताओं की सेना भी आ जाए, तो हम उसको उसी प्रकार काट देंगे, जैसे किसान फसल को काटकर गिरा देता है। आखिर हमारे इस मानव-जीवन का क्या मूल्य है, यदि यह मित्र के काम न आये।"

जब भरत गंगा के निकट पहुँचे, तो उन्होंने देखा, गुह अपनी सेना के साथ गंगा के घाटों को रोककर खड़ा है, मानों लोहे की एक दीवार खड़ी हो। यह देखकर वे आश्चर्य में पड़ गये।

तब उनके मंत्री सुमंत ने आकर कहा– "हे राजकुमार, वहाँ देखिये, नीले पर्वत के समान जो वीर गंगा के किनारे पर खड़ा है, वह इस घाट का स्वामी गुह है। उसके पीछे काले मेघों के समान उसकी सेना खड़ी है। गुह रामचंद्र का मित्र और सहायक है। जब राम वन जा रहे थे, तब गुह ने ही उनको गंगा पार कराया था। गुह के प्रेम को देखकर राम ने उसको गले से लगाया था और 'भाई' कहकर संबोधित किया।"

यह सुनकर भरत गुह के प्रति प्रेम से भर गये। वे उससे मिलने के लिए आगे बढ़े। जब भरत गुह के निकट पहुँचे, तो गुह ने देखा कि भरत का मुँह उदास है; उनकी आँखों से आँसू की धारा बह रही है। वे पैदल चल रहे हैं, वल्कल पहने हुए हैं और राम नाम की रट लगा रहे हैं। तब उसका सारा क्रोध हवा हो गया। उसके हाथ से धनुष-बाण नीचे गिर

गये। उसने भरत के पैरों पर सिर रखकर प्रणाम किया। भरत ने उसे उठाकर गले से लगा लिया।

गुह ने प्रश्न किया– "हे वीरशिरोमणि, तुम्हारे पिता ने तुमको अयोध्या का राज्य दिया है। उन्होंने मेरे स्वामी और सखा राम को वन का राज्य दिया है। अब तुम किस उद्देश्य से यहाँ आये हो? तुम्हारे साथ यह विशाल सेना किसलिए आयी है? मुझसे कहो।"

भरत ने उत्तर दिया– "मेरे पिता ने अनुचित कार्य किया। हमारे कुल की रीति है कि पिता का सबसे बड़ा पुत्र ही राज्य का अधिकारी होता है। मैं वन में रामचंद्र का राज्याभिषेक करूँगा और उन्हें लौटाकर अयोध्या ले जाऊँगा।"

भरत की बात सुनकर गुह आनन्द से भर गया। उसने भरत के गुणों की प्रशंसा की और कहा– "तुम धन्य हो! पिता ने जो राज्य तुमको दिया है, उसको तुमने त्याग दिया है। अब तुम राम को वापस बुलाने के लिए यहाँ आये हो। तुम्हारा भ्रातृप्रेम धन्य है। क्या सहस्त्र राम भी तुम्हारी समता कर सकते हैं? तुम आज अपनी सेना के साथ हमारा आतिथ्य स्वीकार करो। रात भर विश्राम करो। कल सबेरे गंगा पार करना।"

संध्या हो चुकी थी। भरतजी ने वहीं गंगा के तीर पर रात बिताने का निश्चय किया। उन्होंने अपनी सेना को विश्राम करने की आज्ञा दे दी। फिर गुह से पूछा– "भाई, मुझे वह स्थान दिखाओ जहाँ राम, लक्ष्मण और सीता ने रात बितायी थी।" गुह ने वह स्थान दिखा दिया। पथरीली भूमि पर पड़ी हुई फूस की चटाई को देखकर भरत रो पड़े। उन्होंने सोचा-–"हाय! मेरे कारण भाई और भाभी को कितना कष्ट भोगना पड़ रहा है। मैं कितना बड़ा अभागा और पापी हूँ।" उसके बाद भरत और शत्रुघ्न रात-भर उसी स्थान पर चटाई बिछाकर सोये।

सबेरा होने पर भरत ने गुह से कहा– "हम गंगा पार करना चाहते हैं। तुम हमारे लिए नावों का प्रबंध कर दो।" गुह ने तुरन्त अपने आदमियों को नावें लाने की आज्ञा दी। देखते-देखते कई सौ नावें आकर घाट पर लग गयीं। थोड़े ही समय में भरत अपनी सेना सहित गंगा पार हो गये।

गंगा पार करके भरत चित्रकूट की ओर चल पड़े। गुह आगे रास्ता दिखाता हुआ

चल रहा था। उसके पीछे भरत और शत्रुघ्न पैदल चल रहे थे। उनके पीछे रानियाँ तथा गुरुजनों की सवारियाँ थीं। भरत त्याग और तपस्या की मूर्ति बने हुए थे। उन्हें देखकर लोगों की आँखों में आँसू आ जाते थे।

अभ्यास

1. "गुह की भक्ति" पाठ का सारांश लिखिए :-

राम, लक्ष्मण और सीता चित्रकूट में पर्णकुटी बनाकर रहते थे। गंगा के घाट पर निषाद रहते थे। निषादों का नेता गुह था। गुह रामचन्द्र का बड़ा भक्त था।

एक दिन गुह ने देखा कि भरत अपनी सेना और हज़ारों लोगों के साथ आ रहे हैं। गुह ने मन में सोचा कि भरत राम, लक्ष्मण और सीता को मारने के लिए आ रहे हैं। वह भरत से लड़ने तैयार हुआ। लेकिन भरत से मिलकर उसे मालूम हो गया कि भरत राम को मारने नहीं आये हैं।

गुह के पूछने पर भरत ने कहा– "मैं राम का राज्याभिषेक करके उनको लौटाकर अयोध्या ले जाने आया हूँ।" भरत की बात सुनकर सब ने कहा, "भरत, तुम धन्य हो।" दूसरे दिन गुह ने सब को गंगा पार कराया। सब लोग चित्रकूट की ओर चल पड़े।

2. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(1) राम, लक्ष्मण और सीता कहाँ रहे?
राम, लक्ष्मण और सीता चित्रकूट में पर्णकुटी बनाकर रहे।

(2) भरत ने गुह से क्या कहा ?
भरत ने गुह से कहा कि मैं राम को अयोध्या ले जाने आया हूँ।

9. भरत-मिलाप

भरत की सेना चित्रकूट के निकट पहुँच गयी। सेना के कोलाहल की आवाज़ लक्ष्मण के कानों में पड़ी और दूर पर धूल उड़ती हुई भी दिखाई दी। लक्ष्मण ने समीप के एक ऊँचे वृक्ष पर चढ़कर देखा तो ज्ञात हुआ कि हाथी-घोड़ों के साथ एक बहुत बड़ी सेना चित्रकूट की ओर चली आ रही है। वे पेड़ से नीचे उतरकर रामचंद्र के पास गये और बोले-

"भैया, कैकेयी का पुत्र भरत एक विशाल सेना को लेकर हमपर आक्रमण करने आ रहा है। आप हाथ में धनुष–बाण लेकर तैयार हो जाइये। आज मैं भरत की सारी सेना के टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा। उसके घोड़ों, हाथियों और रथों को भी काटकर चित्रकूट के वन को लाशों से भर दूँगा। भरत अपना राज्य सुरक्षित बनाने के लिए हम लोगों को मार डालना चाहता है। पर मैं आज भरत को मारकर अयोध्या के सिंहासन पर आपको बिठाऊँगा।"

लक्ष्मण की क्रोध-भरी बातें सुनकर रामचंद्र बोले– "भाई लक्ष्मण, तुम बड़े वीर हो। तुम चाहो तो सारी पृथ्वी को जीत सकते हो, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। पर मैं पिता के सत्य की रक्षा के लिए वन में आया हूँ। यदि मैं युद्ध में भरत को मारकर उसका राज्य छीन लूँ, तो लोग क्या कहेंगे? संसार में सब लोग मेरी निन्दा करेंगे। अपने बंधु-बाँधवों को मारकर जो धन मिलता है, वह विष मिले हुए भोजन के समान है। उसे मैं कभी ग्रहण नहीं करूँगा। मैं चाहूँ तो सारी पृथ्वी का राज्य भी प्राप्त कर सकता हूँ। पर अधर्म से मैं इन्द्र का पद भी नहीं लेना चाहता।"

"और सुनो! इक्षवाकु वंश में एक भी राजा ऐसा नहीं हुआ, जिसने नीति का त्याग किया हो, धर्म को छोड़ा हो, कोई अनुचित कार्य किया हो। भरत मेरा प्यारा भाई है। वह कभी मुझसे द्वेष नहीं करेगा। मुझे विश्वास है, वह मुझे मनाने के लिए ही, वापस ले जाने के लिए ही यहाँ आ रहा है। तुम अपने क्रोध को शान्त करो और धनुष पर से बाण उतार लो। यदि तुम राज्य के लिए ही भरत से युद्ध करना चाहते हो, तो मैं भरत से कहूँगा कि हे भाई, अयोध्या का राज्य लक्ष्मण को दे दो। तुम सच मानो। वह तुरन्त अपना राज्य तुमको दे देगा।"

रामचंद्र की बात सुनकर लक्ष्मण लज्जित हो गये। उन्होंने अपने तीर-धनुष नीचे रख दिये।

चित्रकूट के निकट पहुँचकर भरत ने अपनी सेना को एक स्थान पर टिकाया। फिर वे रामचंद्र के आश्रम को खोजने लगे। शत्रुघ्न एक पर्वत की ऊँची चोटी पर चढ़कर चारों ओर देखने लगे। उस समय चित्रकूट एक बहुत बड़ा वन था। उसमें अनेक प्रकार के बड़े-

बड़े वृक्ष थे। शत्रुघ्न ने देखा कि एक स्थान पर पेड़ों का बड़ा झुंड है। उस झुंड के भीतर से धुआँ निकल रही है। उन्होंने अनुमान किया कि वहीं पर रामचंद्र का आश्रम होगा।

भरत सारी सेना को पीछे छोड़कर रामचंद्र के आश्रम की ओर चल पड़े। उनके पीछे शत्रुघ्न जा रहे थे। आश्रम के निकट पहुँचकर भरत ने देखा। एक पर्णकुटी के सामने राम, लक्ष्मण और सीता बैठे हैं। रामचंद्र के सिर पर जटा है। शरीर पर वल्कल है। कुश की चटाई पर तीनों बैठे हैं। तीनों प्रसन्नचित्त हैं। चिन्ता और दुख की एक रेखा भी उनके मुख पर नहीं है।

उनको देखकर भरत शोक-सागर में डूब गये। उनकी आँखों की धारा बह चली। वे सोचने लगे– "हाय! मेरे कारण बड़े भैया को कितना कष्ट हुआ? जो सिर मुकुट धारण करने के लिए था, उसपर जटाएँ पड़ी हैं। सिंहासन पर बैठनेवाले पुरुष कुश की चटाई पर बैठे हैं। बहुमूल्य वस्त्र पहननेवाला शरीर वल्कल धारण किये है। यह कितने दुख की बात है। मेरे जीवन तो धिक्कार है।"

भरत दौड़कर रामचंद्र के पास गये और उनके पैरों पर लोटने लगे। अपने आँसुओं से रामचंद्र के पैर धो दिये। राम ने भरत को उठाकर गले से लगा लिया। दोनों भाई एक दूसरे से लिपट गये। उस मिलन की शोभा का वर्णन कौन कर सकता है? ऐसा लगता था, मानों साक्षात् प्रेम ही दोनों भाइयों का रूप धरकर मिल रहा हो। मानों गंगा जमुना से मिल रही हो; नीति धर्म से मिल रही हो; त्याग तपस्या से मिल रहा हो। उनका मिलन देखकर देवता भी विस्मित हो गये। पशु-पक्षी टकटकी लगाकर उनकी ओर देखने लगे। निर्जीव वृक्षों ने भी आनन्दित होकर उनपर फूलों की वर्षा की।

इतने में सुमंत, गुरु वशिष्ठ और तीनों माताओं को लेकर आश्रम में पहुँच गये। राम-लक्ष्मण ने माताओं के चरणों पर सिर रखकर प्रणाम किया। कौशल्या और सुमित्रा ने उन्हें आशीर्वाद दिया। पर रानी कैकेयी सिर नीचा किये बैठी रही। उसके मुँह से कोई शब्द नहीं निकला।

अभ्यास

1. "भरत-मिलाप" पाठ का सारांश लिखिए :-

भरत की सेना चित्रकूट के पास आ पहुँची। लक्ष्मण ने सोचा कि भरत चित्रकूट पर चढ़ाई करने आ रहा है। वे तुरन्त रामचन्द्र के पास गये और बोले कि भरत हमपर आक्रमण करने यहाँ आ रहा है। मैं अभी वहाँ जाकर भरत और उसकी सेना को मारूँगा। फिर आपको अयोध्या के सिंहासन पर बिठाऊँगा।

लक्ष्मण की क्रोध भरी बातें सुनकर रामचन्द्र ने लक्ष्मण को शांत किया। और उन्होंने लक्ष्मण से कहा कि भरत मुझे अयोध्या को वापस ले जाने के लिए ही यहाँ आ रहा है। इसलिए तुम अपने क्रोध को शांत करो।

भरत रामचन्द्र के पास आये और उनके पैरों पर गिरे। राम ने भरत को उठाकर गले से लगा लिया। फिर राम और लक्ष्मण ने माताओं को प्रणाम किया। कौशल्या और सुमित्रा ने उन्हें आशीर्वाद दिया। लेकिन कैकेयी सिर नीचा किये बैठी रही।

2. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(1) अयोध्या की सेना को आते हुए देखकर लक्ष्मण ने क्या समझा ?

अयोध्या की सेना को आते हुए देखकर लक्ष्मण ने समझा कि भरत रामचन्द्र से लड़ाई करने आ रहा है।

(2) लक्ष्मण की क्रोध भरी बातें सुनकर राम ने क्या कहा ?

लक्ष्मण की क्रोध भरी बातें सुनकर राम ने कहा कि भरत मुझे अयोध्या ले जाने के लिए ही यहाँ आ रहा है।

10. पादुका पट्टाभिषेक

भरत के मुख से पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर रामचंद्र दुख से मूर्छित हो गये। लक्ष्मण फूट-फूटकर रोने लगे। तब वशिष्ठ मुनि ने उन्हें समझा-बुझाकर शान्त किया। फिर दोनों भाइयों ने गंगा नदी में जाकर अपने स्वर्गीय पिता को जलांजलि दी।

स्नान-भोजन से छुट्टी पाकर सब रामचंद्र के आश्रम के सामने चबूतरे पर बैठे। तब भरत ने कहा– "भैया, मेरी माता ने राज्य के मोह में पड़कर घोर पाप किया है। उन्होंने

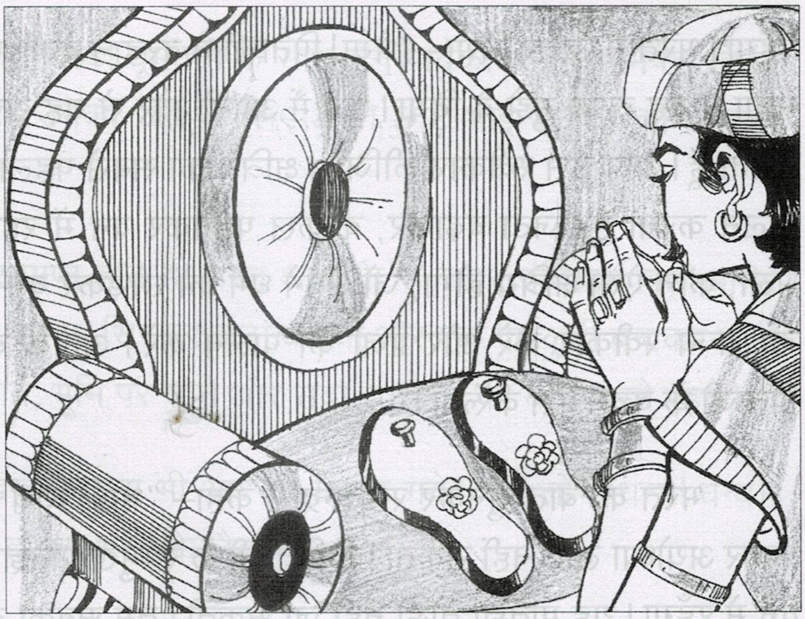

आपको वन में भेजकर बहुत कष्ट दिये। पिताजी ने मोह में पड़कर अनुचित प्रतिज्ञा कर दी। उन्होंने बिना सोचे-विचारे काम किया। उस समय मैं अपने मामा के घर में था। मुझे कुछ भी मालूम नहीं कि अयोध्या में क्या हो रहा था। मैं राज्य की इच्छा नहीं रखता। हमारे कुल की रीति है कि राजा का सबसे बड़ा पुत्र ही सिंहासन पर बैठता है। इसलिए अयोध्या का राज्य आपका है। आप अयोध्या को लौट चलिए। वहाँ चलकर अपना राज्य संभालिए। आपके वियोग में अयोध्या के लोग बहुत दुखी और व्याकुल हो रहे हैं। उनका दुख दूर कीजिए।"

भरत की प्रेमभरी बातें सुनकर राम बोले– "धर्मात्माओं में श्रेष्ठ भरत! माता और पिता दोनों ने हमको वन जाने की आज्ञा दी है। उनकी आज्ञा का पालन करना हमारा कर्तव्य है। उन्होंने तुमको अयोध्या का राज्य दिया है। तुम अयोध्या लौटकर धर्म से प्रजा का पालन करो। जो राजा प्रजा की भली–भांति देखरेख नहीं करता, उनके हितों की रक्षा नहीं करता, वह नरक का अधिकारी होता है। जो राजा स्वार्थ में डूबा रहता है, भोग-विलास में मग्न रहता है और प्रजा से अनुचित रूप से धन वसूल करता है, उसका राज्य नष्ट हो जाता है। जो चोर-डाकुओं को दण्ड नहीं देता और सत्पुरुषों का आदर नहीं करता, उसका राज्य कमज़ोर हो जाता है और वह शत्रुओं से अपने राज्य की रक्षा नहीं कर सकता। तुम मेरी बात मानकर अयोध्या को लौट जाओ और न्याय से प्रजा का पालन करो। मैं पिता के वचन और माता की आज्ञा का पालन करने के लिए चौदह वर्ष वन में

रहूँगा। भरत ने उत्तर दिया– "भैया! पिताजी ने वरदान देकर मेरी माता को संतुष्ट किया। माता ने यह राज्य मुझे दे दिया। अब मैं अपनी ओर से यह राज्य आपकी सेवा में समर्पित करता हूँ। आप उसे स्वीकार कीजिए। क्षत्रिय का सबसे पहला धर्म सब प्रकार से प्रजा का पालन करना है। जटा बढ़ाकर, वल्कल पहनकर वन में रहना तो ब्राह्मणों का धर्म है। भला, कौन ऐसा क्षत्रिय होगा, जो अपने धर्म को छोड़कर वन-वन फिरेगा? आप अयोध्या का राज्य स्वीकार करें और प्रजा का पालन करें। आपके बदले मैं वन में रहूँगा और पिताजी के वचन पूरा करूँगा।"

भरत की बात सुनकर रामचन्द्र ने कहा– "भाई, व्यर्थ हठ मत करो। मैं किसी भी प्रकार अयोध्या लौट नहीं सकता। मैं पिताजी के सम्मुख प्रतिज्ञा कर चुका हूँ कि चौदह वर्ष वन में रहूँगा। यह प्रतिज्ञा तोड़ी नहीं जा सकती। तुम सबको लेकर अयोध्या लौट जाओ। तुम वहाँ रहकर मनुष्यों पर राज्य करो। मैं वन में रहकर जंगली पशुओं पर राज्य करूँगा।"

भरत ने बार-बार रामचन्द्र से अयोध्या लौटने और राज्यभार संभालने का आग्रह किया। पर रामचन्द्र अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहे। जब भरत ने देखा कि किसी भी उपाय से रामचन्द्र अयोध्या वापस नहीं आएँगे, तब भरतजी का मन उदास हो गया। उनका शरीर थर-थर कांपने लगा। आँखों से आँसुओं की धारा बह चली। उन्होंने कहा– "भैया! मैं इतने बड़े राज्य को अकेले नहीं संभाल सकता। आप अपनी चरण पादुकाएँ हमको दीजिए। मैं उन्हीं को सिंहासन पर रखकर आपकी ओर से राज्य संभालूँगा। मैं भी चौदह वर्षों तक जटा और वल्कल धारण करके रहूँगा। फल-मूल का भोजन करूँगा। और नगर के बाहर रहकर आपकी प्रतीक्षा करूँगा। यदि चौदह वर्ष पूरा होने पर आपके दर्शन नहीं होंगे, तो मैं अग्नि में प्रवेश करके प्राण त्याग दूँगा।"

रामचन्द्र ने अपनी स्वीकृति दे दी। भरत ने रामचन्द्र की दोनों पादुकाओं को उठाकर अपने सिर पर रख लिया। फिर वे रामचन्द्र की प्रदक्षिणा करके उनसे विदा लेकर सब समाज के साथ अयोध्या की ओर चल पड़े।

अयोध्या पहुँचकर उन्होंने बड़ी धूमधाम के साथ उन पादुकाओं का अभिषेक किया और उन्हें सिंहासन पर रखा। उनकी रक्षा के लिए अपने छोटे भाई शत्रुघ्न को नियुक्त किया।

अभिषेक का उत्सव समाप्त होते ही भरत अयोध्या से बाहर नंदिग्राम चले आये। वहाँ पहुँचकर उन्होंने वल्कल पहना, सिर पर जटा बनायी और एक पर्णकुटी बनाकर उसी में रहने लगे। वे फल–मूल खाते, भूमि पर सोते और सदा रामचन्द्र को याद करते रहते।

भरत का भ्रातृप्रेम देखकर देवता भी आश्चर्य में पड़ गये। सब लोग 'धन्य! धन्य!' कह उठे। सबने कहा– "भाई हो, तो भरत के जैसा!"

भरत रहनि समुहनि करतूती।
भगति विरति गुनविमल विभूति।।
बरनत सकल सुकवि सकुचाहीं।
सेस गनेस गिरा गुन नाहीं।।

भरतजी को रहन-सहन, समझ, कार्य, भक्ति, वैराग्य, निर्मल गुण और ऐश्वर्य (शील-स्वभाव) आदि का वर्णन करने में सभी कवियों को संकोच होता है। क्योंकि वे उसका वर्णन करने में अपने को असमर्थ पाते हैं। (औरों की तो बात ही क्या?) स्वयं शेषनाग, गणेशजी और सरस्वती भी उनके गुणों का वर्णन नहीं कर सकते।

अभ्यास

1. "पादुका पट्टाभिषेक" पाठ का सारांश लिखिए :-

भरत ने रामचन्द्र से आग्रह किया कि क्षत्रिय का सबसे पहला धर्म सब प्रकार से प्रजा का पालन करना है। इसलिए आप अयोध्या का राज्य स्वीकार करें और प्रजा का पालन करें।

भरत की बातें सुनकर रामचन्द्र ने कहा, भाई व्यर्थ हठ मत करो। मैं अपने माता–पिता की आज्ञा का उल्लंघन करना नहीं चाहता। इसलिए तुम अयोध्या लौट जाओ और वहाँ रहकर राज्य करो।

अब भरत ने समझ लिया कि किसी भी उपाय से रामचन्द्र अयोध्या नहीं लौटेंगे। इसपर भरत ने रामचन्द्र से प्रार्थना की कि आप अपनी चरण की पादुकाएँ मुझे दीजिए। मैं उन पादुकाओं को सिहांसन पर रखकर आपकी ओर से राज्य संभालूँगा। रामचन्द्र ने अपनी स्वीकृति दे दी। अयोध्या पहुँचकर भरत ने उन पादुकाओं का अभिषेक किया और उन्हें सिंहासन पर रखकर शासन किया।

2. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(1) रामचन्द्र ने अयोध्या लौट आने से क्यों इनकार कर दिया ?

रामचन्द्र ने अपने माता–पिता की आज्ञा का उल्लंघन करना नहीं चाहा। इसलिए अयोध्या लौटने से इनकार कर दिया।

(2) भरत ने किनका अभिषेक किया और उन्हें किसपर रखा ?

भरत ने रामचन्द्र की पादुकाओं का अभिषेक किया और उन्हें सिंहासन पर रखकर शासन किया।

* * *

मध्यमा पाठ्य पुस्तक

भाग - 6

रचना

CONTENTS / अनुक्रमणिका

पाठ पृष्ठ

1. The usage of "अपना" 116
2. Subjunctive – (संभाव्य भविष्यत्‌काल) 118
3. Doubtful Present – (संदिग्ध वर्तमानकाल) 121
4. Doubtful Past – (संदिग्ध भूतकाल) 123
5. Past Conditional Tense – (हेतुहेतुमद् भूतकाल) 125
6. Habitual Tense – (नित्यताबोधक) 128
7. The usage of "होना" and "पड़ना" 131
8. The usage of "दे" and "लग" 134
9. The usage of "कि" and "पड़ना" 136
10. The usage of "जा, दे ले" (संयुक्त क्रियाएँ) 139
11. Adjectives of Comparison – (विशेषणों की तुलना) 142
12. Active and Passive Voices – (कर्तृवाच्य - कर्मवाच्य) 145
    Change the Voice – वाच्य बदलिए
13. Numbers – संख्या 147
14. Combining the sentencess – वाक्य जोड़ना 147
15. Correct and incorrect sentencess – शुद्ध और अशुद्ध वाक्य 148
16. Conversation – बातचीत 148
17. Letter writing – पत्र लेखन 149
18. Essay – निबंध 150
19. Gender – लिंग, Singular-Plural – वचन 151

भाग - 7

Translation Practice – अनुवाद अभ्यास 170-180

पाठ - 1

The usage of 'अपना' வின் உபயோகம்

1. मैं अपना काम करता हूँ।
I do my work.
நான் என் வேலையைச் செய்கிறேன்.

2. तुम अपना नाम बताओ।
Tell me your name.
நீ உன் பெயரைச் சொல்.

3. उसने आज अपना पाठ याद नहीं किया।
He did not learn (memorise) his lesson today.
அவன் இன்று தன் பாடத்தை ஞாபகப்படுத்திக் கொள்ளவில்லை,

4. गोपाल कल अपने गाँव गया।
Gopal went to his village yesterday.
கோபாலன் நேற்று தன் கிராமத்திற்குச் சென்றான்.

5. वे अपनी किताबें नहीं बेचेंगे।
They will not sell their books.
அவர்கள் தங்கள் புத்தகங்களை விற்க மாட்டார்கள்.

6. हम अपने देश से प्यार करते हैं।
We love our country.
நாம் நம்முடைய நாட்டை நேசிக்கிறோம்.

7. गोमती अपने कपड़े खुद साफ़ करती है।
Gomati washes her clothes herself.
கோமதி தன்னுடைய துணிகளைத் தானே சுத்தம் செய்கிறாள்.

8. रामनाथ अपनी बहिन से प्यार करता है।
Ramanath loves his sister.
ராமநாத் தன்னுடைய சகோதரியை நேசிக்கிறான்.

9. अपने को जो बड़ा कहता है, वह सचमुच बड़ा नहीं है।
One who calls himself great is not really great.
தன்னை பெரியவன் என்று சொல்லிக் கொள்கிறவன் உண்மையில் பெரியவன் இல்லை,

10. लड़को! अपनी–अपनी किताबें ले लो।
Boys, take up your books.
பிள்ளைகளே! உங்கள் புத்தகங்களை எடுத்துக் கொள்ளுங்கள்.

Grammar / இலக்கணம்

अपना (अपने, अपनी) 'one's own' is a common reflexive and is used with nouns and pronouns, in all persons and numbers.

अपना (अपने, अपनी) 'தன், தனது, தன்னுடைய' என்பது பொதுவான சொல்லாகும். பெயர்ச்சொற்கள் அல்லது பிரதிப் பெயர்ச் சொற்களுடன் அது எல்லா இடங்களிலும், எண்களிலும் சேர்க்கப்படுகிறது.

Example/ உதாரணம்:–

मैं अपना काम करता हूँ।	हम अपना काम करते हैं।
तुम अपना काम करते हो।	आप अपना काम करते हैं।
वह अपना काम करता है।	वे अपना काम करते हैं।
मैं अपना काम करती हूँ।	हम अपना काम करती हैं।
तुम अपना काम करती हो।	आप अपना काम करती हैं।
वह अपना काम करती है।	वे अपना काम करती हैं।

Exercises / பயிற்சிகள்

(a) Point out the difference between the following pairs of sentences:–

பின்வரும் இரட்டை வாக்கியங்களில் உள்ள வேற்றுமையைக் காட்டுக :–

1. मेरा दोस्त मेरे घर गया।
   मेरा दोस्त अपना घर गया।
2. राम ने उसकी किताब खो दी।
   राम ने अपनी किताब खो दी।
3. अहमद उसकी बहिन से बहुत प्यार करता है।
   अहमद अपनी बहिन से बहुत प्यार करता है।
4. गोपाल उसके भाई के साथ रहता है।
   गोपाल अपने भाई के साथ रहता है।
5. हम हमारे स्कूल से बहुत दूर रहते हैं।
   हम अपने स्कूल से बहुत दूर रहते हैं।

(b) Correct the wrong usage in the following sentences:–

கீழ்க்கண்ட வாக்கியங்களில் உள்ள தவறான பிரயோகங்களைத் திருத்தவும்:–

1. **अपना** नाम रामदास है। 2. उस घर का मालिक **अपना** भाई है। 3. भूपाल से **अपनी** बहिन छोटी है। 4. **तुम्हारा** नाम कागज़ पर लिखो। 5. हमको **हमारा** देश बहुत प्यारा है। 6. वह **अपना** प्यारा दोस्त है। 7. रामनाथजी **उनकी** स्त्री को बहुत प्यार करते हैं। 8. पद्मिनी **उसके** पति की लाश के साथ जल मरी। 9. कमल ने **उसकी** घड़ी बेच दी। 10. औरंगज़ेब **उसके** भाइयों को मारकर गद्दी पर बैठा।

(लाश – corpse, பிணம்; गद्दी – throne, சிம்மாசனம்)

मेरा /मेरी
मेरे / मेरी

(c) Translate into Hindi :–

ஹிந்தியில் மொழிபெயர்க்கவும்:–

1. He washes his clothes himself. 2. Kamala drives her car herself. 3. Have you memorised your lessons? 4. She lives in Banaras with her brother. 5. I went to buy a watch for myself. 6. Ramesh was going to school with his sister. 7. Haridas loves his wife too much. 8. We love our country and our countrymen. 9. Shahjahan built Taj Mahal over the grave of his wife. 10. Send your servant to the shop and get the books.

(to memorise – याद करना; to drive – चलाना; to clean – साफ़ करना; to build – बनाना; grave – क़ब्र)

1. அவன் தன்னுடைய துணிகளைத் தானே சுத்தம் செய்கிறான். 2. கமலா தன்னுடைய மோட்டார் வண்டியைத் தானே ஒட்டுகிறாள். 3. நீ உன்னுடைய பாடங்களை நினைவுபடுத்திக் கொண்டாயா? 4. அவள் காசியில் தன் சகோதரனுடன் வசிக்கிறாள். 5. நான் எனக்காக ஒரு கடிகாரம் வாங்கப் போனேன். 6. ரமேஷ் தன் சகோதரியுடன் பள்ளிக்கூடம் சென்று கொண்டிருந்தான். 7. ஹரிதாஸ் தம் மனைவியை மிகவும் நேசிக்கிறார். 8. நாங்கள் எங்களுடைய நாட்டையும் நாட்டுமக்களையும் நேசிக்கிறோம். 9. ஷாஜஹான் தனது மனைவியின் கல்லறையின் மீது தாஜ்மஹாலைக் கட்டுவித்தார். 10. உன்னுடைய வேலைக்காரனை கடைக்கு அனுப்பி புத்தகங்கைளை வாங்கிக்கொள்.

(நினைவுபடுத்திக்கொள்ளுதல் – याद करना; ஓட்டுதல் – चलाना; கட்டுதல் – बनाना; கட்டுவித்தல் – बनवाना; கல்லறை – क़ब्र)

पाठ - 2

Subjunctive / நோக்கம், நிபந்தனை முதயலிவற்றைக் குறிக்கும் எதிர்காலம் (संभाव्य भविष्यत्काल)

1. क्या मैं आपके साथ आऊँ?
   Shall I come with you?
   நான் உங்களுடன் வரலாமா ?
2. मैं आपसे एक बात पूछूँ?
   Shall I ask you one thing?
   நான் உங்களிடம் ஒரு விஷயம் கேட்கலாமா ?
3. आप जल्दी नीरोग हो जाएँ!
   May you get well soon.
   நீங்கள் விரைவில் குணமடைவீர்களாக !
4. भगवान आप पर कृपा करें!
   May God be kind to you!
   கடவுள் உங்களுக்கு அருள்புரிவாராக !

5. आप जल्दी स्टेशन जाएँ, नहीं तो गाड़ी नहीं मिलेगी।
You should go to the station soon, otherwise you will not be able to catch the train.
நீங்கள் சீக்கிரம் ஸ்டேனுக்குச் செல்லுங்கள், இல்லாவிடில் வண்டி கிடைக்காது.

6. मैं अच्छी तरह पढ़ूँ, तो ज़रूर पास होऊँगा।
If I study well, I shall surely pass.
நான் நன்றாகப் படித்தால், கட்டாயம் தேர்ச்சி பெறுவேன்.

7. अगर वे सौ रुपये दें, तो मैं यह काम करूँगा।
If they give me hundred rupees, I shall do this work.
அவர் நூறு ரூபாய் கொடுத்தால், நான் இந்த வேலையைச் செய்வேன்.

8. कौन जाने, भगवान कहाँ है?
No one knows where the God is?
கடவுள் எங்கே இருக்கிறார் என யார் அறிவார் ?

9. गोपाल से कहो कि वह एक गिलास पानी लाए।
Tell Gopal to get a glass of water.
ஒரு டம்ளர் தண்ணீர் கொண்டு வரும்படி கோபாலனிடம் சொல்.

10. आखिर वे क्या करें?
After all, what can they do?
கடைசியில் அவர்கள் என்னதான் செய்வார்கள்?

Grammar / *இலக்கணம்*

'संभाव्य भविष्यत्' Indicates permission, wish, purpose, condition, doubt or supposition.

'संभाव्य भविष्यत्' அனுமதி, விருப்பம், நோக்கம், நிபந்தனை, சந்தேகம், அனுமானம் முதலியவற்றைக் குறிக்கும்.'

Permission:–	क्या मैं अब घर जाऊँ?	May I go home now?
அனுமதி:–	क्या मैं अब घर जाऊँ?	நான் இப்பொழுது வீட்டிற்குப் போகலாமா?
Wish:–	आपके एक पुत्र हो!	May you have a son!
விருப்பம்:–	आपके एक पुत्र हो!	உங்களுக்கு ஒரு மகன் பிறக்கட்டும்!

Purpose:– चपरासी को जल्दी डाक–घर भेजो, जिससे वह समय पर चिट्ठी भेज दे– Send the peon to the post-office soon, so that he may post the letter on time.

நோக்கம்:– चपरासी को जल्दी डाक–घर भेजो, जिससे वह समय पर चिट्ठी भेज दे– வேலைக்காரனை சீக்கிரம் தபால் அலுவலகத்திற்கு அனுப்பு, அவன் சரியான சமயத்தில் கடிதத்தைப் போடட்டும்.

Condition:– अगर जोसफ़ यहाँ आवे, तो उसके हाथ मेरी घड़ी भेज दो– If Joseph comes here, send my watch through him.

நிபந்தனை:– अगर जोसफ़ यहाँ आवे, तो उसके हाथ मेरी घड़ी भेज दो– ஜோஸப் இங்கே வந்தால், அவன் மூலமாக என் கடிகாரத்தை அனுப்பிவிடு.

Doubt:– कौन जाने, डाक्टर कब आएँगे! Who knows when the doctor will come?

சந்தேகம்:– कौन जाने, डाक्टर कब आएँगे! டாக்டர் எப்பொழுது வருவார் என்று யாருக்குத் தெரியும்?

Supposition:– सवारी न मिले, तो तुम कैसे वहाँ जाओगे? If you don't get a conveyance, how will you go there?

அனுமானம்:– सवारी न मिले, तो तुम कैसे वहाँ जाओगे? வண்டி கிடைக்காவிட்டால் நீ எப்படி அங்கே போவாய்?

Exercises / பயிற்சிகள்

(a) Complete each sentence by filling the blanks with subjunctive form of one of the following verbs:–

பின்கண்ட வினைச்சொற்களின் संभाव्य भविष्यत् உருவங்களைக் கொண்டு ஒவ்வொரு வாக்கியத்தையும் பூர்த்தி செய்யவும் :–

(देख, ला, माँग, लिख, खरीद, आ, जा, दे, ठहर, कर)

1. क्या मैं उसको एक ख़त..................? 2. अगर आप हुक्म....................तो मैं यह काम करूँगा। 3. आप............तो वे ज़रूर आपको रुपये देंगे। 4. क्या, हम पिताजी के साथ काशी..............? 5. अगर मैं यह घर.............तो आप इसे कितने में बेचेंगे? 6. क्या, मैं आपके लिए थोड़ा गरम दूध............? 7. आप दो-चार दिन और यहाँ............। 8. डॉक्टर साहब से कहो कि वे कल मेरे यहाँ............। 9. ....इस लड़ाई में कौन जीतता है! 10. क्या मैं इस काम में आपकी मदद..............?

(b) Translate into Hindi:–

ஹிந்தியில் மொழிபெயர்க்கவும்:–

1. If we try, we can be benefitted. 2. Shall I meet him tomorrow evening? 3. If we love them, they will also love us. 4. May God cure him soon! 5. May I go out for a while? 6. Shall we all sing together? 7. If he doesn't buy this watch what will you do? 8. He will buy the book, if he has money. 9. Let us see who will speak in the meeting. 10. Whether they go there or not, I will certainly go.

(to cure – स्वस्थ करना, together – मिलकर)

1. நாம் முயற்சி செய்தால் பயன் அடையலாம். 2. நான் நாளை மாலையில் அவனை சந்திக்கவா? 3. நாம் அவர்களை நேசித்தால் அவர்களும் நம்மை நேசிப்பார்கள். 4. கடவுள் அவனை விரைவில் குணப்படுத்துவாராக. 5. நான் சிறிது நேரம் வெளியே போகட்டுமா? 6. நாம் எல்லோரும் சேர்ந்து பாடுவோமா? 7. அவன் அந்த கடிகாரத்தை வாங்காவிடில் நீ என்ன செய்வாய்? 8. பணம் இருந்தால் அவன் இந்தப் புத்தகத்தை வாங்குவான். 9. இந்தச் சபையில் யார் பேசுகிறார்கள் என்று பார்க்கலாம். 10. அவர்கள் அங்கே போனாலும் போகாவிட்டாலும் நான் கட்டாயம் போவேன்.

(குணப்படுத்துதல் – स्वस्थ करना, சேர்ந்து – मिलकर)

पाठ - 3

Doubtful Present/*சந்தேகத்தைக் காட்டும் நிகழ்காலம்*/संदिग्ध वर्तमानकाल

1. मोहन कालेज में पढ़ता होगा।
Mohan may be studying in the college.
மோஹன் கல்லூரியில் படித்துக் கொண்டிருப்பான்.

2. अब लक्ष्मी रेडियो पर गाती होगी।
Lakshmi may be singing over the radio now.
லக்ஷ்மி இப்போது ரேடியோவில் பாடிக் கொண்டிருப்பாள்.

3. माँ रोटी बनाती होंगी।
Mother may be preparing roties.
தாயார் ரொட்டி செய்துகொண்டிருப்பார்கள்.

4. आप रामनाथजी को जानते होंगे।
You may be knowing Ramanathji.
நீங்கள் ராம்நாத் அவர்களை அறிந்திருப்பீர்கள்.

5. अब चार बजते होंगे।
It may be striking four now.
இப்பொழுது நான்கு (மணி) அடித்துக் கொண்டிருக்கலாம்.

6. मोहन किताब पढ़ रहा होगा।
Mohan may be reading the book.
மோஹன் புத்தகம் படித்துக் கொண்டிருக்கலாம்.

7. रेल-गाड़ी आ रही होगी।
The train may be coming.
ரயில் வண்டி வந்து கொண்டிருக்கலாம்.

8. मेरे दोस्त बाज़ार से लौट रहे होंगे।
My friend may be returning from bazar.
என் நண்பர் கடை வீதியிலிருந்து திரும்பிக் கொண்டிருப்பார்.

9. आजकल ऊटी में पानी बरस रहा होगा।

It may be raining in Ooty now-a-days.

இந்நாட்களில் ஊட்டியில் (உதகமண்டலம்) மழை பெய்து கொண்டிருக்கலாம்.

10. लड़कियाँ स्कूल से वापस आती होंगी।

Girls may be returning from the school.

சிறுமிகள் பள்ளிகூடத்திலிருந்து திரும்பி வந்து கொண்டிருப்பார்கள்.

Grammar / *இலக்கணம்*

Doubt in the present tense is expressed by adding होगा। The following is the full conjugation in the masculine:–

நிகழ்காலத்தில் சந்தேகத்தைக் குறிப்பதற்கு होगा சேர்க்கப்படுகின்றது. வினைச் சொற்களின் எல்லா மாறுபாடுகளும் கீழே காட்டப் பட்டுள்ளன.

मैं जाता हूँगा।	हम जाते होंगे।
तुम जाते होगे।	आप जाते होंगे।
वह जाता होगा।	वे जाते होंगे।
मैं जाती हूँगी।	हम जाती होंगी।
तुम जाती होगी।	आप जाती होंगी।
वह जाती होगी।	वे जाती होंगी।

Exercises / *பயிற்சிகள்*

(a) Complete each of the following with the help of the expressions given below. The sentences should be in the Doubtful Present Tense:–

கீழே கொடுக்கப்பட்டுள்ள வினைச் சொற்களைப் பயன்படுத்தி பின்வரும் வாக்கியங்களை சந்தேகத்தைக் காட்டும் நிகழ்காலத்தில் பூர்த்தி செய்யவும்:–

(आनंद मना; बिक; बोल; खा; पढ़ा; बज; पढ़; सी; खेल; बुला;)

1. मोहन हलवा .... ।
2. गोमती कपड़ा .... ।
3. नेताजी सभा में .... ।
4. मास्टर साहब लड़कों को .... ।
5. वे नौकर को .... ।
6. कश्मीर में फल सस्ते .... ।
7. रशीदा मेडिकल कालेज में .... ।
8. लड़के मैदान में .... ।
9. दस बज गये, कालेज की घंटी .... ।
10. अनाज के अधिक उत्पाद के कारण देश के लोग .... ।

(b) Translate into Hindi:–

ஹிந்தியில் மொழிபெயர்க்கவும்:–

1. This cow may be giving four litters of milk every day. 2. She may be selling potatoes in the market. 3. Abdul may be writing a letter to his friend. 4. Hari and Joseph may be playing cricket. 5. My servant may be bringing betel leaves for me. 6. This shopkeeper may not be selling butter. 7. My children may be hearing stories from their grand-mother. 8. She may be touring in China. 9. He may be coming by the Mumbai Mail. 10. This train may not be halting at all stations.

(betel leaves – पान; butter – मक्खन; to travel – यात्रा करना; to halt – रुकना)

1. இந்தப் பசு ஒவ்வொரு நாளும் நான்கு லிட்டர் பால் கொடுத்துக் கொண்டிருக்கக்கூடும். 2. அவள் கடை வீதியில் உருளைக்கிழங்கு விற்றுக் கொண்டிருக்கலாம். 3. அப்துல் தன் நண்பனுக்குக் கடிதம் எழுதிக் கொண்டிருக்கலாம். 4. ஹரியும் ஜோஸப்பும் கிரிக்கெட் விளையாடிக் கொண்டிருக்கலாம். 5. என் வேலைக்காரன் எனக்கு வெற்றிலை கொண்டு வந்து கொண்டிருக்கலாம். 6. இந்தக் கடைக்காரன் வெண்ணெய் விற்காமலிருக்கலாம். 7. என்னுடைய குழந்தைகள் தங்கள் பாட்டியிடம் கதைகள் கேட்டுக் கொண்டிருக்கலாம். 8. அவள் சீனாவில் சுற்றுப் பயணம் செய்துக் கொண்டிருக்கலாம். 9. அவன் மும்பை மெயிலில் வந்து கொண்டிருக்கலாம். 10. இந்த ரயில் எல்லா ஸ்டேஷன்களிலும் நிற்காமலிருக்கலாம்.

(வெற்றிலை – पान; வெண்ணெய் – मक्खन; சுற்றுப்பிரயாணம் செய்தல் – यात्रा करना; நிற்றல் – रुकना)

पाठ - 4

Doubtful Past/சந்தேகத்தைக் காட்டும் இறந்தகாலம்/संदिग्ध भूतकाल

1. राम कल मेरे घर आया होगा।
   Ram might have come to my house yesterday.
   ராமன் நேற்று என் வீட்டிற்கு வந்திருக்கலாம்.
2. कामराजजी राजाजी से मिलने गये होंगे।
   Sri Kamaraj might have gone to meet Rajaji.
   காமராஜ் அவர்கள் ராஜாஜியை சந்திப்பதற்காகப் போயிருக்கலாம்.
3. उसने यह किताब नहीं पढ़ी होगी।
   He might not have read this book.
   அவன் இந்தப் புத்தகத்தை படித்திருக்கமாட்டான்
4. उसने आज़ाद साहब को ख़त लिखा होगा।
   He might have written a letter to Azaad Saheb.
   அவன் ஆஜாத் அவர்களுக்கு கடிதம் எழுதியிருப்பான்.

5. उन्होंने लड़ाई में बहुत मदद दी होगी।
They might have rendered great help in the war.
அவர் போரில் மிகவும் உதவி செய்திருப்பார்.

6. आर्य लोग मध्य एशिया से आये होंगे।
The Aryans might have come from Central Asia.
ஆரியர்கள் மத்திய ஆசியாவிலிருந்து வந்திருக்கலாம்.

7. यह नदी किसी पहाड़ से निकली होगी।
This river might have arisen from some hill.
இந்த நதி ஏதாவது ஒரு மலையிலிருந்து தோன்றியிருக்கும்.

8. पांडिय राजाओं ने इस मंदिर को बनवाया होगा।
The Pandya kings might have made to build this temple.
பாண்டிய மன்னர்கள் இந்தக் கோயிலைக் கட்டுவித்திருப்பார்கள்.

9. पिछली लड़ाई में करोड़ों रुपये खर्च हुए होंगे।
Crores of rupees might have been spent in the last war.
கடந்த போரில் கோடிக்கணக்கான ரூபாய்கள் செலவாகியிருக்கும்.

10. रेल गाड़ी अब तक रवाना हो चुकी होगी।
The train might have started by now.
ரயில் வண்டி இதற்குள் புறப்பட்டிருக்கும்.

Grammar / இலக்கணம்

Doubt in the Past Tense is expressed by adding होगा to the Past Indefinite form.

இறந்த காலத்தில் சந்தேகத்தைக் குறிப்பதற்கு சாதாரண இறந்தகால உருவத்துடன் होगा சேர்க்கப்படுகிறது.

Example/ உதாரணம்:–

गया होगा; गये होंगे; गयी होगी; गयी होंगी।
दिया होगा; दिये होंगे; दी होगी; दी होंगी।

Exercises / பயிற்சிகள்

(a) Answer the following questions in the Doubtful Past:–

கீழ்க்கண்ட கேள்விகளுக்கு சந்தேகத்தைக் காட்டும் இறந்த காலத்தில் விடையளிக்கவும்:–

उदा:– यह बात किसने कही? – यह बात राजाजी ने कही होगी।

1. जमनालाजी ने इस सभा को कितने रुपये दिये? 2. क्या रशीदा ने कल चाय पी थी? 3. क्या श्रीरामचंद्र ने त्यागराज को दर्शन दिये थे? 4. क्या सीता ने रामस्वामी को पत्र लिखा? 5. कल राजाजी किस विषय पर बोले? 6. विशाल ने यह किताब कब लिखी? 7. लाला लाजपतराय कहाँ रहे? 8. गोपाल ने रामदास से कितने रुपये लिये? 9. ताजमहल बनवाने में कितने रुपये ख़र्च हुए थे? 10. उस शहर में कितने लोग रहे?

(b) Form complete sentences with the below given verbs:–

கீழ்க்கண்ட வினைச்சொற்களைக் கொண்டு முழுவாக்கியங்கள் அமைக்கவும்:–

(1) गया होगा
(2) दिये होंगे
(3) की होगी
(4) सुनी होगी
(5) लाया होगा
(6) दी होगी
(7) देखे होंगे
(8) लिखी होगी
(9) पढ़ाया होगा

(c) Translate into Hindi:–

ஹிந்தியில் மொழி பெயர்க்கவும்:–

1. Gopalji might have spoken at yesterday's meeting. 2. Japan might have defeated China. 3. Geetha might have lived in Russia for several months. 4. I might have seen this picture. 5. Would the train have arrived? 6. She might have told a lie. 7. They might never have done so. 8. It might have rained there yesterday. 9. He might not have slept last night. 10. They might not have understood your words.

1. கோபால்ஜி நேற்றைய கூட்டத்தில் பேசியிருக்கலாம். 2. ஜப்பான் சீனாவை தோற்கடித்திருக்கக் கூடும். 3. கீதா ரஷ்யாவில் பல மாதங்கள் இருந்திருக்கலாம். 4. நான் இந்தப் படத்தை பார்த்திருக்கலாம். 5. ரயில் வண்டி வந்திருக்குமா? 6. அவள் பொய் பேசியிருக்கலாம். 7. அவர்கள் ஒருபொழுதும் அவ்வாறு செய்திருக்க மாட்டார்கள். 8. நேற்று அங்கே மழை பெய்திருக்கலாம். 9. அவன் நேற்று இரவில் தூங்கியிருக்கமாட்டான். 10. அவர்கள் உன் வார்த்தைகளை புரிந்து கொள்ளாமலிருக்கலாம்.

पाठ - 5

Past Conditional Tense

நிபந்தனையுடன் கூடிய இறந்தகாலம்

(हेतुहेतुमद् भूतकाल)

1. अगर राम यह काम करता,
If Rama had done this work,
ராமன் இவ்வேலையைச் செய்திருந்தால்,

2. अगर गाँधीजी यहाँ आते,
If Gandhiji had come here,
காந்திஜி இங்கே வந்திருந்தால்

3. अगर जापान रूस पर चढ़ाई करता,
If Japan had invaded Russia,
ஜப்பான் ரஷ்யாவின் மீது படையெடுத்திருந்தால்,

4. वह अच्छी तरह पढ़ता, तो परीक्षा में ज़रूर पास होता।
If he had studied well, he would have passed the examination.
அவன் நன்றாகப் படித்திருந்தால், தேர்வில் தேர்ச்சிபெற்றிருப்பான்.

5. हमारे पास धन होता, तो हम ज़रूर मोटर खरीदते।
If we had money, we would certainly have bought a motor-car.
எங்களிடம் பணம் இருந்திருந்தால், நாங்கள் கட்டாயம் கார் வாங்கியிருப்போம்.

6. उस देश के पास काफ़ी तोपें होतीं, तो वह लड़ाई में कभी नहीं हारता।
If that country had enough cannons, it would never have been defeated in the war.
அந்த நாட்டினிடம் போதுமான பீரங்கிகள் இருந்திருந்தால், ஒருபொழுதும் அது போரில் தோற்றிருக்காது.

7. गाँधीजी न होते, तो हमारे देश में एकता कैसे होती?
How could there have been unity in our country but for Gandhiji?
காந்திஜி இல்லாமலிருந்திருந்தால், நம் நாட்டில் ஒற்றுமை எப்படி ஏற்பட்டிருக்கும்?

8. तुम दो दिन और यहाँ ठहरते, तो कलाम जी को ज़रूर देख सकते।
If you had stayed here two days more, you could certainly have seen Kalamji.
நீ இன்னும் இரண்டு நாட்கள் இங்கே தங்கியிருந்தால், கலாம்ஜி அவர்களை அவசியம் பார்த்திருக்க முடியும்.

9. अगर मैं तेज़ चलता, तो गाड़ी के आने के पहले ही स्टेशन पहुँचता।
If I had walked fast, I could have reached the station before the arrival of the train.
நான் வேகமாக நடந்திருந்தால், வண்டி வருவதற்கு முன்னாலேயே ஸ்டேஷனுக்குப் போய் சேர்ந்திருப்பேன்.

Grammar / இலக்கணம்

The past conditional is formed by adding ता, ते, ती to the root of the final verb. After the first clause the sentence 'तो' should be added.

வினைப்பகுதியுடன் ता, ते, ती சேர்ப்பதனால் हेतुहेतुमद् भूत உருவம் கிடைக்கிறது. அப்போது 'तो' என்ற குறிச்சொல்லும் இடம் பெறும்.

मैं खाता — If I had eaten — நான் சாப்பிட்டிருந்தால்
हम खाते — If we had eaten — நாங்கள் சாப்பிட்டிருந்தால்
तुम खाते — If you had eaten — நீ சாப்பிட்டிருந்தால்
आप खाते — If you (resp.) had eaten — நீங்கள் சாப்பிட்டிருந்தால்
वह खाता — If he had eaten — அவன் சாப்பிட்டிருந்தால்
वे खाते — If they had eaten — அவர்கள் சாப்பிட்டிருந்தால்
लड़की खाती — If the girl had eaten — சிறுமி சாப்பிட்டிருந்தால்
लड़कियाँ खातीं — If the girls had eaten — சிறுமிகள் சாப்பிட்டிருந்தால்

हेतुहेतुमद् भूत – The Past Conditional does not express a complete sense. It is only a clause.

हेतुहेतुमद् भूत – முழு அர்த்தத்தைக் கொடுப்பதில்லை. இது வாக்கியத்தின் ஒரு பகுதியேயாகும்.

Exercises / பயிற்சிகள்

(a) Rewrite the following sentences using Conditional Past Tense:–

हेतुहेतुमद् भूत பயன்படுத்திக் கீழ்க்கண்ட வாக்கியங்களை மாற்றி எழுதுக:–

உதா.:– मोती आता है; वह मेरे घर ठहरता है।
मोती आता तो मेरे घर ठहरता।

1. हममें एकता नहीं थी; इसलिए हमारा देश पराधीन था। 2. गोपाल नहीं आया; इसलिए वे खेलने नहीं गये। 3. जब पानी बरसता है; तब मेंढक ज़रूर बोलते हैं। 4. घी में पूड़ी अच्छी बनती है; पर आज घी नहीं है। 5. मेरे पास रुपये नहीं हैं; इसलिए मैंने किताब नहीं ख़रीदी। 6. वह मोटर से यहाँ नहीं आया; इसलिए जल्दी नहीं पहुँचा। 7. धोबी कपड़े नहीं लाया; इसलिए मैं आपके साथ नहीं जा सकता। 8. फ्रांस के पास काफ़ी तोपें नहीं थीं; इसलिए वह लड़ाई में नहीं जीता। 9. आप दवा खाएँगे तो आपकी तबीयत अच्छी हो जाएगी। 10. यहाँ कोई अध्यापक नहीं हैं; होंगे तो मैं हिंदी ज़रूर सीखूँगा।

(b) Translate into Hindi:–

ஹிந்தியில் மொழிபெயர்க்கவும்:–

1. If I had born two minutes earlier, I would have been the Prime Minister. 2. If you had delayed a few minutes more, you would have missed the train. 3. If his health had been good, he would certainly have come to meet me. 4. I would have lent him the money, if he had asked for it. 5. If you had told me before, I would have given my car to you. 6. If my friend had spoken today, I would certainly have gone to the meeting. 7. If he had paid two lakh ruppes for this house, I would have sold it. 8. If Ram had not been there, who would have saved Sugriva from Vali? 9. If I had the money, I would have given one lakh rupees for this picture.

(to delay – देर करना, would have missed the train – गाड़ी नहीं मिलती, to lend – उधार देना)

1. நான் இரண்டு நிமிடம் முன்னால் பிறந்திருந்தால் இந்நாட்டின் பிரதமர் ஆகியிருப்பேன். 2. நீ சில நிமிடங்கள் அதிகமாகத் தாமதித்திருந்தால் வண்டி கிடைத்திருக்காது. 3. அவனுடைய உடல்நிலை சரியாக இருந்திருந்தால் கட்டாயம்

என்னைப் பார்க்க வந்திருப்பான். 4. அவன் கேட்டிருந்தால் நான் அவனுக்குக் கடன் கொடுத்திருப்பேன். 5. நீ முன்னதாகவே சொல்லியிருந்தால் என்னுடைய மோட்டார் வண்டியை உனக்கு கொடுத்திருப்பேன். 6. என் நண்பர் இன்று பேசியிருந்தால் நான் கட்டாயம் கூட்டத்திற்குப் போயிருப்பேன். 7. அவன் இந்த வீட்டிற்கு இரண்டு லட்ச ரூபாய் கொடுத்திருந்தால் நான் இதை விற்றிருப்பேன். 8. ராமர் அங்கே இல்லாமலிருந்திருந்தால் சுக்ரீவனை வாலியிடமிருந்து யார் காப்பாற்றியிருப்பார்? 9. என்னிடம் பணம் இருந்திருந்தால் நான் இந்தப் படத்திற்கு ரூபாய் ஒரு லட்சம் கொடுத்திருப்பேன்.

(தாமதித்தல் – देर करना, வண்டி கிடைத்திருக்காது – गाड़ी नहीं मिलती, கடன் கொடுத்தல் – उधार देना)

पाठ - 6

Habitual Tense / *வழக்கத்தை குறிக்கும் காலம்* / नित्यताबोधक

1. गोपाल रोज़ यहाँ आया करता है।
   Gopal has the habit of coming here every day.
   கோபாலன் தினந்தோறும் இங்கே வருவது வழக்கம்.
2. हम रोज़ सबेरे चाय पिया करते हैं।
   We have the habit of drinking tea every morning.
   நாங்கள் தினந்தோறும் காலையில் தேநீர் குடிப்பது வழக்கம்.
3. वे रोज़ मीनाक्षी मंदिर जाया करते हैं।
   They are in the habit of going to the Meenakshi temple every day.
   அவர் தினந்தோறும் மீனாக்ஷி கோவிலுக்கு செல்வது வழக்கம்.
4. यहाँ बहुत–से लोग आया–जाया करते हैं।
   Many people are used to visit this palce.
   இங்கே ஏராளமான மக்கள் வந்து போய்க் கொண்டிருப்பது வழக்கம்.
5. रोज़ सबेरे टहला करो।
   Make a habit of going for a walk every morning.
   தினந்தோறும் காலையில் உலாவுவதை வழக்கமாக்கிக் கொள்.
6. मैं हर हफ़्ते गाँधीजी को शहद भेजा करता था।
   I used to send honey to Gandhiji every week.
   நான் ஒவ்வொரு வாரமும் காந்திஜிக்கு தேன் அனுப்பி வந்தேன்.
7. यह गाड़ी रोज दो घंटे देर से आया करती थी।
   This train used to come by late two hours every day.
   இந்த வண்டி தினந்தோறும் (வழக்கமாக) இரண்டு மணி நேரம் தாமதமாக வந்து கொண்டிருந்தது.

8. बादशाह अकबर हमेशा गंगाजल पिया करते थे।
Emperor Akbar always used to drink the Ganges water.
அக்பர் பாதுஷா எப்பொழுதும் கங்கை நீர் குடித்து வந்தார்.

9. बादशाह नासिरुद्दीन अपने हाथों से काम करके अपनी रोटी कमाया करते थे।
Emperor Nasiruddin used to earn his bread by working with his own hands.
பாதுஷா நாஸிருத்தீன் தம் கைகளினால் வேலை செய்து சம்பாதிப்பதை வழக்கமாகக் கொண்டிருந்தார்.

10. हम अकसर उनसे मिला करते थे।
We used to meet him/ them often.
நாங்கள் அடிக்கடி அவரைச்/அவர்களைச் சந்திப்பது வழக்கம்.

11. सरला रोज सबेरे स्नान के लिए कावेरी जाया करती थी।
Sarala used to go to the Cauvery for bath every morning.
ஸரளா தினந்தோறும் காலையில் குளிப்பதற்காக காவேரிக்குப் போவது வழக்கம்.

Grammar / இலக்கணம் :–

The habitual Tense is formed by adding "कर" to the past tense of a verb,

வழக்கத்தை குறிப்பதற்காக வினைச் சொல்லின் இறந்தால உருவத்துடன் (ஆண்பால் ஒருமை) "कर" சேர்க்கப்படுகிறது.

(e.g.,) आया करो – Be coming. – வந்து கொண்டிரு.
लिखा करता है – Keeps writing. – வழக்கமாக எழுதிக்கொண்டிருக்கிறான்.
पढ़ा कीजिए – Please be reading. – படித்துக்கொண்டு இருங்கள்.
जाया करो – Be in the habit of going. – வழக்கமாகப் போய்க்கொண்டிரு.
(गया करो – is wrong usage.)
(गया करो – என்பது தவறான உபயோகம்.)

Exercises / பயிற்சிகள்

(a) Change the following sentences into habitual tense:–
கீழ்க்கண்ட வாக்கியங்களை வழக்கத்தைக் குறிக்கும் காலத்தில் மாற்றுக:–

उदा.:– ललिता रोज शाम को यहाँ आती है।
ललिता रोज शाम को यहाँ आया करती है।

1. बंगाली रोज सबेरे चाय पीते हैं। 2. वे मुझे हर काम में रोकते हैं। 3. तुम रोज सबेरे उठकर ठंडे पानी से नहाओ। 4. मैं बचपन में नियम से कसरत करता था। 5. हम खादी कपड़ा पहनते थे। 6. रामदासजी काशी से कपड़े मँगाते हैं। 7. हम रेड्डीजी की तक़रीर सुनने जाते थे। 8. हम बचपन में बकरी का दूध पीते थे। 9. वे अपनी छोटी बहन को बहुत प्यार करते थे। 10. वे अकसर दूसरों की सहायता करते हैं।

(तक़रीर – lecture, சொற்பொழிவு)

(b) Complete the following sentences, using the given verbs in the habitual tense:–

கீழே கொடுக்கப்பட்டுள்ள வினைச்சொற்களின் வழக்கத்தைக் காட்டும் வினைச்சொற்களைக் கொண்டு கீழ்க் கண்ட வாக்கியங்களைப் பூர்த்தி செய்க:–

(ख़रीद; याद कर; मेहनत कर; जा; पी)

1. गोखलेजी देश के लिए बहुत ....।
2. वे मिश्रजी की दूकान से घी ....।
3. हम रोज शाम को कथा सुनने मंदिर ....।
4. सरला रोज नियम से अपना पाठ ....।
5. पानी को उबालकर ....।

(c) Translate into Hindi:–

ஹிந்தியில் மொழிபெயர்க்கவும்:–

1. Always speak in your mother-tongue. 2. The cool breeze from the sea blows in Chennai every evening. 3. People are in the habit of going to Ooty in the summer. 4. We used to buy coconut oil from this shop. 5. Hindus and Muslims used to live peacefully during the reign of Akbar. 6. Rahim used to write poetry in Hindi. 7. I am in the habit of reading the newspaper after drinking tea. 8. Santanam is in the habit of giving speech in Hindi. 9. He is in the habit of writing letters to his friends in English. 10. They were in the habit of spinning for two hours every day.

(to blow – हवा चलना, coconut oil – नारियल का तेल, in the summer – गर्मी के दिनों में, at peace – शांति से, to spin – सूत कातना)

1. எப்பொழுதும் உன்னுடைய தாய்மொழியில் பேசு. 2. சென்னையில் ஒவ்வொரு மாலையிலும் கடலிலிருந்து குளிர்ந்த காற்று வீசுகிறது. 3. மக்கள் கோடையில் உதகமண்டலம் போவது வழக்கம். 4. நாங்கள் இந்தக் கடையிலிருந்து தேங்காய் எண்ணெய் வாங்குவது வழக்கம். 5. அக்பரின் ஆட்சிகாலத்தில் ஹிந்துக்களும் முஸ்லீம்களும் அமைதியுடன் வாழ்ந்து வந்தார்கள். 6. ரஹீம் ஹிந்தியில் செய்யுள்கள் இயற்றி வந்தார்.

7. நான் தேநீர் அருந்திய பிறகு பத்திரிகை படிப்பது வழக்கம். 8. சந்தானம் அவர்கள் ஹிந்தியில் சொற்பொழிவு ஆற்றுவது வழக்கம். 9. அவன் தன் நண்பர்களுக்கு ஆங்கிலத்தில் கடிதங்கள் எழுதி வருகிறான். 10. அவர்கள் ஒவ்வொரு நாளும் இரண்டு மணி நேரம் நூற்பதை வழக்கமாகக் கொண்டிருந்தார்கள்.

पाठ - 7

The usage of होना and पड़ना / *இவைகளின் உபயோகம்*

1. आज मुझे शहर जाना है ।
I have to go to the town today.
இன்று நான் பட்டணம் போக வேண்டியிருக்கிறது.

2. मुझे तुमसे एक बात कहनी है ।
I have to tell you onething.
நான் உன்னிடம் ஒரு விஷயம் சொல்ல வேண்டியிருக்கிறது.

3. क्या ये सब काम मुझे ही करना होगा?
Shall I alone have to do all these works?
இந்த வேலைகளையெல்லாம் நானே செய்ய வேண்டியிருக்குமா?

4. कल उसको डाक्टर के यहाँ से दवा लानी होगी ।
He will have to bring medicine from the doctor's house tomorrow.
டாக்டரிடமிருந்து நாளை அவன் மருந்து வாங்கிக்கொண்டு வரவேண்டியிருக்கும்.

5. मुझे इस घड़ी के लिए हज़ार रुपये देने पड़े ।
I had to pay Rs.1000/- for this watch.
நான் இந்தக் கடிகாரத்திற்காக 1000 ரூபாய் கொடுக்க நேர்ந்தது.

6. मुझे आज ही कोलकत्ता जाना पड़ेगा ।
I shall have to go to Kolkatta today itself.
நான் இன்றே கொல்கத்தா போக நேரிடும்.

7. ग़रीबों को ही सब कुछ सहना पड़ता है ।
The poor alone have to bear everything.
ஏழைகள் தான் எல்லாவற்றையும் பொறுத்துக் கொள்ள நேரிடுகிறது.

8. मुझे इंडियन प्रेस से यह किताब ख़रीदनी पड़ी ।
I had to buy this book from the Indian Press.
நான் இந்தியன் அச்சகத்திலிருந்து இந்தப் புத்தகம் வாங்க நேர்ந்தது.

9. शायद तुमको भी मेरे साथ आना पड़ेगा।
Perhaps you too will have to come with me.
ஒருக்கால் நீயும் என்னுடன் வர நேரிடும்.

Grammar / இலக்கணம்

(1) In the above expressions, होना indicates necessity and पड़ना indicates obligation or compulsion.

மேற்கண்ட வாக்கியங்களில் होना என்பது அவசியத்தையும் पड़ना என்பது கட்டாயத்தையும் குறிக்கின்றது.

(2) The subject of होना and पड़ना is always in the dative.

होना, पड़ना இவைகளின் எழுவாய் எப்பொழுதும் (को) நான்காம் வேற்றுமை உருபுடன் சேர்ந்தே வரும்.

Example :– राम को जाना होगा (राम जाना होगा - is wrong usage)
राम को जाना होगा (राम जाना होगा என்பது தவறான உபயோகம்)

उसको लड़ना पड़ा (वह लड़ना पड़ा - is wrong usage)
उसको लड़ना पड़ा (वह लड़ना पड़ा என்பது தவறான உபயோகம்)

Exercises / பயிற்சிகள்

(a) **Change the following sentences so as to express necessity, compulsion or obligation, without changing the tense of the verb:–**
பின்கண்ட வாக்கியங்களில் உள்ள பயனிலைகளின் காலத்தை மாற்றாமல் அவைகளை 'அவசியம்', 'கட்டாயம்' முதலிய பொருள் தரும்படியாக மாற்றி அமைக்கவும்:–

उदा.:- मोहन सुरेश के साथ जाता है।
सुरेश को मोहन के साथ जाना पड़ता है।

1. मैं कल सबेरे पंडितजी से मिलने जाऊँगा। 2. पिछली लड़ाई में इंग्लैण्ड ने बहुत रुपये ख़र्च किये। 3. वह अपनी घड़ी पाँच सौ रुपये में बेचता है। 4. मैं रोज सबेरे पाँच बजे उठता हूँ। 5. क्या तुम मुंबई मेल से पूना जाओगे? 6. हम अपने देश को संपन्न बनाएँगे। 7. कल शाम को

रज़िया ने भी एक गीत गाया। 8. मैं कल सबेरे की गाड़ी से बेंगलूर आया। 9. आज मैंने खुद रोटियाँ बनायीं। 10. वह कल रात को दो बजे तक जागा।

(b) Complete the following sentences:–

கீழ்க்கண்ட வாக்கியங்களைப் பூர்த்தி செய்க:–

1. वह बीमार था, इसलिए उसे दवा ....।
2. आज मुझे कई चिट्ठियाँ ....।
3. उसको रुपये की ज़रूरत थी, इसलिए उसे अपना घर ....।
4. अहमद को मेरे कारण बहुत तकलीफ़ें ....।
5. तुमको उस घोड़े के लिए एक हज़ार रुपये ....।

(c) Translate into Hindi:–

ஹிந்தியில் மொழிபெயர்க்கவும்:–

1. I had to meet the teacher before 5 o'clock. 2. They will have to send a hundred bags of rice to Kolkatta. 3. You also will have to come to Bangalore with me. 4. He had to speak in Hindi at yesterday's meeting. 5. I had to try hard to buy this picture. 6. You will have to work hard, if you want to pass the examination. 7. Gopal has to come here twice every day. 8. Tippu Sultan had to fight against the Englishmen. 9. She may have to send her son to Bangalore. 10. He had to stitch his shirt himself.

(twice – दो बार, to stitch – सीना, shirt – कुरता)

1. ஐந்து மணிக்கு முன்னால் நான் ஆசிரியரை சந்திக்க வேண்டியிருந்தது. 2. அவர்கள் கொல்கத்தாவுக்கு நூறு மூட்டை அரிசி அனுப்பவேண்டியிருக்கும். 3. நீயும் என்னுடன் பெங்களூருக்கு வரவேண்டியிருக்கும். 4. அவன் நேற்றைய கூட்டத்தில் ஹிந்தியில் பேசநேர்ந்தது. 5. இந்தப் படத்தை வாங்குவதற்கு நான் மிகவும் முயற்சி செய்ய நேரிட்டது. 6. தேர்வில் தேர்ச்சி பெறவிரும்பினால் நீ நன்றாகப் படிக்க வேண்டியிருக்கும். 7. கோபாலன் தினந்தோறும் இரண்டு தடவை இங்கே வரநேரிடுகிறது. 8. திப்புசுல்தான் ஆங்கிலேயர்களுக்கு எதிராகச் சண்டை செய்ய நேர்ந்தது. 9. அவள் தன் மகனைப் பெங்களூருக்கு அனுப்ப வேண்டியிருக்கும். 10. அவன் தன் சட்டையைத் தானே தைத்துக் கொள்ள வேண்டியிருந்தது.

(இரண்டு தடவை – दो बार, தைத்தல் – सीना, சட்டை – कुरता)

पाठ - 8

The usage of 'दे', 'लग' / இவைகளின் உபயோகம்

1. अहमद को घर जाने दो।
Let Ahmed go home.
அஹமதை வீட்டுக்குப் போக விடு.

2. रामदास को दो दिन इस घर में रहने दो।
Let Ramadas stay in this house for two days.
ராமதாஸை இரண்டு நாட்கள் இந்த வீட்டில் வசிக்கவிடு.

3. मुझे आज ही यह किताब खरीदने दो।
Let me buy this book even to-day.
என்னை இன்றே இந்த புத்தகத்தை வாங்கவிடு.

4. गोपाल को बाज़ार जाने दीजिये।
Please let Gopal go to the market.
கோபாலனைக் கடை வீதிக்குப் போகவிடுங்கள்.

5. मैंने अपने लड़के को आज स्कूल नहीं जाने दिया।
I did not let my boy go to school to-day.
நான் என் பையனை இன்று பள்ளிக்கூடம் போக விடவில்லை.

6. मेरे मास्टर कक्षा में किसीको हँसने नहीं देते थे।
My teacher never used to let any one laugh in the class.
என் ஆசிரியர் வகுப்பில் யாரையும் சிரிக்க விடுவதில்லை.

7. क्या लोग उन्हें देश की सेवा करने देंगे?
Will people let him do service to the country?
மக்கள் அவரைத் தேச சேவை செய்ய விடுவார்களா?

8. कल सबेरे से ही यहाँ पानी बरसने लगा।
It began to rain here even yesterday morning.
நேற்றுக் காலையிலிருந்தே இங்கே மழை பெய்ய ஆரம்பித்தது.

9. वह पगली औरत सबको गालियाँ देने लगी।
That mad woman began to abuse everybody.
அந்தப் பைத்தியம் பிடித்த பெண் எல்லோரையும் திட்ட ஆரம்பித்தாள்.

10. सांबमूर्तिजी तेलुगु में बोलने लगे।
Mr. Sambamurti began to speak in Telugu.
சாம்பமூர்த்தி தெலுங்கில் பேச ஆரம்பித்தார்.

11. अकबर आठ बजे ही सोने लगता है।
Akbar begins to sleep even at 8 o'clock.
அக்பர் எட்டு மணிக்கே தூங்கத் தொடங்குகிறான்.

12. मैं भी कल से हिन्दी सीखने लगूँगा।
I too will begin to learn Hindi from tomorrow.
நானும் நாளையிலிருந்து ஹிந்தி கற்றுக்கொள்ளத் தொடங்குவேன்.

Grammar:-- दे means "let" or "allow" and लग means "begin to". Both are used after the infinitive of a verb, with the changed into:- e.g., पढ़ने देना, जाने देना, देखने लगना When is in the past tense, the subject is followed by

இலக்கணம்–दे என்பது 'அனுமதிப்பது' என்ற அர்த்தத்தையும், लग என்பது 'ஆரம்பிப்பது' என்ற அர்த்தத்தையும் கொடுக்கின்றன. पढ़ने देना, जाने देना, देखने लगना போன்று உபயோகப்படுகின்றன.

1. मैंने राम को जाने दिया। 2. उसने मुझे खेलने नहीं दिया। 3. वह राम को मारने लगा। 4. सीता और कमला हिन्दी सीखने लगीं।

Exercises / பயிற்சிகள்

(a) Fill in the blanks:–

கோடிட்ட இடங்களை பூர்த்தி செய்யவும்:–

1. जब बच्चा .... तब माँ ने आकर उसे गोद में उठा लिया। (रो) 2. मास्टर साहब ने आज की सभा में मुझे नहीं ....। (बोल) 3. तुमने उस छोटे लड़के को अपने साथ क्यों नहीं .... ? (खेल) 4. जब पानी .... तब हम घर के अंदर चले गये। (बरस) 5. जब मीराबाई .... है तब सुननेवाले आश्चर्य में पड़ जाते हैं। (गा) 6. मैं तुम्हें यह बूढ़ी गाय नहीं .... । (बेच) 7. क्या आप अपने बगीचे से मुझे कुछ फूल .... ? (तोड़) 8. जब सुबह हुआ तब पूरब दिशा में लाली .... ।(फैल) 9. कृपा कर मुझे अपने साथ ....। (रह) 10. जब कृष्ण सात बरस के हुए तब गायें ....। (चरा)

(b) Translate into Hindi:–

ஹிந்தியில் மொழிபெயர்க்கவும்:–

1. The teacher allowed his pupils to go home early. 2. Gandhiji began to work for the freedom of the country. 3. Narayan's pupils will begin to talk in Hindi in three months. 4. When the sun began to set, the birds began to chirp. 5. Joseph did not allow me to buy that horse.

1. ஆசிரியர் தம் மாணவர்களை முன்னதாகவே வீட்டிற்கு போகவிட்டார். 2. காந்திஜி தேசத்தின் விடுதலைக்கு வேலை செய்ய ஆரம்பித்தார், 3. நாராயணின் மாணவர்கள் மூன்று மாதங்களில் ஹிந்தியில் பேச ஆரம்பிப்பார்கள். 4. சூரியன் அஸ்தமிக்க ஆரம்பித்ததும் பட்சிகள் கலகலவென்று சத்தமிட ஆரம்பித்தன. 5. ஜோஸப் என்னை அந்தக் குதிரையை வாங்க அனுமதிக்கவில்லை,

पाठ - 9

The usage of 'कि' / யின் உபயோகம்

1. सीता कहती है कि मैं कल तंजाऊर जाऊँगी।
Sita says that she will go to Tanjore tomorrow.
நான் நாளை தஞ்சாவூருக்குப் போவேன் என்று சீதை சொல்லுகிறாள்.

2. लड़के ने कहा कि मैं छुट्टी के दिन स्कूल नहीं जाऊँगा।
The boy said that he would not go to school on a holiday.
விடுமுறை நாட்களில் பள்ளிக்கூடம் செல்லமாட்டேன் என்று பையன் சொன்னான்.

3. अशरफ़ ने कहा कि वह मक्का जाना चाहता है।
Ashraf said that he wants to go to Mecca.
அஷ்ரப் மக்காவுக்குச் செல்ல விரும்புவதாகச் சொன்னான்.

4. मास्टर ने कहा कि वे छुट्टी के दिन स्कूल में नहीं रहेंगे।
The teacher said that he would not be in the school on a holiday.
விடுமுறை நாட்களில் பள்ளிக்கூடத்தில் இருக்கமாட்டேன் என்று ஆசிரியர் சொன்னார்.

5. मैंने राजाजी से पूछा कि हमको स्वराज कब मिलेगा।
I asked Rajaji when we shall get Swaraj.
நமக்கு எப்பொழுது ஸ்வராஜ்யம் கிடைக்கும் என்று நான் ராஜாஜியிடம் கேட்டேன்.

6. माँ ने मुझसे कहा कि तुम धूप में मत जाओ।
Mother told me not to go in the sun.
வெயிலில் போகாதே என்று தாயார் என்னிடம் சொன்னாள்.

7. मैंने अपने दोस्त से पूछा कि तुम यहाँ कितने दिन ठहरोगे।
I asked my friend how many days he would stay here.
நீ இங்கே எத்தனை நாட்கள் தங்குவாய் என்று நான் என் நண்பனைக் கேட்டேன்.

8. शेखर से कहो कि वह जल्दी घर जाए।
Tell Sekhar that he should go home soon.
சேகரிடம் அவன் சீக்கிரம் வீட்டிற்குப் போகவேண்டும் என்று சொல்.

9. नौकर से कहो कि वह बाज़ार जाकर कुछ फल लावे।
Tell the servant to go to market and bring some fruits.
கடை வீதிக்குச் சென்று கொஞ்சம் பழம் வாங்கி வரும்படி வேலைக்காரனிடம் சொல்.

10. मैं नहीं कह सकता कि वे मुझे जानते हैं कि नहीं।
I cannot say whether he knows me or not.
அவர் என்னை அறிவாரா இல்லையா என்று நான் சொல்ல முடியாது.

11. हमने देखा कि मैदान में कुछ लड़के खेल रहे थे।
We saw that a few children were playing in the play ground.
மைதானத்தில் சில பையன்கள் விளையாடிக் கொண்டிருந்ததை நாங்கள் கண்டோம்.

12. मुझे बड़ी खुशी हुई कि आप मेरे यहाँ आये।
I was very glad that you come to my house.
நீங்கள் என் விட்டிற்கு வந்தது எனக்கு மிகவும் மகிழ்ச்சி அளித்தது.

13. तुम दिल्ली जाओगे कि कानपुर?
Will you go to Delhi or Kanpur?
நீ தில்லிக்குப் போவாயா அல்லது கான்பூருக்கா?

14. आज आप दफ्तर जाएँगे कि नहीं?
Will you go to the office to-day or not?
இன்று நீங்கள் ஆபீஸுக்குப் போவீர்களா இல்லையா?

Grammar:--1 कि means "that" (conjunction). In Hindi, only the direct speech is used. The actual words of the speaker are reproduced after कि .

(e.g.) -- राम ने कहा कि मैं घर जाऊँगा।

Note:-- But some modern writers use the indirect form also.

(e.g.) -- अशरफ़ ने कहा कि वह मक्का जाना चाहता है।

2. कि may also sometimes denote reason in sentences like the following:-

(e.g.) -- मुझे बड़ी खुशी हुई कि आप मेरे यहाँ आये।

3. कि may also mean "or" in sentences like the following:-

मेरी किताब तुम्हारे पास है कि नहीं?

तुम आज शहर जाओगे कि नहीं?

இலக்கணம்--1 कि என்பதற்கு 'என்று' என்பது பொருள். ஹிந்தியில் कि என்பதற்குப் பிறகு பேசுபவர்கள் சொல்லும் வார்த்தைகள் அப்படியே உபயோகிக்கப்படுகின்றன. (Direct speech).

(உ-ம்)–राम ने कहा कि मैं घर जाऊँगा।

குறிப்பு:–சில நவீன எழுத்தாளர்கள் Indirect speech ஐயும் உபயோகிக்கிறார்கள்.

(உ-ம்)–अशरफ़ ने कहा कि वह मक्का जाना चाहता है।

2. कि சில சமயங்களில் காரணத்தையும் குறிக்கும்.

(உ-ம்)–मुझे बड़ी खुशी हुई कि आप मेरे यहाँ आये।

3. कि என்பது கீழ்கண்ட வாக்கியங்களில் உள்ளவை போன்று 'அல்லது' என்ற அர்த்தத்தையும் குறிக்கும்.

मेरी किताब तुम्हारे पास है कि नहीं?

तुम आज शहर जाओगे कि नहीं?

Exercises / பயிற்சிகள்

(a) Rewrite the following, using कि:–

कि உபயோகித்துக் கீழ்கண்டவைகளை மாற்றி அமைக்கவும்:–

उदा.:– हरि को मैंने रोते हुए देखा–मैंने देखा कि हरि रो रहा था।

1. मैंने जवाहरलालजी को चरखा चलाते हुए देखा। 2. बेंगलूर-मेल कब जाएगा, मैंने स्टेशन-मास्टर से पूछा। 3. हमारा देश सब से बढ़कर है, ऐसा तिलकजी ने कहा था। 4. आज की सभा में आप बोलेंगे या नहीं। 5. मोहनजोदड़ो की सभ्यता सब से पुरानी थी, ऐसा विद्वानों का कहना है। 6. आप गोपालदासजी को जानते हैं या नहीं? 7. आप उनसे मेरे साथ कलकत्ता जाने को कहिये। 8. रशीदा ने कहा, मेरी क़लम खो गयी है। 9. मैंने उस मुसाफ़िर से पूछा, तुम कहाँ के रहनेवाले हो? 10 इतिहास ने जहाँगीर को इन्साफ़-पसंद बताया है।

(इन्साफ़-पसंद - நீதியை விரும்புவோன் - lover of justice; सभ्यता - நாகரிகம் - civilization)

(b) Translate into Hindi:–

ஹிந்தியில் மொழிபெயர்க்கவும்:–

1. His mother told him that he should not tell lies. 2. Gopal said that his brother was not well. 3. The doctor told the patient that he should not eat anything for two days. 4. Will Satyamurti speak in Tamil or in English. 5. Will you go to Bangalore first or to Mysore.

1. எவனும் பொய் சொல்லக்கூடாது என்று அவனுடைய தாயார் அவனிடம் சொன்னார். 2. அவனுடைய சகோதரனுக்கு உடல்நலமில்லை என்று கோபாலன் சொன்னார். 3. இரண்டு நாட்களுக்கு ஒன்றும் சாப்பிடக்கூடாதென்று டாக்டர் நோயாளியிடம் சொன்னார். 4. சத்தியமூர்த்தி தமிழில் பேசுவாரா அல்லது ஆங்கிலத்திலா? 5. நீ முதலில் பெங்களூருக்கு போவாயா அல்லது மைசூருக்கா?

पाठ - 10

Compound Verb / संयुक्त क्रियाएँ / கூட்டு வினைகள்

जा, दे, ले

1. हरि कल मैसूर चला गया।
Hari went away to Mysore yesterday.
ஹரி நேற்று மைசூருக்கு போய்விட்டான்

2. तुम परसों कहाँ चले गये थे?
Where had you gone away the day before yesterday?
நீ முந்தாநாள் எங்கே போயிருந்தாய்?

3. सरला आठ बजे ही सो गयी।
Sarala fell asleep even at 8 o'clock.
சரளா எட்டு மணிக்கே தூங்கிவிட்டாள்.

4. जोसफ़ की क़लम खो गयी।
Joseph's pen has been lost.
ஜோஸப்பின் பேனா காணாமல் போய்விட்டது.

5. अब्दुल का घोड़ा आज सबेरे मर गया।
Abdul's horse died this morning.
அப்துலின் குதிரை இன்று காலை இறந்துவிட்டது.

6. अशोक ने अपना सब धन गरीबों को दे दिया।
Ashok gave away all his wealth to the poor.
அசோகன் தன் பணத்தையெல்லாம் ஏழைகளுக்குக் கொடுத்துவிட்டேன்.

7. मैंने उसकी सब किताबें वापस कर दीं।
I returned all his books.
நான் அவனுடைய எல்லாப் புத்தகங்களையும் திருப்பிக் கொடுத்துவிட்டேன்.

8. तुम्हारी क़लम किसने तोड़ दी?
Who broke your pen?
உன்னுடைய பேனாவை எவன் ஒடித்துவிட்டான்?

9. मैं कल उसके सब रुपये दे दूँगा।
I will pay back all his money tomorrow.
நான் நாளை அவனுடைய பணத்தையெல்லாம் கொடுத்துவிடுவேன்.

10. रामदास ने अपना मकान चार लाख रुपये में बेच दिया।
Ramdas sold away his house for four lakhs rupees.
ராமதாஸ் தன்னுடைய வீட்டை நான்கு லட்சம் ரூபாய்க்கு விற்றுவிட்டான்.

11. उस नटखट लड़के ने अपना हाथ तोड़ लिया।
That naughty boy broke his hand.
அந்தக் குறும்புக்காரப் பையன் தன் கையை ஒடித்துக் கொண்டான்.

12. मैं आपकी बात मान लूँगा।
I will accept your word.
நான் உங்களுடைய வார்த்தையை ஒப்புக்கொள்வேன்.

13. अपने खर्च के लिए कुछ पैसे ले लो।
Take some money for your expenses.
உன் செலவுக்காக கொஞ்சம் பணம் எடுத்துக்கொள்.

14. मैंने उससे अपनी घड़ी ले ली।
I took (back) my watch from him.
நான் அவனிடமிருந்து என்னுடைய கடிகாரத்தை வாங்கிக் கொண்டேன்.

Grammar:-- A compound verb is used as an intensive, i.e., to give force to a statement.

When a compound verb is conjugated, the second verb alone undergoes a change;

[e.g.]	मैं सो गया	हम सो गये
	तुम सो गये	आप सो गये
	राम सो गया	सीता सो गयी

चला गया (went away) is an exception to this rule.

[e.g.] राम चला गया, हम चले गये, सीता चली गयी

When ले is used, the effect of the verb is on the doer, and when दे is used, the effect is on others,

[e.g.]– मैंने वह घड़ी ले ली। – (took back)
मैंने वह घड़ी दे दी। – (gave away)
हाथ तोड़ लिया। – अपना हाथ तोड़ लिया।
हाथ तोड़ दिया। – दूसरे का हाथ तोड़ दिया।

Compound verbs are seldom used in negative sentences.

[e.g.] It is not correct to say-- वह नहीं मर गया, वह नहीं चली गयी, मैंने नहीं दे दिया–
The correct forms are-- वह नहीं मरा, वह नहीं गयी, मैंने नहीं दिया।

இலக்கணம்-- வாக்கியத்தின் அர்த்தத்திற்குப் பலம் கொடுப்பதற்காகக் கூட்டுவினை சேர்க்கப்படுகிறது. கூட்டு வினைச்சொல்லில் இரண்டாவதாக வரும் வினையே எண், பால் முதலியவற்றாலான மாறுபாடுகளை அடைகின்றது.

(உ-ம்)– मैं सो गया हम सो गये
तुम सो गये आप सो गये
राम सो गया सीता सो गयी

चला गया (போய்விட்டான்) என்பது இவ்விதிக்கு ஒரு விலக்காகும்.

(உ-ம்)–राम चला गया, हम चले गये, सीता चली गयी

ले உபயோகிக்கும்பொழுது வினையின் பலன் அதைச் செய்பவனையும், दे உபயோகிக்கும்பொழுது மற்றவர்களையும் சார்கிறது.

(உ-ம்)– मैंने वह घड़ी ले ली। – (திரும்ப வாங்கிக் கொண்டேன்)
मैंने वह घड़ी दे दी। – (கொடுத்துவிட்டேன்)
हाथ तोड़ लिया। – अपना हाथ तोड़ लिया।
हाथ तोड़ दिया। – दूसरे का हाथ तोड़ दिया।

கூட்டுவினைகள் எதிர்மறை வாக்கியங்களில் உபயோகிக்கப்படுவதில்லை.

(உ-ம்)– वह नहीं मर गया, वह नहीं चली गयी, मैंने नहीं दे दिया– என்று சொல்வது தவறு. वह नहीं मरा, वह नहीं गयी, मैंने नहीं दिया– என்பவையே சரியானவையாகும்.

Exercises / *பயிற்சிகள்*

(a) Fill in the blanks with compound verbs:–

கூட்டுவினைகள் உபயோகித்துக் கோடிட்ட இடங்களைப் பூர்த்தி செய்யவும்:–

1. मेरे भाई आज सबेरे की गाड़ी से कलकत्ता ....। (चल) 2. उस पागल आदमी ने घर में आग ....। (लगा) 3. तुमने मेरी किताब कहाँ ....? (रख) 4. यह दवा अच्छी है, इसे ....। (पी) 5. मेरी नानी बहुत बीमार थी, कल ....। (मर) 6. माँ ने प्यार से बच्चे का मुँह ....। (चूम) 7. कल बाज़ार में उन्होंने अपना पर्स ....। (खो) 8. हम बहुत थके थे, इसलिए घर आते ही ....। (सो) 9. शिवाजी ने औरंगज़ेब को भी ....। (हरा) 10. उस भूखे आदमी ने सब रोटियाँ ....। (खा) 11. ज़मींदार ने उस आदमी का सब धन ....। (ले) 12. आपने उसकी कलम क्यों नहीं वापस ....? (दे)

(b) Translate into Hindi:–

ஹிந்தியில் மொழிபெயர்க்கவும்:–

1. Last evening a boy fell down from a tree. 2. My servant went away to the market even at two 'O clock. 3. Narayan has sold off all his old books. 4. I have bought his house for ten lakhs. 5. Why did you go to sleep so early?

1. நேற்று மாலை ஒரு பையன் மரத்திலிருந்து விழுந்துவிட்டான். 2. என் வேலைக்காரன் இரண்டு மணிக்கு கடைவீதிக்கு போய்விட்டான். 3. நாராயணன் தன்னுடைய பழைய புத்தகங்களையெல்லாம் விற்று விட்டான். 4. நான் அவனுடைய வீட்டை ரூபாய் பத்து லட்சத்தில் வாங்கி விட்டேன். 5. நீ ஏன் இவ்வளவு முன்னதாகவே தூங்கச் சென்று விட்டாய்.

पाठ - 11

Adjectives of Comparison / *பெயர் உரிச்சொற்களின் பாகுபாடு*

विशेषणों की तुलना

1. भरत राम से छोटा था।
Bharat was younger than Rama.
பரதன் ராமனைவிடச் சிறியவன்.

2. रविबाबू गाँधीजी से आठ साल बड़े थे।
Ravi babu was eight years elder to Gandhiji.
ரவிபாபு காந்திஜியைக் காட்டிலும் எட்டு வயது (வருடம்) பெரியவர்.

3. यह किताब उस किताब से मोटी है।
This book is thicker than that book.
இந்தப் புத்தகம் அந்தப் புத்தகத்தைவிட பருமனானது.

4. क्या गुड़ चीनी से ज़्यादा मीठा होता है?
Is jaggery sweeter than sugar?
வெல்லம் சர்க்கரையைவிட அதிகம் இனிப்பானதா?

5. हिमालय सबसे ऊँचा पहाड़ है।
The Himalaya is the highest mountain.
இமயமலை எல்லாவற்றையும் விட உயரமான மலை.

6. गंगा सबसे चौड़ी नदी है।
The Ganges is the broadest river.
கங்கை எல்லாவற்றையும் விட அகலமான நதி.

7. केला सबसे सस्ता फल है।
The plantain is the cheapest fruit.
வாழைப்பழம் எல்லாவற்றைக் காட்டிலும் மலிவான பழம்.

8. माँ का दूध गाय के दूध से बेहतर होता है।
Mother's milk is superior than cow's milk.
தாய்ப்பால் பசுவின் பாலைவிடச் சிறந்தது.

9. बकरी का दूध सबसे बढ़कर फ़ायदेमंद होता है।
Goat's milk is most beneficial.
ஆட்டின் பால் எல்லாவற்றைக் காட்டிலும் நன்மை பயப்பதாகும்.

10. इस बाज़ार में अच्छे से अच्छे फल बिकते हैं।
The best fruits are sold in this market.
இந்தக் கடைவீதியில் மிகவும் நல்ல பழங்கள் விற்கப்படுகின்றன.

11. सस्ती से सस्ती चीज़ें यहाँ बिकती हैं।
The cheapest articles are sold here.
மிகவும் மலிவான பொருட்கள் இங்கே விற்பனையாகின்றன.

12. वे बढ़िया से बढ़िया कपड़ा पहनते थे।
They used to wear the best clothes.
அவர்கள் மிகவும் நேர்த்தியான துணி உடுத்தி வந்தார்கள்.

Grammar / இலக்கணம் :–

(a) The comparative degree is formed with help of the word 'से'.

இரண்டு பொருட்களை ஒப்பிட்டு உயர்வு தாழ்வுகளைக் காண்பிக்கும்பொழுது (Comparative) 'से' என்னும் உருபு உபயோகிக்கப்படுகிறது.

Example :– यह घर उस घर से बड़ा है। This house is bigger than that house.
இந்த வீடு அந்த வீட்டைவிடப் பெரியது.

(b) The superlative degree is formed with the help of the word 'सबसे'

ஒரு பொருள் எல்லாவற்றிலும் மேன்மையானது அல்லது தாழ்வானது என்னும் அர்த்தத்தைக் குறிப்பதற்கு (Superlative) 'सबसे' (எல்லாவற்றையும் விட) என்னும் பதம் உபயோகிக்கப்படுகிறது.

Example :– यह घर सबसे बड़ा है। This house is the biggest of all.
இந்த வீடு எல்லாவற்றிலும் பெரியது.

(c) When no other object of comparision is mentioned, the adjective is repeated.

ஒப்பிடப்படும் பொருள் குறிக்கப்படாவிட்டால் பெயருரிச்சொல்லே இரட்டிப்பாக்கப்படுகிறது.

Example :– बड़े से बड़ा आदमी – The biggest man. – மிகப் பெரிய மனிதன்.
अच्छे से अच्छा घोड़ा– The best horse. – மிகவும் நல்ல குதிரை.

(d) Sometimes ज़्यादा, बढ़कर etc., are used to express comparision.

சில சமயங்களில் ஒப்பிட்டுக் காட்டும்பொழுது ज़्यादा, बढ़कर முதலிய சொற்களும் உபயோகிக்கப்படுகின்றன.

Exercises / *பயிற்சிகள்*

(a) Rewrite each sentence, bringing in words of comparision:–

ஒப்பிட்டுக்காட்டும் சொற்களை உபயோகித்துக் கீழ்க்கண்ட வாக்கியங்களை மாற்றி எழுதுக:–

उदा.:– राम बड़े थे, लक्ष्मण छोटे।
राम लक्ष्मण से बड़े थे।
लक्ष्मण राम से छोटे थे।

1. कावेरी उतनी लंबी नहीं है, जितनी गंगा। 2. आम ज़्यादा मीठा है, केला कम। 3. कटहल ज़्यादा मीठा है, दूसरे सब फल कम। 4. वह अंग्रेज़ी बहुत जानता है, हिन्दी कम। 5. गुलाब का फूल बहुत सुन्दर है, दूसरे फूल कम। 6. हिन्दुस्तान बहुत पवित्र देश है, दूसरा कौन-सा देश इतना पवित्र है। 7. माँ बच्चे को जितना प्यार देती है, उतना किसी को नहीं। 8. नेल्लूर में बहुत अच्छी गायें मिलती हैं। 9. चेन्नई में नारियल बहुत सस्ता बिकता है। 10. तुम्हारी क़लम उतनी अच्छी नहीं है जितनी मेरी।

(कटहल – jack fruit, பலாப்பழம் गुलाब – rose, ரோஜா)

(b) Use the following in complete sentences:–

பின் கண்டவற்றை முழு வாக்கியங்களில் உபயோகப்படுத்துக:–

बड़े से बड़ा; मोटे से मोटा; सस्ते से सस्ता; नारियल से छोटा; हाथी से बड़ा; शरबत से मीठा; सबसे बढ़कर अक़्लमंद, इमली से ज़्यादा खट्टा; कम मीठी भाषा; ताजमहल से ज़्यादा सुन्दर।

(c) Answer the following:–

பின் கண்டவற்றிற்கு விடை தருக:–

1. क्या हिमालय दूसरे पहाड़ों से कम ऊँचा है? 2. क्या तंजाऊर चेन्नई से बड़ा शहर है? 3. क्या तुमको अंग्रेज़ी हिन्दी से ज़्यादा आसान मालूम होती है? 4. क्या सोना चाँदी से ज़्यादा महँगा है? 5. क्या आपको विदेशी चीज़ें सबसे ज़्यादा पसंद हैं?

(d) Translate into Hindi:–

ஹிந்தியில் மொழிபெயர்க்கவும்:–

1. Gold is costlier than silver. 2. Milk is denser than water. 3. Plantain leaves are the broadest of all leaves. 4. None in this world is dearer than (one's) mother. 5. Wheat is more nutritious than rice. 6. He is richer than others. 7. He is the richest man in this district. 8. The best men in this town are my friends. 9. The Palani temple is not less famous than the Meenakshi temple. 10. Wheat is least used in this province. 11. You must get at least 35 marks to pass the examination. 12. I can eat at the most ten mangoes.

(denser – गाढ़ा, nutritious – पुष्टिकर, फ़ायदेमंद, famous – प्रसिद्ध, least – कम से कम)

1. தங்கம் வெள்ளியைவிட விலையுயர்ந்தது. 2. பால் தண்ணீரைவிட கனமானது. 3. வாழை இலைகள் எல்லா இலைகளையும் விட அகலமானவை. 4. தாயாரைவிடப் பிரியமானவர்கள் உலகில் யாருமில்லை. 5. கோதுமை அரிசியைவிடச் சத்துள்ளது. 6. அவன் மற்றவர்களை விடப் பணக்காரன். 7. அவன் இந்த மாவட்டத்தில் எல்லோரையும் விடப் பெரிய பணக்காரன். 8. இந்த நகரில் உள்ள மிகவும் நல்ல மனிதர்களெல்லாம் என்னுடைய நண்பர்கள். 9. பழனி கோவில் மீனாக்ஷி கோவிலைவிடக் குறைவாகப் புகழ் பெற்றதல்ல. 10. கோதுமை இந்த மாநிலத்தில் மிகவும் குறைவாக உபயோகப்படுத்தப் படுகிறது. 11. நீ தேர்வில் தேர்ச்சி பெறகுறைந்தபட்சம் 35 சதவிகித மதிப்பெண்கள் பெறவேண்டும். 12. என்னால் அதிகபட்சம் பத்து மாம்பழங்கள் சாப்பிட முடியும்.

(கனமான – गाढ़ा, சத்துள்ள – पुष्टिकर, फ़ायदेमंद, புகழ் பெற்ற – प्रसिद्ध, குறைந்தபட்சம் – कम से कम)

पाठ - 12

Active and Passive Voices / *செய்வினை மற்றும் செயப்பாட்டு வினை* / कर्तृवाच्य – कर्मवाच्य

Grammar / *இலக்கணம்* :–

The passive voice is not very common in Hindi. It is formed by adding "जा" to the past tense of a verb.

செயப்பாட்டுவினை ஹிந்தியில் குறைவாகவே உபயோகிக்கப் படுகிறது. ஒருவினைச் சொல்லின் இறந்தகால உருவத்துடன் "जा" சேர்ப்பதனால் செயப்பாட்டு வினை உருவம் கிடைக்கின்றது.

Example :– खा – खाया जा; पढ़ – पढ़ा जा; देख – देखा जा

In a passive voice sentence the object becomes the subject, and so the verb agrees with it in number and gender.

செயப்பாட்டுவினை வாக்கியத்தில் செய்வினை வாக்கியத்தில் செயப்படு பொருள் எழுவாயாக மாறுகிறது. ஆகையால் வினைச்சொல் செயப்படுபொருளின் எண், பால் ஆகியவற்றிற்கு ஏற்ப அமையும்.

Example :– मुझसे फल नहीं खाया जाएगा।

मुझसे रोटी नहीं खायी जाएगी।

राम से कई घोड़े खरीदे गये।

उस आदमी से दो ही चिट्ठियाँ लिखी गयीं।

When an intransitive verb is changed into the passive voice, it is called the **Impersonal Voice (भाव वाच्य) ।**

செயப்படுபொருள் குன்றியவினை செயப்பாட்டுவினையாக மாறும்போது (भाव वाच्य) எனப்படுகிறது. தமிழில் இவ்வாறு மாறுவது இல்லை. எனவே இவ்வகை வாக்கியங்களை தமிழில் மொழி பெயர்க்க முடியாது.

Example :–

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**	**भाववाच्य**
राम रोटी खाता है।	राम से रोटी खायी जाती है।	–
सरला फल खाती है।	सरला से फल खाया जाता है।	–
मैं पाठ पढ़ती हूँ।	मुझसे पाठ पढ़ा जाता है।	–
मैं कहानी पढ़ता हूँ।	मुझसे कहानी पढ़ी जाती है।	–
वह दो पत्र लिखेगा।	उससे दो पत्र लिखे जाएँगे।	–
वे हिंदी बोले।	उनसे हिंदी बोली गयी।	–
वह बूढ़ी चल नहीं सकती।	–	उस बूढ़ी से चला नहीं जाता।
मैं सुबह-सुबह उठ नहीं सका।	–	मुझसे सुबह-सुबह उठा नहीं गया।
हम तेज़ दौड़ नहीं सकेंगे।	–	हमसे तेज़ दौड़ा नहीं जाएगा।

अभ्यास

वाच्य बदलिए।

(अ) (1) मोती ने यह काम किया। (2) जोसफ़ ने यह चिट्ठी लिखी। (3) आज हम रोटी नहीं बनाएँगे। (4) वह इतनी दूर नहीं चल सकता। (5) शेखर दिन में नहीं सोया।

(आ) (1) राम से रावण मारा गया। (2) अख़बारों में ख़बरें छापी जाती हैं। (3) हमसे अंग्रेज़ी नहीं बोली जाती। (4) मुझसे तड़के नहीं उठा जाता। (5) कहा जाता है कि यूरप में गुलाम बेचे जाते थे।

पाठ - 13

संख्या

अभ्यास

निम्नलिखित संख्याओं को अक्षरों में लिखिए।

अंतर्राष्ट्रीय रूप	देवनागरी अंक	अंतर्राष्ट्रीय रूप	देवनागरी अंक	अंतर्राष्ट्रीय रूप	देवनागरी अंक	अंतर्राष्ट्रीय रूप	देवनागरी अंक	अंतर्राष्ट्रीय रूप	देवनागरी अंक
1	१	21	२१	41	४१	61	६१	81	८१
2	२	22	२२	42	४२	62	६२	82	८२
3	३	23	२३	43	४३	63	६३	83	८३
4	४	24	२४	44	४४	64	६४	84	८४
5	५	25	२५	45	४५	65	६५	85	८५
6	६	26	२६	46	४६	66	६६	86	८६
7	७	27	२७	47	४७	67	६७	87	८७
8	८	28	२८	48	४८	68	६८	88	८८
9	९	29	२९	49	४९	69	६९	89	८९
10	१०	30	३०	50	५०	70	७०	90	९०
11	११	31	३१	51	५१	71	७१	91	९१
12	१२	32	३२	52	५२	72	७२	92	९२
13	१३	33	३३	53	५३	73	७३	93	९३
14	१४	34	३४	54	५४	74	७४	94	९४
15	१५	35	३५	55	५५	75	७५	95	९५
16	१६	36	३६	56	५६	76	७६	96	९६
17	१७	37	३७	57	५७	77	७७	97	९७
18	१८	38	३८	58	५८	78	७८	98	९८
19	१९	39	३९	59	५९	79	७९	99	९९
20	२०	40	४०	60	६०	80	८०	100	१००

1,000 **1,00,000** **1,00,00,000**

पाठ - 14

Combine the Sentences/*வாக்கியத்தை இணைக்கவும்*/वाक्य जोड़ना

दो या अधिक वाक्यों को जोड़कर एक वाक्य बनाया जा सकता है। वाक्यों को जोड़ने का काम कई तरह से हो सकता है। लेकिन, इसलिए, क्योंकि, फिर भी, और, नहीं तो, इतना.....कि आदि शब्दों का उपयोग करके वाक्यों को जोड़ा जा सकता है।

अभ्यास

वाक्यों को मिलाकर लिखिए।

(1) कुत्ता उठा। वह भाग गया। (2) मुसाफ़िर थक गया। वह आराम करने के लिए लेट गया। (3) मैं दो दिन से बीमार हूँ। मैं अभी स्कूल नहीं जा सकता। (4) वह बोलना चाहती थी। वह चुप रही। (5) जल्दी जाओ। गाड़ी नहीं मिलेगी। (6) वह बहुत बीमार है। चल–फिर नहीं सकता। (7) ये अब्दुल हैं। ये मेरे दोस्त हैं। (8) वह एक गली में रहता है। वह नदी के पास है। (9) पुलिस आयी। लोग भाग गये। (10) रात आयी। चारों ओर अंधेरा फैल गया।

पाठ - 15

Correct & Incorrect Sentences/சரியான மற்றும் தவறான வாக்கியங்கள்/ शुद्ध और अशुद्ध वाक्य

हम अपनी मातृभाषा के प्रभाव से कभी–कभी हिंदी का अशुद्ध प्रयोग भी करते हैं। हिंदी का शुद्ध प्रयोग सीखकर इससे हमें बचना चाहिए। नीचे कुछ ऐसे वाक्य दिये जा रहे हैं, जिनको बोलने और लिखने में विद्यार्थी अकसर ग़लती करते हैं।

अभ्यास

शुद्ध रूप बनाइए :-

(1) यह एक किताब। (2) मेरा नाम गोपाल। (3) मैंने एक रुपया पूछा। (4) मैंने उसको कहा। (5) राम ने उसके पास कहा। (6) उसको पूछो। (7) सीता के पास पूछो। (8) मैं कल राम को मिला। (9) दो दिन के लिए छुट्टी दीजिए। (10) मेरे लिए दो रुपये दीजिए। (11) गाँधीजी ने देश को सेवा की। (12) मैं उसके घर को गया। (13) रवि को एक लड़की थी। (14) कुछ पानी दीजिए। (15) वह नहीं मर गया।

पाठ - 16

Conversation/உரையாடல்/बातचीत

बातचीत अनेक प्रकार की है। 'मध्यमा' के छात्रों को 'बातचीत' लिखने का अभ्यास होना चाहिए। इससे भाषा का बोलचाल रूप भी सुदृढ होता है।

किसी विषय से संबंधित अनेक प्रश्न तैयार कर उनके उत्तर भी तैयार करना बातचीत का एक तरीका है। इससे बातचीत का अभ्यास बढ़ता है और रोज़मर्रे की भाषा का ज्ञान होता है। संभाषण बिलकुल स्वाभाविक होना चाहिए और उसके विचार सिलसिलेवार होने चाहिए। पूरा संभाषण पढ़ने के बाद पढ़नेवाले को वह बिलकुल सच्चा–सा मालूम होना चाहिए। संभाषण के प्रश्न और उत्तर दोनों छोटे होने चाहिए, व्याख्यान की तरह लंबे नहीं।

अभ्यास

बातचीत लिखिए :-

(1) अस्पताल में – डॉक्टर और लड़के की बातचीत

(2) कलम की दूकान में – दूकानदार और एक लड़के की बातचीत

(3) किताब की दूकान में – किताब बेचनेवाले और ग्राहक की बातचीत

(4) होटल में – होटेलवाले और मुसाफिर की बातचीत

(5) किसी खेल के बारे में – दो लड़कों की बातचीत

(6) किराये के बारे में – टेक्सी और मुसाफ़िर की बातचीत

(7) किसी परीक्षा के बारे में – दो विद्यार्थियों की बातचीत

पाठ - 17

Letter Writing / *கடிதம் எழுதுதல்* / पत्र-लेखन

मध्यमा के विद्यार्थियों को अपने अध्यापक, दोस्त और सहपाठी (साथ पढ़नेवाले) और माता–पिता के नाम हिन्दी में पत्र लिखना भी जानना चाहिए। नीचे पत्र लिखने के संबंध में कुछ ज़रूरी बातें बतलायी जाती हैं। छात्र प्रश्नोत्तर-भंडार से फ़ायदे उठा सकते हैं।

पत्र के छः भाग होते हैं :-

(1) सरनाम–जिसमें लिखनेवाले के पता व तारीख रहते हैं।

(2) संबोधन–प्रिय मित्र, नमस्ते आदि से पत्र का आरंभ।

(3) पत्र का मुख्य भाग, जिसमें विषय होता है।

(4) पत्र का अंत।

(5) अधोलेख और हस्ताक्षर।

(6) पानेवाले का नाम व पता।

अभ्यास

पत्र लिखिए।

(1) उल्लास–यात्रा पर जाने की अनुमति माँगकर अपने पिताजी के नाम पर एक पत्र लिखिए।

(2) छुट्टी माँगते हुए अपने अध्यापक के नाम पर एक पत्र लिखिए।

(3) हिन्दी सीखने की आवश्यकता बतलाते हुए अपने मित्र के नाम पर एक पत्र लिखिए।

(4) कसरत करने की ज़रूरत बतलाते हुए अपने छोटे भाई के नाम पर एक पत्र लिखिए।

(5) किसी पुस्तक बेचनेवाली कंपनी को कुछ पुस्तकें भेजने का आर्डर दीजिए।

पाठ - 18

Composition / கட்டுரைகள் / निबंध

निबंध लिखना एक मज़ेदार कार्य है। निबंध लिखने के लिए भाषा और भाव दोनों का सामंजस्य जरूरी है। पर छोटी–छोटी चीज़ों पर वर्णनात्मक (Descriptive) निबंध लिखना आसान है। निबंध लिखने का अभ्यास मध्यमा के विद्यार्थियों के लिए बहुत आवश्यक है।

जिस विषय पर निबंध लिखना हो उस संबंध में कुछ प्रश्न तैयार कर लेना चाहिए। उन्हीं का उत्तर लिखने से निबंध तैयार हो जाएगा। मध्यमा के विद्यार्थियों के लिए किसी विषय पर 15 से 20 वाक्यों का निबंध लिखना काफ़ी है।

मान लीजिए कि आपको अपने स्कूल के बारे में एक निबंध लिखना है। उसके बारे में ये प्रश्न हो सकते हैं :–

आपके स्कूल का क्या नाम है? वह कहाँ है? स्कूल के प्रधानाध्यापक कौन हैं? स्कूल में कितने लड़के व कितने मास्टर हैं? क्या लड़कियाँ भी पढ़ती हैं? स्कूल का मकान कैसा है– पत्थर, मिट्टी, ईंट या लकड़ी का; एक–मंजिला है या दो–मंजिला? कितने कमरे हैं? आप स्कूल में कब शामिल हुए? किस क्लास में शामिल हुए? अब किस क्लास में पढ़ते हैं? स्कूल में पढ़ाई कैसे होती है? किस विषय के मास्टर सबसे अच्छा पढ़ाते हैं? आपके स्कूल में क्या–क्या खेल चलते हैं? खेल का मैदान कैसा व कहाँ है? आपको कौन–सा खेल पसंद है? सबसे अच्छा खेलनेवाला कौन है? आपका स्कूल किस खेल में सबसे आगे है? क्या आप अपने स्कूल को पसंद करते हैं?

नोट :– जो अब विद्यार्थी नहीं हैं, वे अपने पुराने स्कूल के बारे में लिख सकते हैं।

अभ्यास

निम्नलिखित विषयों पर निबंध लिखिए :-

(1) दीपावली (2) गाय (3) मेरा नगर (4) बाघ (5) हमारा देश (6) राष्ट्रीय पक्षी (7) ताजमहल (8) लाल बहादुर शास्त्री (9) रेलगाड़ी

लड़का –
नाना –
पिता –
ससुर –
पुत्र –
कुत्ता –
घोड़ा –
बैल –
शेर –
हाथी –
नर –
सेठ –
राजा –
बालक –
शिष्य –
चौधरी –
कवि –
धोबी –
लुहार –
जुलाहा –

पाठ - 19

लिंग, वचन

लिंग बदलिए

पुल्लिंग – स्त्रीलिंग

लड़का – लड़की	बेटा – बेटी	बकरा – बकरी
नाना – नानी	दादा – दादी	बूढ़ा – बूढ़ी
पिता – माता	बाप – माँ	भाई – बहन
ससुर – सास	वर – वधू	युवक – युवती
पुत्र – पुत्री	पति – पत्नी	बुड्ढा – बुढ़िया
कुत्ता – कुतिया	चूहा – चुहिया	बंदर – बंदरिया
घोड़ा – घोड़ी	मुर्गा – मुर्गी	गधा – गधी
बैल – गाय	भैंसा – भैंस	बिलाव – बिल्ली
शेर – शेरनी	मोर – मोरनी	ऊँट – ऊँटनी
हाथी – हथिनी	सिंह – सिंहनी	कौआ – मादा कौआ
नर – नारी	पुरुष – स्त्री	आदमी – औरत
सेठ – सेठानी	देवर – देवरानी	नौकर – नौकरानी
राजा – रानी	श्रीमान – श्रीमती	लेखक – लेखिका
बालक – बालिका	सेवक – सेविका	अध्यापक – अध्यापिका
शिष्य – शिष्या	सुत – सुता	छात्र – छात्रा
चौधरी – चौधराइन	ठाकुर – ठकुराइन	भिखारी – भिखारिन
कवि – कवयित्री	विद्वान – विदूषी	विद्यार्थी – विद्यार्थिनी
धोबी – धोबिन	तेली – तेलिन	सुनार – सुनारिन
लुहार – लुहारिन	पंडित – पंडिताइन	माली – मालिन
जुलाहा – जुलाहिन	साहब – साहिबा	अभिनेता – अभिनेत्री

वचन बदलिए

पुल्लिंग शब्द

आकारांत पुल्लिंग शब्द बहुवचन में एकारांत में बदल जाता है।

एकवचन - बहुवचन

लड़का – लड़के   घोड़ा – घोड़े   रुपया – रुपये
कपड़ा – कपड़े   कमरा – कमरे   बकरा – बकरे
महीना – महीने   पौधा – पौधे   कुत्ता – कुत्ते

आकारांत पुल्लिंग शब्दों को छोड़कर बाकी पुल्लिंग शब्द बहुवचन में अपना रूप नहीं बदलते।

एकवचन - बहुवचन

बालक – बालक   अध्यापक – अध्यापक   लेखक – लेखक
नौकर – नौकर   बैल – बैल   घर – घर
मोर – मोर   शेर – शेर   पेड़ – पेड़
फल – फल   विद्यार्थी – विद्यार्थी   हाथी – हाथी
भाई – भाई   आदमी – आदमी   डाकू – डाकू
नेता – नेता   देवता – देवता   दादा – दादा

स्त्रीलिंग शब्द

ईकारांत स्त्रीलिंग शब्दों को इकारांत बनाकर उसके साथ ‘याँ’ प्रत्यय लगाकर बहुवचन बनाते हैं।

एकवचन - बहुवचन

लड़की – लड़कियाँ   घड़ी – घड़ियाँ   नदी – नदियाँ
साड़ी – साड़ियाँ   गली – गलियाँ   कुर्सी – कुर्सियाँ
रोटी – रोटियाँ   रानी – रानियाँ   गाड़ी – गाड़ियाँ

अकारांत स्त्रीलिंग शब्दों के अंतिम ‘अ’ को ‘एँ’ में बदलने से बहुवचन रूप मिलता है।

एकवचन - बहुवचन

रात – रातें   आँख – आँखें   गाय – गायें
कलम – कलमें   बहन – बहनें   दूकान – दूकानें
सड़क – सड़कें   किताब – किताबें   तस्वीर – तस्वीरें

बाकी स्त्रीलिंग शब्दों के साथ ‘एँ’ प्रत्यय लगाकर बहुवचन बनाया जाता है।

एकवचन - बहुवचन

लता – लताएँ   माला – मालाएँ   पाठशाला – पाठशालाएँ
माता – माताएँ   कला – कलाएँ   बहू – बहुएँ

‘इया’ में अंत होनेवाले स्त्रीलिंग शब्दों के अंत में ‘ ँ’ मात्रा लगाकर बहुवचन बनाते हैं।

एकवचन - बहुवचन

बुढ़िया – बुढ़ियाँ   चिड़िया – चिड़ियाँ   गुड़िया – गुड़ियाँ

भाग - 6 – रचना
(जवाब Answers பதில்கள்)

पाठ – 1

(b) (1) मेरा नाम रामदास है।
(2) उस घर का मालिक मेरा भाई है।
(3) भूपाल से मेरी बहन छोटी है।
(4) अपना नाम कागज़ पर लिखो।
(5) हमको अपना देश बहुत प्यारा है।
(6) वह मेरा प्यारा दोस्त है।
(7) रामनाथजी अपनी स्त्री को बहुत प्यार करते हैं।
(8) पद्मिनी अपने पति की लाश के साथ जल मरी।
(9) कमल ने अपनी घड़ी बेच दी।
(10) औरंगज़ेब अपने भाइयों को मारकर गद्दी पर बैठा।

(c) (1) वह अपने कपड़े खुद साफ़ करता है।
(2) कमला अपनी मोटर गाड़ी खुद चलाती है।
(3) क्या, तुमने अपने पाठ याद किये?
(4) वह काशी में अपने भाई के साथ रहती है।
(5) मैं अपने लिए एक घड़ी खरीदने गया।
(6) रमेश अपनी बहन के साथ स्कूल जा रहा था।
(7) हरिदास अपनी पत्नी को बहुत प्यार करते हैं।
(8) हम अपने देश और देश के लोगों को प्यार करते हैं।
(9) शाहजहाँ ने अपनी पत्नी की कब्र पर ताजमहल बनवाया।
(10) अपने नौकर को दूकान भेजकर किताबें खरीद लो।

पाठ – 2

(a) (1) क्या मैं उसको एक खत **लिखूँ**?
(2) अगर आप हुक्म **दें** तो मैं यह काम करूँगा।
(3) आप **माँगें** तो वे ज़रूर आपको रुपये देंगे।
(4) क्या हम पिताजी के साथ काशी **जाएँ**?
(5) अगर मैं यह घर **खरीदूँ** तो आप इसे कितने में बेचेंगे?
(6) क्या मैं आपके लिए थोड़ा गरम दूध **लाऊँ**?
(7) आप दो–चार दिन और यहाँ **ठहरें**।
(8) डॉक्टर साहब से कहो कि वे कल मेरे यहाँ **आवें**।
(9) **देखें**, इस लड़ाई में कौन जीतता है?
(10) क्या, मैं इस काम में आपकी मदद **करूँ**?

(b) (1) अगर हम कोशिश करें तो फल पाएँगे। (2) क्या मैं कल शाम को उससे मिलूँ?
(3) अगर हम उनको प्यार करें, तो वे भी हमें प्यार करेंगे। (4) भगवान उसे जल्दी स्वस्थ करें।
(5) क्या, मैं थोड़ी देर बाहर जाऊँ?
(6) क्या, हम सब मिलकर गाएँ? (7) अगर वह इस घड़ी को नहीं खरीदे तो तुम क्या करोगे?
(8) अगर पैसा हो तो वह यह किताब खरीदेगा।
(9) देखें, इस सभा में कौन बोलते हैं। (10) वे वहाँ जाएँ या न जाएँ, मैं ज़रूर जाऊँगा।

पाठ - 3

(a) (1) मोहन हलवा **खाता होगा**। (2) गोमती कपड़ा **सीती होगी**।
(3) नेताजी सभा में **बोलते होंगे**। (4) मास्टर साहब लड़कों को **पढ़ाते होंगे**।
(5) वे नौकर को **बुलाते होंगे**। (6) कश्मीर में फल सस्ते दाम में **बिकते होंगे**।
(7) रशीदा मेडिकल कालेज में **पढ़ती होगी**। (8) लड़के मैदान में **खेलते होंगे**।
(9) दस बज गये, कालेज की घंटी **बजती होगी**।
(10) अनाज के अधिक उत्पाद के कारण देश के लोग **आनंद मनाते होंगे**।

(b) (1) यह गाय हर रोज़ चार लिटर दूध देती होगी।
(2) वह बाज़ार में आलू बेचती होगी।
(3) अब्दुल अपने मित्र को खत लिखता होगा।
(4) हरि और जोसफ़ क्रिकेट खेलते होंगे।
(5) मेरा नौकर मेरे लिए पान लाता होगा।
(6) यह दूकानदार मक्खन नहीं बेचता होगा।
(7) मेरे बच्चे अपनी दादी से कहानियाँ सुनते होंगे।
(8) वह चीन की यात्रा करती होगी।
(9) वह मुंबई मेल से आता होगा।
(10) यह रेल गाड़ी सभी स्टेशनों पर नहीं रुकती होगी।

पाठ - 4

(a) (1) जमनालालजी ने इस सभा को एक करोड़ रुपये दिये होंगे।
(2) रशीदा ने कल चाय पी होगी।
(3) श्रीरामचंद्र ने त्यागराज को दर्शन दिये होंगे।
(4) सीता ने रामस्वामी को पत्र लिखा होगा।
(5) कल राजाजी नशाबंदी पर बोले होंगे।
(6) विशाल ने यह किताब पिछले साल लिखी होगी।
(7) लाला लाजपतराय मुंबई में रहे होंगे।
(8) गोपाल ने रामदास से एक हज़ार रुपये लिये होंगे।
(9) ताजमहल बनवाने में कई करोड़ रुपये खर्च हुए होंगे।
(10) उस शहर में दो लाख लोग रहे होंगे।

(b) (1) गया होगा – मेरा मित्र रमेश तिरुच्ची गया होगा।
(2) दिये होंगे – रामजी ने सुरेश को एक हज़ार रुपये दिये होंगे।
(3) की होगी – उस आदमी ने गरीबों की मदद की होगी।
(4) सुनी होगी – मेरे बच्चों ने यह कहानी सुनी होगी।
(5) लाया होगा – नौकर बाज़ार से सामान लाया होगा।
(6) दी होगी – गोपाल ने भूपाल को अपनी घड़ी दी होगी।
(7) देखे होंगे – आपने आगरा में कई महल देखे होंगे।
(8) लिखी होगी – मेरे मामा ने यह चिट्ठी लिखी होगी।
(9) पढ़ाया होगा – अध्यापक ने कल यह पाठ पढ़ाया होगा।

(c) (1) गोपालजी कल की सभा में बोले होंगे।
(2) जापान ने चीन को हराया होगा।
(3) गीता रूस में कई महीने रही होगी।
(4) मैंने यह चित्र देखा होगा।
(5) क्या रेलगाड़ी आयी होगी?
(6) वह झूठ बोली होगी।
(7) उन्होंने कभी ऐसा नहीं किया होगा।
(8) कल वहाँ पानी बरसा होगा।
(9) वह कल रात नहीं सोया होगा।
(10) उन्होंने तुम्हारी बातें नहीं समझी होंगी।

पाठ - 5

(a) (1) अगर हममें एकता होती तो हमारा देश पराधीन न होता।
(2) अगर गोपाल आता तो वे खेलने जाते।
(3) अगर पानी बरसता तो मेंढक ज़रूर बोलते।
(4) अगर आज घी होता तो पूड़ी अच्छी बनती।
(5) अगर मेरे पास रुपये होते तो मैं किताब खरीदता।
(6) अगर वह मोटर से आता तो जल्दी पहुँचता।
(7) अगर धोबी कपड़े लाता तो मैं आपके साथ जाता।
(8) अगर फ्रांस के पास काफ़ी तोपें होतीं तो वह लड़ाई में जीतता।
(9) अगर आप दवा खाते तो आपकी तबीयत अच्छी हो जाती।
(10) अगर यहाँ कोई अध्यापक होते तो मैं हिंदी ज़रूर सीखता।

(b) (1) अगर मैं दो मिनट पहले पैदा होता तो मैं इस देश का प्रधान मंत्री बनता।
(2) अगर तुम कुछ मिनट ज़्यादा देर करते तो गाड़ी नहीं मिलती।
(3) अगर उसकी तबीयत ठीक होती तो वह ज़रूर मुझे देखने आता।
(4) अगर वह माँगता तो मैं उसे उधार देता।
(5) अगर तुम पहले बता देते तो मैं अपनी गाड़ी तुम्हें दे देता।
(6) अगर मेरे मित्र आज बोलते तो मैं ज़रूर सभा में जाता।
(7) अगर वह इस घर के लिए दो लाख रुपया देता तो मैं इसे बेचता।
(8) अगर राम वहाँ नहीं होते तो कौन सुग्रीव को वाली से बचाता।
(9) यदि मेरे पास रुपया होता तो मैं इस तस्वीर के लिए एक लाख रुपये देता।

पाठ - 6

(a) (1) बंगाली रोज़ सबेरे चाय पिया करते हैं।
(2) वे मुझे हर काम में रोका करते हैं।
(3) तुम रोज़ सबेरे उठकर ठंडे पानी से नहाया करो।
(4) मैं बचपन में नियम से कसरत किया करता था।
(5) हम खादी कपड़ा पहना करते थे।
(6) रामदासजी काशी से कपड़े मँगाया करते हैं।
(7) हम रेड्डीजी की तकरीर सुनने जाया करते थे।
(8) हम बचपन में बकरी का दूध पिया करते थे।
(9) वे अपनी छोटी बहन को बहुत प्यार किया करते थे।
(10) वे अकसर दूसरों की सहायता किया करते हैं।

(b) (1) गोखले जी देश के लिए बड़ी **मेहनत किया करते थे**।
(2) वे मिश्रजी की दूकान से घी **खरीदा करते हैं**।
(3) हम रोज़ शाम को कथा सुनने मंदिर **जाया करते हैं**।
(4) सरला रोज़ नियम से अपना पाठ **याद किया करती है**।
(5) पानी को उबालकर **पिया करो**।

(c) (1) हमेशा अपनी मातृभाषा में बोला करो।
(2) चेन्नै में हर शाम को समुद्र से ठंडी हवा बहा करती है।
(3) लोग गर्मियों में उदकमंडल जाया करते हैं।
(4) हम इस दूकान से नारियल का तेल खरीदा करते हैं।
(5) अकबर के शासन काल में हिंदू और मुसलमान शांति से रहा करते थे।
(6) रहीम हिंदी में पद्य लिखा करते थे।
(7) मैं चाय पीने के बाद समाचार पत्र पढ़ा करता हूँ।
(8) संतानम जी हिंदी में भाषण दिया करते हैं।
(9) वह अपने मित्रों को अंग्रेजी में पत्र लिखा करता है।
(10) वे हर दिन दो घंटे सूत काता करते थे।

पाठ - 7

(a) (1) मुझे कल सबेरे पंडितजी से मिलने जाना पड़ेगा।
(2) पिछली लड़ाई में इंग्लैंड को बहुत रुपये खर्च करने पड़े।
(3) उसे अपनी घड़ी पाँच सौ रुपये में बेचनी पड़ती है।
(4) मुझे रोज़ सबेरे पाँच बजे उठना है।
(5) क्या तुम्हें मुंबई मेल से पूना जाना होगा?
(6) हमें अपने देश को संपन्न बनाना होगा।
(7) कल शाम को रजिया को भी एक गीत गाना पड़ा।

(8) मुझे कल सबेरे की गाड़ी से बंगलूर आना पड़ा।
(9) आज मुझे खुद रोटियाँ बनानी पड़ीं।
(10) उसे कल रात को दो बजे तक जागना पड़ा।

(b) (1) वह बीमार था, इसलिए उसे दवा **लेनी पड़ी**।
(2) आज मुझे कई चिट्ठियाँ **लिखनी हैं**।
(3) उसको रुपये की ज़रूरत थी, इसलिए उसे अपना घर **बेचना पड़ा**।
(4) अहमद को मेरे कारण बहुत तकलीफ़ें **उठानी पड़ीं**।
(5) तुमको उस घोड़े के लिए एक हज़ार रुपये **देने पड़ेंगे**।

(c) (1) पाँच बजे के पहले मुझे अध्यापक से मिलना था।
(2) उनको एक सौ बोरे चावल कोलकत्ता भेजना होगा।
(3) तुम्हें भी मेरे साथ बंगलूर आना होगा।
(4) उसे कल की सभा में हिंदी में बोलना पड़ा।
(5) यह तस्वीर खरीदने के लिए मुझे बड़ी कोशिश करनी पड़ी थी।
(6) अगर तुम परीक्षा में पास होना चाहते हो तो तुम्हें खूब पढ़ना होगा।
(7) गोपाल को रोज़ दो बार यहाँ आना पड़ता है।
(8) तिप्पु सुल्तान को अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ना पड़ा।
(9) उसे अपने बेटे को बंगलूर भेजना होगा।
(10) उसे अपना कुरता खुद सीना पड़ा।

पाठ – 8

(a) (1) रोने लगा; (2) बोलने दिया; (3) खेलने देते; (4) बरसने लगा;
(5) गाने लगी; (6) बेचने दूंगा; (7) तोड़ने देंगे; (8) फैलने लगी;
(9) रहने दीजिए; 10) चराने लगे।

(b) (1) अध्यापक ने अपने छात्रों को जल्दी घर जाने दिया।
(2) गांधीजी देश की स्वतन्त्रता के लिए काम करने लगे।
(3) नारायण के छात्र तीन महीने के अंदर हिन्दी बोलने लगेंगे।
(4) जब सूरज डूबने लगा, चिड़ियाँ चहचहाने लगीं।
(5) जोसफ ने मुझे वह घोडा खरीदने नहीं दिया।

पाठ – 9

(a) (1) मैंने देखा कि जवाहरलालजी चरखा चला रहे थे।
(2) मैंने स्टेशन मास्टर से पूछा कि बंगलूर मेल कब आएगा।
(3) तिलकजी ने कहा था कि हमारा देश सबसे बढ़कर है।
(4) मैंने पूछा कि आज की सभा में वे बोलेंगे कि नहीं।
(5) विद्वानों का कहना है कि मोहनजोदडो की सभ्यता सबसे पुरानी थी।

(6) आप गोपालदासजी को जानते हैं कि नहीं?
(7) उनसे कहिए कि वे मेरे साथ कलकत्ता आएँ।
(8) रशीदा ने कहा कि उनकी कलम खो गई है।
(9) मैंने उस मुसाफिर से पूछा कि वे कहाँ रहनेवाले हैं।
(10) इतिहास ने बताया है कि जहाँगीर इंसाफ पसंद हैं।

(b) (1) उसकी माँ ने उससे कहा कि उसे झूठ नहीं बोलना है।
2) गोपाल ने कहा कि उसका भाई अस्वस्थ है।
3) डॉक्टर ने मरीज से कहा कि उसे दो दिन के लिए कुछ नहीं खाना चाहिए।
4) सत्यमूर्ति तमिल में बोलेंगे कि अँग्रेजी में?
5) आप पहले बंगलूरू जाएंगे/जाएँगी कि मैसूर?

पाठ - 10

(a) (1) चले गए; (2) लगा दी; (3) रख दी; (4) पी लीजिए/पी लो;
(5) मर गयी; (6) चूम लिया; (7) खो दिया; (8) सो गए;
(9) हरा दिया; (10) खा ली; (11) ले लिया; (12) दे दिया।

(b) (1) कल शामको एक लड़का पेड़ से गिर गया।
(2) मेरे नौकर दो बजे बाज़ार चला गया।
(3) नारायण ने अपनी सभी पुरानी पुस्तकें बेच दीं।
(4) मैंने उनके घर को चार हज़ार रुपए में खरीद लिया।
(5) इतनी जल्दी तुम क्यों सोने के लिए चले गए?

पाठ - 11

(a) (1) कावेरी गंगा से लंबी नहीं है। (2) आम केले से ज़्यादा मीठा है।
(3) कटहल सब फलों से मीठा फल है। (4) वह अंग्रेज़ी से हिंदी कम जानता है।
(5) गुलाब सब फूलों से सुंदर है। (6) हिंदुस्तान सब देशों से पवित्र देश है।
(7) माँ बच्चे को सबसे अधिक प्यार देती है।
(8) नेल्लूर में अच्छी से अच्छी गायें मिलती हैं।
(9) चेन्नई में सस्ते से सस्ता नारियल बिकता है।
(10) तुम्हारी कलम से मेरी कलम अच्छी है।

(b) (1) बड़े से बड़ा – गोपाल बड़े से बड़ा नेता है।
(2) मोटे से मोटा – यह मोटे से मोटा आदमी है।
(3) सस्ते से सस्ता – यहाँ आम सस्ते से सस्ता बिकता है।
(4) नारियल से छोटा – आम नारियल से छोटा है।
(5) हाथी से बड़ा – हाथी से बड़ा जानवर कोई नहीं है।
(6) शरबत से मीठा – शहद शरबत से मीठा है।

(7) सबसे बढ़कर अकलमंद – अकबर के दरबारियों में बीरबल सबसे बढ़कर अकलमंद थे।
(8) इमली से ज़्यादा खट्टा – यह फल इमली से ज़्यादा खट्टा है।
(9) कम मीठी भाषा – हिंदी किसी से कम मीठी भाषा नहीं है।
(10) ताजमहल से ज़्यादा सुन्दर– ताजमहल से ज़्यादा सुंदर इमारत कहाँ है।

(c) (1) हिमालय दूसरे पहाड़ों से कम ऊँचा नहीं है।
(2) तंजाऊर चेन्नई से छोटा शहर है।
(3) मुझे अंग्रेज़ी, हिंदी से ज़्यादा आसान नहीं मालूम होती।
(4) हाँ, सोना चाँदी से ज़्यादा महँगा है।
(5) नहीं, मुझे विदेशी चीज़ें सबसे ज़्यादा पसंद नहीं हैं।

(d) (1) सोना चाँदी से कीमती है। (2) दूध पानी से गाढ़ा है।
(3) केले के पत्ते चौड़े हैं। (4) संसार में माँ से बढ़कर प्रिय कोई नहीं है।
(5) गेहूँ चावल से बढ़कर पुष्टिकर है। (6) वह दूसरों से ज़्यादा धनवान है।
(7) वह इस जिले का सबसे बड़ा धनवान है।
(8) इस शहर के अच्छे से अच्छे आदमी मेरे मित्र हैं।
(9) पलनी का मंदिर मीनाक्षी के मंदिर से कम प्रसिद्ध नहीं है।
(10) गेहूँ इस प्रांत में सबसे कम प्रयोग में लाया जाता है।
(11) तुम्हें परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 35 प्रतिशत अंक पाना चाहिए।
(12) मैं ज़्यादा से ज़्यादा दस आम खा सकता हूँ।

पाठ – 12

वाच्य बदलिए

कर्तृवाच्य – कर्मवाच्य

(अ)

(1) मोती ने यह काम किया।
मोती से यह काम किया गया।

(2) जोसफ़ ने यह चिट्ठी लिखी।
जोसफ़ से यह चिट्ठी लिखी गयी।

(3) आज हम रोटी नहीं बनाएँगे।
आज हमसे रोटी नहीं बनायी जाएगी।

(4) वह इतनी दूर नहीं चल सकता।
उससे इतनी दूर नहीं चला जाता।

(5) शेखर दिन में नहीं सोया।
शेखर से दिन में नहीं सोया गया।

(आ)

(1) राम से रावण मारा गया।
राम ने रावण को मारा।

(2) अख़बारों में ख़बरें छापी जाती हैं।
अख़बारों में ख़बरें छपती हैं।

(3) हमसे अंग्रेज़ी नहीं बोली जाती।
हम अंग्रेज़ी नहीं बोल सकते।

(4) मुझसे तड़के उठा नहीं जाता।
मैं तड़के नहीं उठ सकता।

(5) कहा जाता है कि यूरप में गुलाम बेचे जाते थे।
कहते हैं कि यूरप में गुलाम बिकते थे।

पाठ -13 संख्या - अक्षरों में लिखिए:-

1	एक	१	35	पैंतीस	३५	69	उनहत्तर	६९
2	दो	२	36	छत्तीस	३६	70	सत्तर	७०
3	तीन	३	37	सैंतीस	३७	71	इकहत्तर	७१
4	चार	४	38	अड़तीस	३८	72	बहत्तर	७२
5	पाँच	५	39	उनतालीस	३९	73	तिहत्तर	७३
6	छः (छे)	६	40	चालीस	४०	74	चौहत्तर	७४
7	सात	७	41	इकतालीस	४१	75	पचहत्तर	७५
8	आठ	८	42	बयालीस	४२	76	छिहत्तर	७६
9	नौ	९	43	तैंतालीस	४३	77	सतहत्तर	७७
10	दस	१०	44	चवालीस	४४	78	अठहत्तर	७८
11	ग्यारह	११	45	पैंतालीस	४५	79	उन्नासी	७९
12	बारह	१२	46	छियालीस	४६	80	अस्सी	८०
13	तेरह	१३	47	सैंतालीस	४७	81	इक्यासी	८१
14	चौदह	१४	48	अड़तालीस	४८	82	बयासी	८२
15	पंद्रह	१५	49	उनचास	४९	83	तिरासी	८३
16	सोलह	१६	50	पचास	५०	84	चौरासी	८४
17	सत्रह	१७	51	इक्कावन	५१	85	पचासी	८५
18	अठारह	१८	52	बावन	५२	86	छियासी	८६
19	उन्नीस	१९	53	तिरपन	५३	87	सत्तासी	८७
20	बीस	२०	54	चौवन	५४	88	अठासी	८८
21	इक्कीस	२१	55	पचपन	५५	89	नवासी	८९
22	बाईस	२२	56	छप्पन	५६	90	नब्बे	९०
23	तेईस	२३	57	सत्तावन	५७	91	इक्कानबे	९१
24	चौबीस	२४	58	अट्ठावन	५८	92	बानबे	९२
25	पच्चीस	२५	59	उनसठ	५९	93	तिरानबे	९३
26	छब्बीस	२६	60	साठ	६०	94	चौरानबे	९४
27	सत्ताईस	२७	61	इकसठ	६१	95	पंचानबे	९५
28	अट्ठाईस	२८	62	बासठ	६२	96	छियानबे	९६
29	उनतीस	२९	63	तिरसठ	६३	97	सत्तानबे	९७
30	तीस	३०	64	चौंसठ	६४	98	अठानबे	९८
31	इकतीस	३१	65	पैंसठ	६५	99	निन्यानबे	९९
32	बत्तीस	३२	66	छियासठ	६६	100	सौ	१००
33	तैंतीस	३३	67	सडसठ	६७			
34	चौंतीस	३४	68	अडसठ	६८			

हज़ार	**लाख**	**करोड़**
1,000	**1,00,000**	**1,00,00,000**

पाठ -14 वाक्य जोड़ना

(1) कुत्ता उठा। वह भाग गया।
कुत्ता उठकर भाग गया।

(2) मुसाफ़िर थक गया। वह आराम करने के लिए लेट गया।
मुसाफ़िर थक गया और आराम करने के लिए लेट गया।

(3) मैं दो दिन से बीमार हूँ। मैं अभी स्कूल नहीं जा सकता।
मैं दो दिन से बीमार हूँ, इसलिए स्कूल नहीं जा सकता।

(4) वह बोलना चाहती थी। वह चुप रही।
वह बोलना चाहती थी, लेकिन चुप रही।

(5) जल्दी जाओ। गाड़ी नहीं मिलेगी।
जल्दी जाओ, नहीं तो गाड़ी नहीं मिलेगी।

(6) वह बहुत बीमार है। वह चल–फिर नहीं सकता।
वह इतना बीमार है कि चल-फिर नहीं सकता।

(7) ये अब्दुल हैं। ये मेरे दोस्त हैं।
ये मेरे दोस्त अब्दुल हैं।

(8) वह एक गली में रहता है। वह नदी के पास है।
वह नदी के पासवाली गली में रहता है।

(9) पुलिस आयी। लोग भाग गये।
पुलिस के आते ही लोग भाग गये।

(10) रात आयी। चारों ओर अंधेरा फैल गया।
रात के आने पर चारों ओर अंधेरा फैल गया।

पाठ -15 अशुद्ध और शुद्ध

	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
(1)	यह एक किताब।	**यह एक किताब है।**
(2)	मेरा नाम गोपाल।	**मेरा नाम गोपाल है।**
(3)	मैंने एक रुपया पूछा।	**मैंने एक रुपया माँगा।**
(4)	मैंने उसको कहा।	**मैंने उससे कहा।**
(5)	राम ने उसके पास कहा।	**राम ने उससे कहा।**
(6)	उसको पूछो।	**उससे पूछो।**
(7)	सीता के पास पूछो।	**सीता से पूछो।**
(8)	मैं कल राम को मिला।	**मैं कल राम से मिला।**
(9)	दो दिन के लिए छुट्टी दीजिए।	**दो दिन की छुट्टी दीजिए।**
(10)	मेरे लिए दो रुपये दीजिए।	**मुझे दो रुपये दीजिए।**

(11)	गाँधीजी ने देश को सेवा की।	**गाँधीजी ने देश की सेवा की।**
(12)	मैं उसके घर को गया।	**मैं उसके घर गया।**
(13)	रवि को एक लड़की थी।	**रवि के एक लड़की थी।**
(14)	कुछ पानी दीजिए।	**थोड़ा पानी दीजिए।**
(15)	वह नहीं मर गया।	**वह नहीं मरा।**

पाठ -16 बातचीत

(1) अस्पताल में – डॉक्टर और लड़के की बातचीत

लड़का – डॉक्टर साहब, नमस्ते।
डॉक्टर – नमस्ते! आओ रमेश, क्या बात है?
लड़का – मेरे पिताजी ने आपको बुलाया है।
डॉक्टर – किसलिए बुलाया है ?
लड़का – मेरी छोटी बहन बीमार है।
डॉक्टर – उसको क्या हुआ ?
लड़का – उसको बहुत बुखार है।
डॉक्टर – कितने दिन से बुखार है?
लड़का – दो दिन से।
डॉक्टर – अच्छा, चलो, मैं थोड़ी देर में आता हूँ।

(2) कलम की दूकान में – दूकानदार और एक लड़के की बातचीत

दूकानदार – आओ, तुमको क्या चाहिए ?
लड़का – मुझे एक अच्छी कलम चाहिए।
दूकानदार – यहाँ सब तरह की कलमें हैं। कौन-सी कलम चाहिए?
लड़का – मुझे पचास रुपये की कोई अच्छी कलम दिखाइए।
दूकानदार – यह देखो, यह बहुत अच्छी कलम है।
लड़का – इसका दाम क्या है ?
दूकानदार – सिर्फ़ पचास रुपये हैं।
लड़का – ठीक है। मुझे दो कलमें दीजिए।
दूकानदार – अच्छा ले लो। एक सौ रुपये दो।
लड़का – लीजिए। एक सौ रुपये।

(3) किताब की दूकान में – किताब बेचनेवाले और ग्राहक की बातचीत

दूकानदार – आइए, आपको कौन-सी किताबें चाहिए?
ग्राहक – मुझे मध्यमा की किताबें चाहिए।
दूकानदार – अंग्रेज़ी माध्यम की किताबें या तमिल माध्यम की?
ग्राहक – मुझे अंग्रेज़ी माध्यम की किताबें चाहिए।

दूकानदार – ये लीजिए, मध्यमा की किताबें।
ग्राहक – दाम में कटौती मिलेगी?
दूकानदार – हाँ, दस प्रतिशत कटौती देता हूँ।
ग्राहक – नोट बुक के लिए भी कटौती मिलेगी?
दूकानदार – जी नहीं, सिर्फ़ किताबों के लिए कटौती है।
ग्राहक – अच्छा, रकम ले लीजिए।

(4) होटल में – होटलवाले और मुसाफ़िर की बातचीत

मुसाफ़िर – जी, ठहरने का कमरा मिलेगा?
होटलवाला – हाँ मिलेगा। आप कितने दिन ठहरनेवाले हैं?
मुसाफ़िर – मैं सिर्फ़ दो दिन ठहरनेवाला हूँ।
होटलवाला – एक बिस्तरवाला कमरा चाहिए या दो बिस्तरवाला?
मुसाफ़िर – एक बिस्तरवाले कमरे का किराया कितना होता है?
होटलवाला – एक दिन के लिए एक हज़ार रुपये।
मुसाफ़िर – नहाने के लिए गरम पानी मिलेगा ?
होटलवाला – ठंडे पानी और गरम पानी के अलग-अलग नल हैं।
मुसाफ़िर – मुझे एक बिस्तरवाला कमरा ही काफ़ी है।
होटलवाला – आप इस बही में अपना नाम और पता लिखिए।

(5) किसी खेल के बारे में – दो लड़कों की बातचीत

सुरेश – रमेश! तुम कहाँ से आ रहे हो?
रमेश – मैं खेल के मैदान से आ रहा हूँ।
सुरेश – खेल के मैदान में कौन-सा खेल खेल रहे हैं?
रमेश – वहाँ क्रिकेट का खेल खेल रहे हैं।
सुरेश – यह खेल कितने दिन से चल रहा है?
रमेश – आज चौथा दिन है।
सुरेश – इस खेल में कौन-कौन खेल रहे हैं?
रमेश – तमिलनाडु और केरल के खिलाड़ी खेल रहे हैं।
सुरेश – खेल में किसकी जीत होगी?
रमेश – कल मालूम हो जाएगा।

(6) किराये के बारे में – टैक्सीवाले और मुसाफ़िर की बाचतीत

टैक्सीवाला – आइए साहब, कहाँ जाना है?
मुसाफ़िर – टी.नगर जाना है।
टैक्सीवाला – जी, सौ रुपया किराया देना है।
मुसाफ़िर – सौ रुपया अधिक मालूम पड़ता है।

टैक्सीवाला – जी, यह तो मामूली किराया है।
मुसाफ़िर – अस्सी रुपये लीजिए।
टैक्सीवाला – अब डीज़ल-पेट्रोल का दाम बढ़ गया है।
मुसाफ़िर – वहाँ पहुँचने के लिए कितना समय लगेगा?
टैक्सीवाला – आधे घंटे में वहाँ पहुँच जाएँगे।
मुसाफ़िर – अच्छा, चलो।

(7) किसी परीक्षा के बारे में – दो विद्‌यार्थियों की बातचीत

कमल – विमल! तुम्हें देखकर बहुत दिन हो गये हैं।
विमल – हाँ, मैं परीक्षा की तैयारी कर रहा था।
कमल – कौन-सी परीक्षा की?
विमल – मध्यमा परीक्षा की।
कमल – तुमने कब प्राथमिक परीक्षा पास की?
विमल – मैंने पिछले साल पास की।
कमल – तुम कब हिंदी वर्ग जाते हो?
विमल – रोज़ शाम को छः बजे जाता हूँ।
कमल – क्या मैं भी हिंदी सीख सकता हूँ?
विमल – हाँ, ज़रूर। हिंदी सीखना आसान है।

पाठ -17 पत्र-लेखन

(1)

उल्लास-यात्रा पर जाने की अनुमति माँगकर पिताजी के नाम पर एक पत्र लिखिए।

10, नेताजी रोड़,
मदुरै – 1.

पूज्य पिताजी,

प्रणाम।

आशा है कि घर में सब सकुशल होंगे। यह हमारी स्कूली-पढ़ाई का अंतिम साल है। इसलिए अगले महीने हमारे स्कूल के पचास विद्‌यार्थी उल्लास-यात्रा पर जानेवाले हैं। खर्च लगभग एक हज़ार रुपये हैं। अगर आप मुझे अनुमति दें तो मैं भी यात्रा पर जाऊँगा।

पूज्य माताजी को मेरा प्रणाम।

आपका प्रिय पुत्र
एन. अजय

पता :

के. नारायण
15, बाज़ार गली, चेन्नै – 600 001.

(2)

छुट्टी माँगते हुए अपने अध्यापक के नाम पर एक पत्र लिखिए।

मैसूर,
03-10-2017

प्रेषक

एल. दिवाकर,
आठवीं कक्षा,
सरकारी हाई स्कूल,
मैसूर – 1.

सेवा में

अध्यापक,
सरकारी हाई स्कूल,
मैसूर – 1.

मान्यवर अध्यापक,

सादर प्रणाम। मुझे दो दिन से बुखार है। इसलिए मैं विद्यालय आने में असमर्थ हूँ। आपसे प्रार्थना है कि दिनांक 03.10.2017 से 05.10.2017 तक तीन दिनों की छुट्टी देने की कृपा करें।

आपका विनम्र छात्र
एल. दिवाकर

(3)

हिंदी सीखने की आवश्यकता बतलाते हुए अपने मित्र के नाम पर एक पत्र लिखिए।

15, गाँधी रोड़,
गुरुवायूर – 1.

प्रिय माधवन,

तुम कैसे हो? मैं यहाँ कुशल हूँ। मैं हिंदी वर्ग में शामिल होकर पढ़ रहा हूँ। हिंदी सीखना आसान है। हिंदी सीखकर भारत भर में भ्रमण कर सकते हैं। यह हमारी राष्ट्रभाषा है। यह भारत की राजभाषा भी है। सबको हिंदी सीखना ज़रूरी है। इसलिए तुम भी हिंदी सीखना शुरू करो। बड़ों को मेरा प्रणाम और छोटों को मेरा प्यार।

तुम्हारा प्रिय
आर. अरविंदन

पता :–

जी. माधवन,
68, श्रीरामुलु गली,
हैदराबाद – 10.

(4)

कसरत करने की ज़रूरत बतलाते हुए अपने छोटे भाई के नाम पर एक पत्र लिखिए।

70, अरविंद रोड़,
पांडिच्चेरी – 1.

प्रिय भाई वेंकटेश,

खुशी है कि तुम अच्छी तरह पढ़ रहे हो। मैंने सुना था कि तुम आजकल बहुत कमज़ोर हो गये हो । पढ़ाई के साथ–साथ कसरत करना भी ज़रूरी है। कसरत करने से शरीर तंदुरुस्त बनता है। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता है। इसलिए कसरत करना आरंभ करो। माँ–बाप को मेरा प्रणाम। बहन को मेरा प्यार।

तुम्हारा भाई
के. उमापति

पता :–

के. वेंकटेश,
105 / 25, मोतीलाल स्ट्रीट,
चेन्नै – 17.

(5)

किसी पुस्तक बेचनेवाली कंपनी को कुछ पुस्तकें भेजने का आर्डर दीजिए।

महात्मा हिंदी विद्यालय,
बाज़ार गली, तेनाली – 1.

दि. 10.10.2017

व्यवस्थापक,
पुस्तक बिक्री विभाग,
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा,
चेन्नै – 600 017.

प्रिय महोदय,

हमारे विद्यालय में बीस लड़के मध्यमा की परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं। इसलिए हमें बीस सेट मध्यमा की पुस्तकों की ज़रूरत है। कृपया इन्हें वी.पी.पी. दवारा भेजें। हम तुरंत रुपये देकर पार्सल को छुड़ा लेंगे। आशा है कि आप उचित कमीशन भी देंगे। प्रार्थना है कि जल्दी से जल्दी पुस्तकें भेजने की कृपा करें।

आपका
एस. विघ्नेश

पाठ -18 निबंध-लेखन

(1) दीपावली

दीपावली हिंदुओं का सबसे बड़ा त्योहार है। यह हिंदुओं का मुख्य त्योहार है। यह उनका पवित्र त्योहार है।

इस दिन भगवान राम रावण पर विजय प्राप्त कर, अयोध्या लौटे थे। इसी खुशी में लोगों ने अयोध्या को हज़ारों दीपों से सजाया था। तभी से दीपावली मनाते हैं।

दीपावली के बहुत दिन पहले से ही लोग अपनी दूकानों और घरों को सजाते हैं। दीपावली के दिन लोग रात में लक्ष्मी की पूजा करते हैं। लोगों का विश्वास है कि लक्ष्मीजी रात में सब के घर जाती हैं। इसी कारण कुछ लोग रात–भर जागते हैं।

दीपावली के दिन लोग नये कपड़े पहनते हैं। उस दिन लोग पटाखें छोड़ते हैं। इसलिए बच्चे दीपावली के दिन बहुत खुश रहते हैं।

(2) गाय

गाय एक पालतू जानवर है। यह एक सीधा–सादा जानवर है। यह हमें अमृत के समान मीठा दूध देती है। बच्चे, जवान, बूढ़े – सब गाय का दूध पीते हैं। तंदुरुस्ती के लिए वह बहुत ज़रूरी है। गाय के दूध में ताकत होती है। बच्चों के लिए माँ के दूध के बाद गाय का दूध ज़रूरी है।

गाय के दूध से हम दही बनाते हैं, दही से मट्ठा बनाते हैं। दही से मक्खन निकालते हैं और मक्खन से घी बनाते हैं। गाय के दूध से कई मिठाइयाँ भी बनाते हैं।

गाय बहुत उपयोगी जानवर है। वह शांत स्वभाव का है। हिंदू लोग "लक्ष्मी" मानकर इसकी पूजा करते हैं। गोमूत्र और गोबर बड़े काम की चीज़ें हैं। गाय के गोबर से अच्छी खाद बनती है।

(3) मेरा नगर

मेरा नगर चेन्नई है। यह दक्षिण भारत में है। यह समुद्र के किनारे पर बसा है। यह तमिलनाडु की राजधानी है। यह भारत के बड़े शहरों में एक है।

चेन्नई में करीब एक करोड़ लोग रहते हैं। यहाँ कई धर्मों और जातियों के लोग रहते हैं। यहाँ कई भाषाएँ बोलनेवाले लोग रहते हैं। यहाँ अनेक स्कूल और कॉलेज हैं।

चेन्नई में कई बड़े–बड़े बाज़ार हैं। यहाँ सब तरह की चीज़ें मिलती हैं। चेन्नई का समुद्री किनारा दुनिया भर में दूसरा बड़ा और सुंदर किनारा है। लोग यहाँ आकर अपना मन बहलाते हैं और खुश होते हैं।

(4) बाघ

बाघ जंगली जानवर है। यह बिल्ली की शकल का होता है। यह बहुत भयानक जानवर है। इसके शरीर पर पीली और काली धारियाँ होती हैं। यह माँस खानेवाला (माँसभक्षी) है।

बाघ में बहुत ताकत होती है। यह अपने पंजों से शिकार को मारकर खाता है। अगर यह मनुष्य के मांस को चख ले तो उसे बहुत पसंद करता है। इसीलिए इसे "नरभक्षी" (मनुष्य को खानेवाला) कहते हैं।

बाघ जानवरों में सुंदर माना जाता है। यह लंबी छलांग मारता है और तेज़ दौड़ता है। नरभक्षी बाघ का शिकार करना मुश्किल है। बाघ रात में चोरी से शिकार करता है। अमीर लोग बाघ की खाल से अपना घर सजाते हैं। बाघ हमारा राष्ट्रीय पशु है।

(5) हमारा देश

हमारा देश भारत है। यह बहुत पुराना और पवित्र देश है। यह हिमालय से कन्याकुमारी तक फैला हुआ है। हमारे देश के उत्तर में हिमालय पहाड़ है, दक्षिण में हिंद महासागर है, पूरब में बंगाल की खाड़ी है और पश्चिम में अरब सागर है। हमारा देश ऋषियों, मुनियों और महात्माओं का देश है। भगवान राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर ये सब यहीं पैदा हुए। महात्मा गाँधी, राणा प्रताप, वीर शिवाजी, लक्ष्मीबाई – ये भी यहीं पैदा हुए।

हमारे देश में कई धर्मों और जातियों के लोग रहते हैं। हमारे देश के लोग कई भाषाएँ बोलते हैं। फिर भी हमारे अधिकार समान हैं। हम सब आपस में मिल-जुलकर रहते हैं।

तिरंगा झंडा हमारे देश का राष्ट्र–झंडा है। जन–गण–मन हमारा राष्ट्रगान है। हमें अपने देश को प्यार करना चाहिए और उसकी सेवा करनी चाहिए। हमारा देश महान है।

(6) राष्ट्रीय पक्षी

दुनिया के हर एक देश की अपनी-अपनी पहचान होती है। हर देश का अपना-अपना झंडा होता है और राष्ट्रगान होता है। उसी तरह हर देश का अपना-अपना राष्ट्रीय-पशु, राष्ट्रीय-पक्षी आदि होते हैं। हमारे देश का राष्ट्रीय-पक्षी मोर है।

मोर सबसे सुंदर पक्षी माना जाता है। मोर काले बादलों को देखकर नाच उठता है। तब उसके पंखों में चाँद के जैसे नीले निशान हज़ारों आँखों के समान जगमगाते हैं। उस समय वह चारों ओर चक्कर लगाकर कूदता है।

शरीर भारी होने के कारण मोर बहुत दूर उड़ नहीं सकता। पर वह उड़कर पेड़ पर बैठ सकता है। मोर बहुत आसानी से मनुष्य से हिल-मिल जाता है। वह साँप को मार डालता है और कभी-कभी उसे निगल जाता है। मोर भारत के बहुत-से भागों में पाये जाते हैं।

(7) ताजमहल

दुनिया में बहुत–सी सुंदर इमारतें हैं। दुनिया भर के लोग उनको देखने जाते हैं। ताजमहल भी ऐसी ही इमारतों में एक है। यह हमारे देश में यमुना नदी के किनारे स्थित है।

इसे शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज की याद में बनवाया था। यह पूरी तरह से सफ़ेद संगमरमर की बनी इमारत है। कहते हैं कि इसे बनवाने में करोड़ों रुपये लगे थे। हज़ारों लोगों ने कई सालों तक काम किया था।

इसकी दीवारों में कीमती हीरे जड़े गये थे। पर अंग्रेज़ों ने उनको निकालकर उनकी जगह काँच के टुकड़े लगवा दिये। ताजमहल के सामने का बाग बहुत ही सुंदर है। उसकी सुंदरता देखकर लोग प्रसन्न हो जाते हैं।

चाँदनी रात में इसकी सुंदरता को देखकर लोग मोहित हो जाते हैं।

(8) लाल बहादुर शास्त्री

भारत माता के सुपुत्र लाल बहादुर शास्त्री हमारे देश के दूसरे प्रधानमंत्री थे। उनका जन्म 2, अक्तूबर 1904 को हुआ। आज़ादी की लड़ाई में उन्होंने भाग लिया। अंग्रेज़ों ने उनको जेल में डाल दिया। उन्होंने 9 साल जेल में बिताये।

नेहरूजी की मृत्यु के बाद शास्त्री जी भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री बने। सन् 1965 में पाकिस्तान ने भारत पर हमला किया। तब इनकी आज्ञा से भारत के सिपाहियों ने पाकिस्तानी सेना को हराया। ताशकंद में भारत और पाकिस्तान के नेताओं के बीच समझौता हुआ। उसी रात अचानक हृदय-गति रुक जाने से उनका निधन हुआ।

लाल बहादूर शास्त्री जी में सादगी, ईमानदारी, देश भक्ति, दृढ़ता आदि गुण विद्यमान थे। वे शांति के पूजारी थे। वे जितने नम्र थे, उतने ही कठोर थे। सिर्फ़ डेढ़ साल तक प्रधानमंत्री के पद पर रहकर उन्होंने बड़ा चमत्कार कर दिखाया। इसलिए हम उनको हमेशा याद करते रहेंगे।

(9) रेलगाड़ी

रेलगाड़ी यातायात का मुख्य साधन है। यह विज्ञान का श्रेष्ठ आविष्कार है। रोज़ हज़ारों लोग इसमें यात्रा करते हैं। लंबी यात्रा के लिए लोग रेलगाड़ी ही पसंद करते हैं। यह बड़ी तेज़ी से चलनेवाला साधन है।

पुराने ज़माने में रेलगाड़ियाँ Steam भाप के बल पर चलती थीं। वैज्ञानिक प्रगति के कारण आजकल बिजली से चलायी जाती हैं। एक्सप्रेस गाड़ियाँ डीज़ल से चलती हैं। मालगाड़ियाँ भी अलग होती हैं। ये गाड़ियाँ माल ले जाती हैं। बड़े-बड़े सामान आसानी से एक जगह से दूसरी जगह तक पहुँचाती हैं।

भारत सरकार रेलवे विभाग पर अधिक ध्यान देती है। रेलवे विभाग द्वारा सरकार को अधिक लाभ मिलता है। सचमुच रेलगाड़ी मानव समाज के लिए एक वरदान है।

मध्यमा पाठ्य पुस्तक

भाग - 7

अनुवाद अभ्यास

Translation Practice /மொழி பெயர்ப்பு பயிற்சி / अनुवाद अभ्यास

(अ) अपनी प्रांतीय भाषा में अनुवाद कीजिए :-

पाठ - 1

मुझे पहाड़ की चोटी पर पहुँचना था और समय कम हो रहा था। जंगल में बाघ अपने शिकार पर चार या पाँच बजे ही आ जाता है; इसलिए मैं बड़ा सावधान होकर चल रहा था। कड़ी चढ़ाई पर मैं चला जा रहा था। एक-एक पैर संभलकर रखता जा रहा था। एक झाड़ी के आसपास चिड़ियाँ कुछ विचित्र रूप से चिड़चिड़ा रही थीं। उधर जो देखा, तो हृदय की धड़कन एकदम बढ़ गयी। सामने तीन सौ गज़ पर झाड़ी के पास बाघ खड़ा हुआ दिगदर्शन कर रहा था।

पाठ - 2

दिल्ली के सिंहासन पर बैठनेवाला पहला मुगल बादशाह बाबर था। वह बड़ा ही बुद्धिमान और विद्वान था। वह कवि भी था। उसे कला से बड़ा प्रेम था। बाबर के बाद हुमायूँ सिंहासन पर बैठा। उसे ज्योतिष शास्त्र से बड़ा प्रेम था। वह नक्षत्रों का हिसाब करके उसीके अनुसार अपना दरबार किया करता था। कहते हैं कि एक बार किसी भिश्ती ने उसके प्राण बचाये थे। हुमायूँ ने उसको तीन घंटे के लिए बादशाह बनाया था।

पाठ - 3

दक्षिण भारत में क़रीब - क़रीब सब जगहों में नारियल होते हैं। नारियल के पेड़ लगाने के लिए मध्यम आयु के पेड़ के फलों को काटकर लाते हैं। काटने के एक महीने के बाद उनको ज़मीन में गाड़ देते हैं। जब वे आठ-नौ महीने के पौधे हो जाते हैं, तब उनको उठाकर दूसरी जगहों पर गाड़ देते हैं। मछलियों की खाद से उनके पौधे बहुत अच्छे बढ़ सकते हैं। अगर अच्छी खाद दी जाए, तो नारियल का पेड़ पाँच-छः वर्षों में ही फल देने लगता है। नारियल के पेड़ वर्ष में तीन-चार बार या इससे अधिक बार भी फल देते हैं।

पाठ - 4

अंग्रेज़ों ने पुदुक्कोट्टै के राजा को पत्र लिखा। उसमें लिखा था कि कट्टबोम्मन को पकड़ा देने पर अच्छा पुरस्कार दिया जाएगा। पुरस्कार के लोभ में पुदुक्कोट्टै के राजा ने कट्टबोम्मन के पास अपने नौकरों को भेजा। उन्होंने कट्टबोम्मन का पता लगाकर उन्हें राजमहल में बुलाया। कट्टबोम्मन पुदुक्कोट्टै के राजा का कपट नहीं जानते थे। पुदुक्कोट्टै के राजा ने कट्टबोम्मन के राजमहल में पहुँचने का समाचार अंग्रेज़ों को दिया। समाचार पाते ही अंग्रेज़ों ने कट्टबोम्मन को कैद कर लिया।

पाठ - 5

एक बार ख़लीफा उमर यात्रा पर गये। सवारी के लिए उनके पास ऊँट था। उमर ऊँट पर सवार हुए और नौकर ऊँट की नकेल पकड़कर चलने लगा। बड़ी दूर की यात्रा थी। इसलिए उमर ने नौकर से कहा, “देखो, यात्रा तो बहुत लंबी है। थोड़ी दूर मैं सवार हो जाऊँगा, तुम ऊँट की नकेल पकड़कर चलना; फिर थोड़ी दूर तुम सवार हो जाना, और मैं पैदल चलूँगा। क्योंकि खुदा के सामने बादशाह और नौकर सब बराबर हैं।” इस तरह यात्रा पूरी की और शाम को दोनों शहर वापस आये।

पाठ - 6

अब उतनी मज़बूत इमारतें नहीं बनतीं, जितनी प्राचीन काल में बनती थीं। इसका कारण शायद यह है कि इमारतों में छिपने से दुश्मनों से बचाव नहीं हो सकता। हवाई जहाज़ से गोले बरसाकर मज़बूत से मज़बूत क़िले तोड़े जा सकते हैं। इसलिए आजकल के लोग इन चीज़ों को फ़िज़ूल समझते हैं। मकबरे वगैरह बनाने का रिवाज़ भी उठता जा रहा है। अगर आजकल कोई राजा पिरामिड़ जैसी चीज़ें बनाना शुरू करे, तो लोग उसे पागल कहेंगे।

पाठ - 7

जब से मनुष्य को एवरेस्ट चोटी का पता लगा, वह उसपर चढ़ने के प्रयत्न बराबर करता रहा। भिन्न-भिन्न जाति तथा देशों के लोग आये और निराश होकर लौटते रहे। कइयों ने इस प्रयत्न में अपनी जान की भी बलि दी, लेकिन मनुष्य जाति की हिम्मत कभी टूटी नहीं। पहली बार सन् 1921 ईं. में, दूसरी बार सन् 1922 ईं. में, विशेष प्रयत्न किये गये। सन् 1953 ईं. में एक ब्रिटिश पर्वतारोही दल ने कर्नल हंट के नेतृत्व में अपनी कोशिश में विजय पायी।

पाठ - 8

हमारा देश बहुत बड़ा है। इसकी बड़ाई का अनुमान इस प्रकार किया जा सकता है कि यदि आप उत्तर से दक्खिन, कश्मीर से कुमारी अंतरीप तक, दस मील रोज़ चलकर पार करें, तो कम से कम आठ महीने चाहिए। और इतना ही समय पूरब से पश्चिम, सिंध से आसाम तक पार करने में लगेगा। यह देश इतना बड़ा है कि कोई भी महीना हो, आपको इसमें हर प्रकार की जलवायु मिल सकती है। कोई ऐसा फल नहीं, कोई ऐसा अन्न नहीं, जो इस देश में न होता हो।

(आ) हिन्दी में अनुवाद कीजिए :-

पाठ - 1

For a minute both of us stood steady. The tiger was growling. Its eyes were emitting fire. I did not shoot at it and it did not attack me. That one minute was like an age. In the end it turned and ran back. When it turned, I thought it was going to attack me. I fired my gun. After that I heard the terrific roar of the tiger.

ஒரு நிமிடம் வரை நாங்கள் இருவரும் அசையாது நின்றிருந்தோம். புலி உறுமிக்கொண்டிருந்தது. அதன் கண்களிருந்து தீப்பொறிப்போல் ஒளி வீசிக்கொண்டிருந்தது. நானும் அதைச் சுடவில்லை. அதுவும் என்னைத் தாக்கவில்லை. இந்த ஒரு நிமிடம் ஒரு யுகத்திற்குச் சமமாக இருந்தது. கடைசியில் புலி ஒரே மூச்சில் திரும்பி ஓடிற்று. அது திரும்பியதும் அது என்மேல் தாக்க வருகிறது என்று நினைத்தேன், துப்பாக்கியால் சுட்டேன். இதன் பிறகு புலியின் இதயத்தைப் பிளக்கக் கூடிய கர்ஜனை காதில் பட்டது.

पाठ - 2

After Babar had ruled over Delhi for four or five years his dear and the only son fell ill. In spite of the best treatment his illness became worse and worse. One of the courtiers said, "If you sacrifice one of the things which is dearest to you, he will get well." On this Babar said, "Yes, I am ready to sacrifice my life to save my son."

தில்லி அரியணையில் அமர்ந்து நான்கைந்து ஆண்டுகளுக்குப் பிறகு பாபருடைய அன்பான ஒரே மகன் ஹூமாயூன் நோயுற்றான். மிகுந்த மருத்துவம் செய்தும் அவனுடைய நோய் அதிகரித்து வந்தது. அரச சபையினரில் ஒருவர் சொன்னார். ‘தாங்கள் தங்களுடைய மிக விருப்பமான ஒரு பொருளை துறந்து விடுவீர்களேயானால் தங்களுடைய மகன் குணமடைவான்.‘ இதன் பின் பாபர் சொன்னார் - ‘என்னுடைய அன்பு மகனுக்காக நான் என்னுடைய உயிரையே துறந்துவிடத் தயாராக இருக்கிறேன்’.

पाठ - 3

There is very sweet water inside the coconut. People use the Kernel of the coconut in many ways. The ripe kernel is dried in the sun. Then it is called 'Kopra'. It is pressed in the oil press and oil is extracted. Coconut oil is used for lighting lamps and applying to the head. It's leaves are used for making mats. Its fibre is used to make ropes, bags and many other articles.

தேங்காய்க்குள் மிகவும் இனிப்பான நீர் இருக்கிறது. தேங்காயின் பருப்பை மக்கள் பல வேலைகளுக்குப் பயன்படுத்துகிறார்கள். முற்றிய தேங்காய்ப் பருப்பை உலர்த்திக் கொள்கிறார்கள். அதைக் கொப்பரை என்று சொல்லுகிறோம். அந்தக் கொப்பரையைச் செக்கிலிட்டு ஆட்டி எண்ணெய் எடுக்கிறார்கள். தேங்காயெண்ணெய் விளக்கிற்கும், தலையில் தடவிக் கொள்தவதற்கும் உபயோகப்படுகிறது. அதனுடைய ஓலைகளைக்கொண்டு பாய்கள் செய்யப் படுகின்றன. அதனுடைய நாரினால் கயிறு, பை முதலிய பலவித பொருள்கள் செய்யப்படுகின்றன.

पाठ - 4

Standing on the gallows, the brave Kattabomman said, "I am neither afraid of, nor sad about my death. I am going to die for my country. The country is everything for me. It is my sacred duty to give up my life for its sake. But I am sad about one thing. I have missed the chance to help my country at its time of distress. I am now making amends for it.

தூக்குமேடையில் நின்றுகொண்டு வீரபாண்டிய கட்டபொம்மன் சொன்னார்- "எனக்குச் சாவைப்பற்றி கவலையில்லை; வருத்தமுமில்லை. நான் எனது நாட்டிற்காக இறக்கப்போகிறேன்; நாடுதான் எனக்கு அனைத்தும். அதற்காக உயிரை இழப்பது என்னுடைய தலை சிறந்த நோன்பு." ஆனால் ஒரே ஒரு எண்ணம் மட்டும் எனக்கு வருத்தம் அளிக்கிறது. ஆபத்துக்காலத்தில் தன் நாட்டிற்கு உதவாமல் வந்து விட்டேன். இப்பொழுது அதற்காக வருந்திக் கொண்டிருக்கிறேன்.

पाठ - 5

If all of us work hard and earn our food, our villages will flourish as our olden days. All necessary things are to be produced in villages. If we do like this, no other power can dominate us. If there is any quarrel in village, all village people must sit together and solve the problem, as we do at our home. Whoever, we feel as honest and good among us, we must make him as our leader. We shall send him to the Assembly house or Parliament as our representative to represent our welfare issues.

நாம் எல்லோரும் உழைத்துச் சாப்பிடுவோமானால் நமது கிராமங்கள் முன்போல் செழிப்புள்ளவைகளாகும். தேவையுள்ள ஒவ்வொரு பொருளையும் கிராமத்திலேயே உண்டாக்கவேண்டும். அப்பொழுது நம்மேல் வேறொரு மாற்று சக்தி தனது ஆதிக்கத்தைச் செலுத்த முடியாது. தன்னுடைய பொருள்களை நம் தலைமேல் சுமத்த முடியாது. கிராமத்தில் ஏதாவது சண்டை சச்சரவு நடந்தால் வீட்டைப் போலவே எல்லா மக்களும் உட்கார்ந்து கொண்டு அதைத் தீர்த்துக்கொள்வோம். நம்மில் எவனை நல்லவனாகவும் நாணயமுள்ளவனாகவும் கருதுகிறோமோ அவனை நம்முடைய தலைவனாக்குவோம். நம்முடைய நலனைப்பற்றி எடுத்துக்கூற அவனை மாநில சட்டமன்றத்திற்கோ அல்லது நாடாளுமன்றத்திற்கோ நம்முடைய பிரதிநிதியாக்கி அனுப்புவோம்.

पाठ - 6

The best memorial for the Aryas are the Vedas (Scriptures). You have read that they are the most ancient books. Vedas contribute to our knowledge. The word 'Vedas' means knowledge. In those days people have not thought of anything that was not contained in the Vedas. Just think how high the Aryan level of intelligence should have been.

ஆரியர்களின் மிகச்சிறந்த நினைவுச்சின்னம் அவர்களுடைய வேத நூல்களே. அவர்களுடைய நூல்களில் எல்லாவற்றையும் விடப் பழமையான நூல்கள் வேதங்கள் என்று நீ படித்திருக்கிறாய். வேதங்களில் அறிவுக்கு வேண்டிய விஷயங்கள் எழுதப்பட்டிருக்கின்றன.

வேதம் என்றால் அறிவு என்பது பொருள். அந்நாட்களில் வேதங்களில் இல்லாத எந்த உயர்ந்த விஷயத்தையும் மக்கள் நினைக்கக்கூட வில்லை. ஆரியர்களின் மூளை எவ்வளவு உயர்ந்ததாக இருந்திருக்கும் என்று கொஞ்சம் யோசித்துப்பார்.

पाठ - 7

Climbing over mountains, especially mountains like the Himalayas, which are heavily covered by snow is a very risky job. As one goes higher and higher, the oxygen becomes rarer and rarer and so breathing becomes difficult. Besided, it is also very cold up there. When one coughs or sneezes, the water vapour coming out the mouth freezes and falls down like a stone. Tenzing learnt many new methods of mountaineering.

உயர்ந்த மலைகளின்மீது கால் நடையாக ஏறுவது, மேலும் குறிப்பாக இமயமலை போன்ற ஒரேயடியாக பனியால் மூடப்பட்டிருக்கும் மலைகளின் மேல் ஏறுவது மிகவும் அபாயகரமான செயல். மேலே செல்லச்செல்ல காற்றில் பிராணவாயு குறைந்து போவதனால் மூச்சு உட்கொள்வது கடினமாகிவிடுகிறது. மேலே குளிர் மிகவும் அதிகமாக இருக்கிறது. இருமினாலும், தும்மினாலும் வாயிலிருந்து வெளிவரும் எச்சிலும் நீராவியும் உறைந்து கல் மாதிரியாகி கீழே விழுகின்றன. தென்ஜிங் இமயமலையின் மேல் ஏறுவதற்கான எல்லாப் புதிய முறைகளையும் கற்றுக் கொண்டார்.

पाठ - 8

The country we live in is known as Bharatvarsh, Hindustan or Hind. The most ancient name of our land is Bharatvarsh. Our country gets this name because of its ancient ruler named Bharat. It is said that he was the first to rule over this land. The names Hindustan and Hind were given by foreigners. The Englishmen called our country 'India'

நாம் வாழும் நாட்டை பாரதவர்ஷம், ஹிந்துஸ்தானம் அல்லது ஹிந்த் என்று சொல்கிறார்கள். நம் நாட்டின் பழமையான பெயர் பாரதவர்ஷம்தான். பரதன் என்றபெயருடைய புகழ் வாய்ந்த நம்முடைய முன்னோர் ஒருவர் இருந்தததால் இதற்கு இப்பெயர் ஏற்பட்டது. அவர்தான் முதன் முதல் இந்த நாட்டை அமைத்தார் என்று சொல்லப்படுகிறது. ஹிந்துஸ்தானம் அல்லது ஹிந்த் என்றபெயர் வேற்று நாட்டவர்களால் அளிக்கப்பட்டது. ஆங்கிலேயர்கள் நம் நாட்டை 'இந்தியா' என அழைத்தார்கள்.

भाग - 7

अनुवाद अभ्यास

(जवाब Answers பதில்கள்)

(अ) अपनी प्रांतीय भाषा में अनुवाद कीजिए।

(1) मुझे पहाड़ की .... दिग्दर्शन कर रहा था।

I had to reach almost to the peak of the mountain as the time was very less. The tiger comes at 4 or 5O'clock in the forest for hunting. Therefore, I was walking with utmost care. I was climbing up the slope very carefully. As I was going on the steep peak in the strange manner. Around a bush the birds were chirping and as I looked that side, the beating of the my heart speeded up at once. A tiger was looking around standing near a bush at a distance of three hundred yards.

நான் ஏறக்குறைய மலையின் உச்சியில் ஏறவேண்டி இருந்தது. மேலும் நேரம் குறையலாயிற்று. காட்டில் புலி வேட்டையாட நான்கு அல்லது ஐந்து மணிக்கு வந்து விடுகிறது. ஆகையால், நான் மிக விழிப்போடு நடந்து கொண்டிருந்தேன். நான் ஏற்றமான பாதையில் அடிமேல் அடி எடுத்து வைத்து ஜாக்கிரதையாகப் போய்க் கொண்டிருந்தேன். ஒரு புதருக்கு அருகில் பறவைகள் வித்தியாசமாக ஓசையெழுப்பிக் கொண்டிருந்தன. அங்கு பார்த்தபொழுது என் இதயத்துடிப்பு ஒரேயடியாக அதிகரித்து விட்டது. புலி என் எதிரே முன்னூறு கஜ தூரத்தில் புதர் அருகில் நின்று கொண்டு நாற்புறமும் நோக்கிக் கொண்டிருந்தது.

(2) दिल्ली के सिंहासन .... बनाया था।

Babar was the first Moghul Emperor to sit on the throne of Delhi empire. He was very intelligent and a scholar also. Moreover, he was a poet as well. He had love towards art. Humayun occupied the throne after Babar. He has much interest towards astrology. After counting stars, he used to arrange his court according to it. It is said that once a waterman had saved his life. Humayun made him the emperor of Delhi for three hours.

தில்லி அரியணையில் அமர்ந்த முதலாவது முகலாய பேரரசன் பாபர். அவன் பெரும் அறிவாளியாகவும், அறிஞனாகவும் இருந்தான். அவன் கவிஞனாகவும் இருந்தான். அவன் கலைப்பற்று அதிகம் கொண்டவன். பாபருக்கு பின் ஹுமாயூன் அரியணையில் அமர்ந்தான். அவன் ஜோதிட சாஸ்திரத்தில் பற்று கொண்டவன். அவன் நட்சத்திரங்களைக் கணக்கிட்டு ஆராய்ந்து அதற்கேற்றாற்போல் ஆட்சி புரிந்து வந்தான். ஒரு சமயம் தண்ணீர் எடுப்பவன் ஒருவன் அவன் உயிரைக் காப்பாற்றினான். இதற்காக ஹுமாயூன் அவனை மூன்று மணி நேரம் வரை சக்கரவர்த்தியாக ஆக்கினான்.

(3) दक्षिण भारत में .... फल देते हैं।

Coconut is grown almost at all places in the South India. To plant the sapling of the coconut it is brought from the fruit of a middle-aged tree. It is kept under the ground after it is separated from the tree. After they become the plants of 8 or 9 months, they are planted at different places duly lifting. These plants are grown rapidly by using fish-manure. If proper manure is given, the coconut trees will be read to yield within 5-6 years. The coconut tree yields thrice or four times a year.

தென்னிந்தியாவில் ஏறக்குறைய எல்லா இடங்களிலும் தென்னை மரங்கள் இருக்கின்றன. தென்னை பயிரிட நடுத்தர வயதுடைய மரங்களில் இருந்து முற்றிய காய்களை பறித்துக்கொண்டு வருகிறார்கள். பறித்தெடுத்த ஒரு மாதத்திற்குப்பின் அவற்றை நிலத்தில் புதைத்து விடுகிறார்கள். அவை எட்டு அல்லது ஒன்பது மாதக்கன்றுகளாக இருக்கும்போது அவற்றை எடுத்து வேறு இடத்தில் நடுகிறார்கள். மீன் உரமிடுவதால் அப்பயிர்கள் நன்கு வளரக்கூடும். நல்ல உரமிட்டால் தென்னைமரம் ஐந்து அல்லது ஆறு ஆண்டுகளுக்குள் பலன் தரத் தொடங்கிவிடும். தென்னை மரங்கள் வருடத்திற்கு மூன்று அல்லது நான்கு முறையோ அல்லது அதற்கும் அதிகமான பயன் தருகின்றன.

(4) अंग्रेज़ों ने .... कैद कर लिया।

The Britishers wrote a letter to the King of Pudukkottai. It was written that who ever finds Kattabomman will be given worthy reward. Greedy of the reward, the Pudukottai king sent his servants to capture Kattabommman. They found Kattabomman and asked him to come to the palace. Kattabomman was not aware of Pudukottai King's deceit. As soon as Kattabomman reached the palace the Pudukottai King gave the news to the British Bennerman got the news. British arrested Kattabomman as soon as they got the news.

ஆங்கிலேயர்கள் புதுக்கோட்டை அரசனுக்கு கடிதம் எழுதினார்கள். கட்டபொம்மனைப் பிடித்து கொடுத்தால் தக்க சன்மானம் வழங்கப்படும் என்றும் எழுதினார்கள். சன்மானம் பெறவேண்டும் என்ற பேராசையால் புதுக்கோட்டை மன்னன் தன் பணியாட்களை கட்டபொம்மனிடம் அனுப்பினான். அவர்கள் கட்டபொம்மன் இருக்கும் இடத்தை அறிந்து அவரை அரண்மனைக்கு அழைத்தனர். கட்டபொம்மன் புதுக்கோட்டை மன்னனின் கபடத்தை உணரவில்லை. கட்டபொம்மன் புதுக்கோட்டை அரண்மனைக்கு வந்துவிட்டார் என்ற செய்தியை கேட்டதும் புதுக்கோட்டை மனன்ர் ஆங்கிலேயர்களுக்கு செய்தி அனுப்பினான். செய்தி பெற்றவுடனேயே ஆங்கிலேயர் கட்ட பொம்மனை கைது செய்து விட்டார்கள்,

(5) एक बार ख़लीफा .... शहर वापस आये।

Once Khalifa Omar went on a tour. He had a camel to ride on. Omar rode on the camel and the servant walked holding the camel's string. It was a long journey. So Omar told his servant – "See, it is a long tour. I shall ride for some time. You walk holding the camel's string. Then you ride for some time and I shall walk, because in the presence of God, emperor and a servant, are equal. Thus the tour was completed and they both returned to the town in the evening.

ஒரு முறை கலிபா உமர் ஒரு பயணம் மேற்கொண்டார். பிரயாணம் செய்ய அவரிடம் ஓர் ஒட்டகம் இருந்தது. உமர் ஒட்டகத்தின் மீது ஏறி அமர்ந்தார். வேலையாள் ஒட்டகத்தின் மூக்குக் கயிற்றைப் பிடித்துக் கொண்டு செல்லலானான். தொலைதூரப் பயணம், ஆகையால், உமர் வேலைக்காரனிடம் சொன்னார் - 'இது நீண்ட பிரயாணம். அதனால் சிறிது தூரம் நான் ஒட்டகத்தின் மீது உட்கார்ந்து வருகிறேன். அதன்பின் நீ சிறிது தூரம் ஒட்டகத்தின் மீது அமர்ந்து செல். அப்போது நான் நடந்து வருவேன் ஏனெனில் ஆண்டவனுக்கு முன்னால் அரசனும், வேலைக்காரனும் ஒன்றே என்றார். இவ்வாறு பயணத்தை முடித்துக் கொண்டு இருவரும் மாலையில் நகரத்திற்கு திரும்பி வந்தனர்.

(6) अब उतनी मज़बूत .... पागल कहेंगे।

Nowadays strong buildings are not constructed as olden days. The reason for this may be that by hiding in the buildings, one cannot escape from enemies. By droping bombs from aeroplane, even the strongest fort can be demolished. Therefore the present day people consider it is useless to build such tombs. The custom of erecting tombs etc., is also disappearing. If any king start constructing pyramids today, people will call him mad.

முற்காலத்தில் கட்டப்பட்டவை போன்று உறுதியான கட்டிடங்கள் இக்காலத்தில் கட்டப்படுவதில்லை. கட்டிடங்களில் ஒளிந்து கொண்டு விட்டாலும் பகைவர்களிடமிருந்து தப்ப முடியாமற் போகலாம் என்பதே ஒருவேளை இதற்குக் காரணமாக இருக்கலாம். விமானங்களில் இருந்து குண்டுமாரி பொழிந்து மிக உறுதியான கோட்டைகளையும் தகர்த்தெறியலாம். ஆகையால் தற்காலத்தவர்கள் இப்பொருள்களை வீணானவை என்று கருதுகிறார்கள். சமாதிகள் முதலியன கட்டும் பழக்கமும் மறைந்து கொண்டு இருக்கிறது. எவனாவது ஒரு அரசன் இன்று 'பிரமிடுகள்' போன்ற கட்டிடங்களை கட்டத் தொடங்கினால் மக்கள் அவ்வரசனை பைத்தியம் என்பார்கள்.

(7) जब से मनुष्य को .... विजय पायी।

From the time man came to know about the Everest Peak (Mt. Everest), he has been continuously making attempts to climb it. People of various castes and nations came and returned disappointed. Many sacrificed their lives also in this attempt, but mankind's courage is never lost. Attempt was made for the first time in 1921 to climb this peak with special effort and again for the second time a special attempt was made in 1922. At the end in 1953 a British mountaineering party headed by Colonel Hunt was successful in their attempt.

எவரெஸ்ட் உச்சியின் இருப்பிடம் தெரிந்தது முதலே மனிதன் அதன்மீது ஏற இடைவிடாமல் முயற்சி செய்து கொண்டே இருந்தான். பல்வேறு இனத்தவரும், நாட்டவரும் வந்தார்கள். நம்பிக்கை இழந்து திரும்பிச்சென்று கொண்டிருந்தார்கள். பலர் இம்முயற்சியில் தம் உயிரையே இழந்தனர். என்றாலும் மானிட இனத்தின் தைரியம் குலையவில்லை. முதன் முறை கி.பி. 1921ல், இரண்டாம் முறை 1922ல் விசேஷ முயற்சி செய்யப்பட்டது. கி.பி. 1953ல் ஒரு பிரிட்டிஷ் மலை ஏறும் குழுவினர் கர்னல் ஹண்ட் என்பவரின் தலைமையில் சென்று தமது முயற்சியில் வெற்றி பெற்றார்கள்.

(8) हमारा देश बहुत .... न होता हो।

Our country is very big. Its vastness can be guessed in this manner. If you walk ten miles daily and cross from north to south, from Kashmir to Kanyakumari, it will take atleast eight months. It will take the same time to cross east to west, from Sindh to Assam. Our country is so vast that, whatever be the month, all kind of climate is found here. All the varieties of fruits and food grains are available in this country.

நம் நாடு மிகப் பெரியதாகும். இது எவ்வளவு பெரியது என்பதை இம்மாதிரி அனுமானிக்கலாம். நீங்கள் வடக்கில் இருந்து தெற்கே, காஷ்மீரத்திலிருந்து கன்யாகுமரி வரை தினமும் பத்து மைல் தூரம் நடந்தால் ஏறக்குறைய எட்டு மாதங்களில் சேர முடியும். கிழக்கில் இருந்து மேற்கே, சிந்துவில் இருந்து அஸாம் வரை யாத்திரை செய்தாலும் இதேகாலம்தான் பிடிக்கும். இது மிகப்பரவலான நாடாக இருப்பதால் எந்த மாதத்திலும் எல்லாப் பருவ சீதோஷ்ணம் உங்களுக்குக் கிடைக்கக்கூடும். இந்த நாட்டில் கிடைக்காத பழங்களும், உணவு பொருள்களும் இல்லை என்றே கூறலாம்.

(आ) हिंदी में अनुवाद।

(1) For a minute both .... roar of the tiger.

ஒரு நிமிடம் வரை .... காதில் பட்டது.

हम दोनों एक मिनट तक स्तब्ध खड़े रहे। बाघ गुर्रा रहा था। उसकी आँखों में आग उगल रही थीं। मैंने न उसपर गोली मारी और न ही वह मुझपर झपटा। वह एक मिनट मेरे लिए एक युग के समान था। आखिर बाघ एकदम मुड़कर भागा। जब वह मुड़ने लगा तो मैंने सोचा कि वह मुझपर हमला करने आ रहा है। मैंने बंदूक से गोली मारी। बाद में उस बाघ का हृदय विदारक गर्जन कानों में सुनाई पड़ा।

(2) After Babar .... to save my son.

தில்லி அரியணையில் .... தயாராக இருக்கிறேன்.

दिल्ली के सिंहासन पर बैठने के चार–पाँच सालों के बाद बाबर का प्यारा और इकलौता बेटा हुमायूँ बीमार पड़ा। बढ़िया इलाज करने पर भी उसकी बीमारी बढ़ती गयी। दरबारियों में से एक ने कहा – "अगर आप अपनी किसी एक सबसे प्यारी चीज़ को त्याग दें तो आपका बेटा अवश्य स्वस्थ हो जाएगा।" इसपर बाबर बोला – मैं अपने बेटे के लिए अपनी जान को भी छोड़ने तैयार हूँ।

(3) There is very sweet .... other useful articles.

தேங்காய்க்குள் .... செய்யப்படுகின்றன.

नारियल के अंदर बहुत मीठा पानी है। लोग नारियल की गरी को अनेक कार्यों में उपयोग करते हैं। नारियल की पकी गरी को सुखा लेते हैं। उसे कोपरा कहते हैं। उसे कोल्हू में डालकर निचोड़ते हैं और तेल निकालते हैं। नारियल का तेल दीप जलाने और सिर पर लगाने के काम में आता है। नारियल के पत्ते से चटाइयाँ बनायी जाती हैं। उसके रेशों से चटाइयाँ, रस्सी, थैली आदि अनेक तरह की उपयोगी वस्तुएँ बनायी जाती हैं।

(4) Standing on the gallows .... making amends for it.

தூக்குமேடையில் .... வருந்திக் கொண்டிருக்கிறேன்.

फाँसी के तख्ते पर खड़े होकर वीरपांडिय कट्टबोम्मन ने कहा– "मुझे मृत्यु का भय नहीं, चिंता भी नहीं। मैं अपने देश के लिए मरने जाता हूँ। देश ही मेरे लिए सब कुछ है। उसके लिए प्राण देना मेरा धर्म है। लेकिन मुझे एक ही खेद है। विपत्ति के समय अपने मेरे देश की मदद किये बिना ही आ गया। इसके लिए मैं अब अफसोस कर रहा हूँ।

(5) If all of us work hard and .... represent our welfare.

நாம் எல்லோரும் .... பிரதிநிதியாக்கி அனுப்புவோம்.

अगर हम सब कठिन परिश्रम करके रोज़ी रोटी कमाएंगे तो हमारे गाँव, पूर्व की तरह सम्पन्न बनेंगे। सभी आवश्यक चीजों का उत्पादन गांवों में ही होना चाहिए। ऐसा करेंगे तो, कोई भी शक्ति हमपर अधिकार नहीं कर सकती। गाँव में अगर कोई झगड़ा हो, तो सभी गाँववासियों को एक साथ बैठकर समाधान करना चाहिए, जैसा कि हम घर में करते हैं। हममें से जिसको ईमानदार और अच्छे समझते हैं, उनको अपना नेता बना लेना है; उनको हमारे कल्याणकारी कार्यों के लिए प्रतिनिधि बनाकर विधान सभा या संसद सभा भेजना चाहिए।

(6) The best memorial for the Aryas .... should have been.

ஆரியர்களின் .... யோசித்துப்பார்.

आर्यों के सर्वश्रेष्ठ स्मारक उनके वेद ग्रंथ हैं। तुमने पढ़ा होगा कि वेद ही सबसे प्राचीन ग्रंथ हैं। वेदों में ज्ञान संबंधी विषय लिखे गये हैं। वेद का दूसरा नाम है ज्ञान। उस ज़माने में लोग उन बातों को नहीं मानते थे, जो वेदों में अंकित न हों। ज़रा सोचो, आर्यों का बौद्धिक स्तर कितना ऊँचा रहा होगा।

(7) Climbing over mountains .... new methods of mountaineering.

உயர்ந்த மலைகளின்மீது .... கற்றுக்கொண்டார்.

ऊँचे पहाड़ पर चढ़ना, खासकर बरफ़ से ढके हिमालय जैसे पहाड़ों पर चढ़ना खतरनाक है। ऊपर चढ़ते-चढ़ते हवा में प्राणवायु की कमी हो जाती है। इस कारण साँस लेना कठिन हो जाता है। ऊपर ठंड अधिक लगती है। खाँसने या थूकने से, मुँह से निकलनेवाली बर्फ़ और भाप जमकर पत्थर की तरह नीचे गिरती है। तेनजिंग ने हिमालय पहाड़ पर चढ़ने के लिए कई नये तरीके सीख लिये।

(8) The country we live .... our country 'India'.

நாம் வாழும் நாட்டை .... அழைத்தார்கள்.

जिस देश में हम रहते हैं, वह भारतवर्ष, हिंदुस्तान या हिंद कहलाता है। हमारे देश का प्राचीनतम नाम भारतवर्ष ही है। भरत नामक एक प्राचीन शासक के कारण हमारे देश का नाम भारत बना। कहा जाता है कि उन्होंने ही पहले पहल इस देश का निर्माण किया। 'हिंदुस्तान' या 'हिंद' विदेशियों के दिये हुए नाम थे। अंग्रेज़ हमारे देश को 'इंडिया' कहने लगे।

मध्यमा--1 MODEL QUESTION PAPER
MADHYAMA-1

Roll No 5214146

समय : 2½ घंटे] **[पूर्णांक : 100**

1. **किसी एक पद्यांश का भावार्थ हिन्दी में लिखिए :--** 5

(1) पंडित की संगति करने से दूर मूर्खता हो जाती
पर चालाकों की संगति से बुरी चाल है आ जाती
सुनो, उदाहरण ये सब हमको सीख यही है सिखलाते
जो जैसी संगति करते हैं, वे वैसा है फल पाते।

(2) "दैव मेरे भाग्य में क्या है बदा
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में
या चलूँगी फिर अंगारे पर किसी
छू पड़ूँगी या कमल के फूल में"

(3) कैंची नहीं हाथ में तेरे
कही पत्तियाँ न्यारी हैं
रंग नहीं हाथों में तेरे
फूल रंगे बलिहारी हैं।।

2. **किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए:-** 10

(1) कमल क्यों नष्ट हो जाते हैं?
(2) बूँद बादलों की गोद से निकलकर क्या सोचती है?
(3) तारे आकाश में कैसे लटक रहे हैं?
(4) इंद्रधनुष कैसा प्रकट होता है?
(5) छुट्टी होने पर होनहार बालक कहाँ जात हैं?
(6) कबीर ने गुरु और गोविन्द में किसे श्रेष्ठ कहा है? क्यों?
(7) तुलसीदास के अनुसार किसके घर में नहीं जाना है?
(8) रैदास के दोहे का आशय क्या है?

3. **किसी एक कविता का सारांश लिखिए:-** 14

(1) संगति का फल
(2) एक बूँद
(3) होनहार

4. **किन्हीं दो पद्यों का कंठस्थ रूप ज्यों का त्यों लिखिए :--** 5

(1) कस्तूरी कुंडल ....देखै नाहिं।।
(2) विद्या धन .... कि पौन।।
(3) रहिमन धागा .... परि जाय।।

5. **किन्हीं पाँच का अर्थ हिन्दी में लिखिए :–** 5

(1) पसंद करना
(2) आदर करना
(3) प्रतिवर्ष
(4) बहादुर
(5) स्वर्ग सिधारना
(6) गणना
(7) चौंक
(8) शकल
(9) उत्साह
(10) विचार

6. **किन्हीं पाँच का विलोम शब्द लिखिए :–** 5

(1) उचित
(2) उत्तीर्ण
(3) बढ़िया
(4) थोड़ा
(5) कठिन
(6) बिगड़ना
(7) आरंभ
(8) संभव
(9) आदर
(10) मंजूर

7. जोड़े बनाइए :– 5

(1) बीरबल रसोई घर में	-	देश भक्ति से भरी हुई थी।
(2) कर्नाटक शाखा	-	भारतीय अंतरीक्ष अनुसंधान संगठन
(3) भारती की कविताएँ	-	बहुत दूर हैं।
(4) 'इसरो'	-	भारतवाणी
(5) हम कविलवस्तु से	-	खाना पका रहा था।

8. किन्हीं पाँच का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :– 10

(1) उत्तीर्ण
(2) संपत्ति
(3) बहादुर
(4) थोड़ा
(5) सुख
(6) प्रतिदिन
(7) मशहूर होना
(8) बहुभाषी
(9) आजीवन
(10) नियुक्त करना

9. गद्यांश के आधार पर प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :– 6

बीरबल मुस्कुराते हुए बोला-"जहाँपनाह! आपके बगीचे का दीप दसफुट की दूरी तक अपनी गरमी से सर्दी को दूर कर देती है, पर मेरे घर का चूल्हा पाँच फुट तक अपना ताप बढ़ाकर चावल नहीं पका सकेगा? अकबर को बात समझने में देर नहीं लगी कि बीरबल ने क्यों यह नाटक रचा है। उन्होंने तुरंत देहाती को पाँच हज़ार रुपये इनाम में देने का हुकम दिया और बीरबल की खूब तारीफ़ की।"

(1) बगीचे का दीप कितनी दूरी पर जल रही थी?
(2) अकबर के आते समय बीरबल क्या कर रहा था?
(3) अकबर ने क्या हुकम दिया?

10. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर पाँच-पाँच वाक्यों में लिखिए :– 10

(1) अकबर ने बीरबल की क्यों तारीफ़ की?
(2) दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के बारे में पाँच वाक्य लिखिए?
(3) भारती की कविताएँ जनता को क्यों पसंद आयीं?
(4) डॉ. अब्दुल कलाम के व्यक्तिगत जीवन के बारे में पाँच वाक्य लिखिए:-
(5) सिद्धार्थ ने गृह त्याग के पहले यशोधरा से कैसी बातें की?

11. किसी एक पाठ का सारांश लिखिए :– 15

(1) बीरबल की चतुराई
(2) महाकवि सुब्रह्मण्य भारती
(3) हमारा राज चिह्न
(4) सिद्धार्थ का गृह त्याग

12. किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए:- 10

(1) वर्ण किसे कहते हैं?
(2) कथित या लिखित भाषा का मूल आधार क्या है?
(3) हिंदी वर्ण माला में कितने स्वर और व्यंजन हैं?
(4) व्यंजन किसे कहते हैं?
(5) अनुस्वार किसे कहते हैं?
(6) विसर्ग के कुछ उदाहरण दीजिए।
(7) किन शब्दों में विसर्ग का प्रयोग नहीं होता हैं?
(8) अनुनासिक चिन्ह का उदाहरण दीजिए।

मध्यमा–2
MADHYAMA-2

समय : 2½ घंटे] [पूर्णांक : 100

1. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :– 5

(1) इब्राहीम को क्यों गर्व हो गया? (2) भगवान विष्णु ने भगीरथ से क्या कहा?
(3) साधु ने गौरी को कौन-सा उपाय बताया? (4) चतुर आदमी ने अंत में क्या कहा?

2. किसी एक कहानी का सारांश लिखिए :– 10

(1) भगवान सब का एक है (2) कुत्ते की पूँछ (3) सूखे संतरे

3. किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए :– 5

(1) दशरथ के कितने पुत्र थे? वे कौन-कौन थे? (2) राम और लक्ष्मण ने वन में क्या किया?
(3) मंथरा कौन थी? वह कैसी थी? (4) भरत ने सभासदों से क्या कहा?

4. किसी एक पाठ का सारांश लिखिए :– 10

(1) विश्वामित्र का यज्ञ (2) राजतिलक की तैयारी
(3) राम का वनवास (4) गुह की भक्ति

5. किन्हीं चार का लिंग बदलिए :– 4

(1) लड़का (2) सास (3) मोर (4) कौआ
(5) आदमी (6) बालक (7) छात्र (8) सेवक
(9) कवि (10) पंडित

6. किन्हीं चार का वचन बदलिए :– 4

(1) बकरा (2) बालक (3) हाथी (4) डाकू
(5) नेता (6) गली (7) रात (8) सड़क
(9) माता (10) चिड़िया

7. किन्हीं चार अंकों को अक्षरों में लिखिए :– 4

(1) 24 (2) 36 (3) 42 (4) 78 (5) 99

8. वाच्य बदलिए :– 4

(1) जोसफ़ ने यह चिट्ठी लिखी। (2) हमसे अंग्रेज़ी नहीं बोली जाती।

9. वाक्य जोड़िए :– 4

(1) चेन्नई-मेल कब आएगा? मैंने स्टेशन मास्टर से पूछा।
(2) वह बोलना चाहती थी। वह चुप रही।

10. किन्हीं पाँच वाक्यों का शुद्ध रूप लिखिए :– 5

(1) मैंने नहीं दे दिया। (2) उसने मुझे खेलने नहीं दिया? (3) मैं उसके घर को गया।
(4) गाँधीजी ने देश को सेवा की। (5) उसको पूछो? (6) मैं कल राम को मिला।

11. किताब की दूकान में – किताब बेचनेवाले और ग्राहक की बातचीत लिखिए। **10**

(या)

किराये के बारे में – टैक्सीवाले और मुसाफ़िर की बातचीत लिखिए।

12. हिन्दी सीखने की आवश्यकता बतलाते हुए अपने मित्र के नाम पर एक पत्र लिखिए। **10**

(या)

पुस्तक बेचनेवाली किसी कंपनी को कुछ पुस्तकें भेजने का आर्डर दीजिए।

13. किसी एक शीर्षक पर निबंध लिखिए :– **10**

(1) गाय (2) हमारा देश (3) रेलगाड़ी

14. अपनी प्रांतीय भाषा में अनुवाद कीजिए :– **5**

हमारा देश बहुत बड़ा है। इसकी बड़ाई का अनुमान इस प्रकार किया जा सकता है कि यदि आप उत्तर से दक्खिन, कश्मीर से कुमारी अंतरीप तक, दस मील रोज़ चलकर पार करें, तो कम से कम आठ महीने चाहिए। और इतना ही समय पूरब से पश्चिम, सिंध से आसाम तक पार करने में लगेगा। यह देश इतना बड़ा है कि कोई भी महीना हो, आपको इसमें हर प्रकार की जलवायु मिल सकती है। कोई ऐसा फल नहीं, कोई ऐसा अन्न नहीं, जो इस देश में न होता हो।

15. हिन्दी में अनुवाद कीजिए :– **10**

For a minute both of us stood steady. The tiger was growling. Its eyes were emitting fire. I did not shoot at it and it did not attack me. That one minute was like an age. In the end it turned and ran back. When it turned, I thought it was going to attack me. I fired my gun. After that I heard the terrific roar of the tiger. **(अंग्रेज़ी)**

ஒரு நிமிடம் வரை நாங்கள் இருவரும் அசையாது நின்றிருந்தோம். புலி உறுமிக்கொண்டிருந்தது. அதன் கண்களிருந்து தீப்பொறிப்போல் ஒளி வீசிக்கொண்டிருந்தது. நானும் அதைச் சுடவில்லை. அதுவும் என்னைத் தாக்கவில்லை. இந்த ஒரு நிமிடம் ஒரு யுகத்திற்குச் சமமாக இருந்தது. கடைசியில் புலி ஒரே மூச்சில் திரும்பி ஓடிற்று. அது திரும்பியதும் அது என்மேல் தாக்க வருகிறது என்று நினைத்தேன், துப்பாக்கியால் சுட்டேன். இதன் பிறகு புலியின் இதயத்தைப் பிளக்கக் கூடிய கர்ஜனை காதில் பட்டது. **तमिल)**

ఒక నిమిషము నరకు మేమిద్దరము నిశ్చేష్టులమై యుంటిమి. పులిగాండ్రించుచుండెను. దాని కన్నులు నిప్పులు గ్రక్కుచుండెను. నేను దానిపై కాల్పులు జరుపలేదు, అది నామీదికి దుముకనూ లేదు. ఆ ఒక్క నిమిషం నాకు ఒక యుగంతో సమానము. చివరకు పెద్దపులి ఒక్క సారిగ వెనుదిరిగి పారిపోయెను. అది వెనుదిరుగుతుండగ నాపై దాడిచేయుటకు వచ్చుచున్నదని భా ంచితిని. నేను తుపాకితో గుండు పేల్చితిని. అటుపిమ్మట ఆ పులియొక్క హృదయవిదారకమైన గర్జన వినిపించెను. **(तेलुगू)**

ನಾವಿಬ್ಬರೂ ಒಂದು ನಿಮಿಷದವರೆಗೆ ಸ್ತಬ್ಧರಾಗಿ ನಿಂತಕೊಂಡೆವು . ಹುಲಿಯು ಗರ್ಜಿಸುತ್ತಿತ್ತು. ಅದರ ಕಣ್ಣುಗಳು ಬೆಂಕಿ ಉಗುಳುತ್ತಿದ್ದವು. ನಾನು ಅದರ ಮೇಲೆ ಗುಂಡು ಹಾರಿಸಲಿಲ್ಲ. ಅದು ನನ್ನ ಮೇಲೆ ದಾಳಿ ಮಾಡಲಿಲ್ಲ. ಆ ಒಂದು ನಿಮಿಷ ನನ್ನ ಪಾಲಿಗೆ ಒಂದು ಯುಗ ಕಳೆದ ಹಾಗೆ ಭಾವವಾಯಿತು. ಕೊನೆಗೆ ಹುಲಿಯು ಒಮ್ಮೆಲೆ ಹಿಂತಿರುಗಿ ಓಡ ತೊಡಗಿತು. ಅದು ಹಿಂತಿರುಗಿ ಓಡಲು ಹೊರಳಿದಾಗ ನನ್ನ ಮೇಲೆ ದಾಳಿ ಮಾಡಲು ಬರುತ್ತಿದೆ ಎಂದು ಭಾವಿಸಿ ನಾನು ಬಂದೂಕಿನಿಂದ ಅದರೆಡೆಗೆ ಗುಂಡು ಹಾರಿಸಿದನು. ಅನಂತರ ಕ್ಷಣಾರ್ಧದಲ್ಲಿ ಆ ಹುಲಿಯ ಹೃದಯವಿದ್ರಾವಕ ಗರ್ಜನೆ ನನ ಕಿವಿಗೆ ಬಿತ್ತು. **(कन्नड़)**

ഒരു നിമിഷനേരം ഞങ്ങൾ രണ്ടുപേരും അനങ്ങാതെ നിന്നു. പുലി മുണ്ടരുകൊണ്ടിരുന്നു. അതിന്റെ കണ്ണുകൾ തീ വമിയ്ക്കുന്നുണ്ടായിരുന്നു. ഞാൻ അതിനെവെടിവെയ്ക്കുകയും അതു് എന്നെ ആക്രമിയ്ക്കുകയുമുണ്ടായില്ല. ആ ഒരു നിമിഷം ഒരു യുഗം പോലുള്ളതായിരുന്നു. അവസാനം അതു് തിരിയുകയും പിന്നോട്ടു് ഓടുകയും ചെയ്തു. അതു തിരിഞ്ഞപ്പോൾ ഞാൻ അതു എന്നെ ആക്രമിയ്ക്കാൻ ഭാവിയ്ക്കുകയാണെന്നു് വിചാരിച്ചു. ഞാൻ നിറകൊഴിച്ചു. അതിനുശേഷം പുലിയുടെ ഭയങ്കരമായ അലർച്ച കേട്ടു. **(मलयालम)**